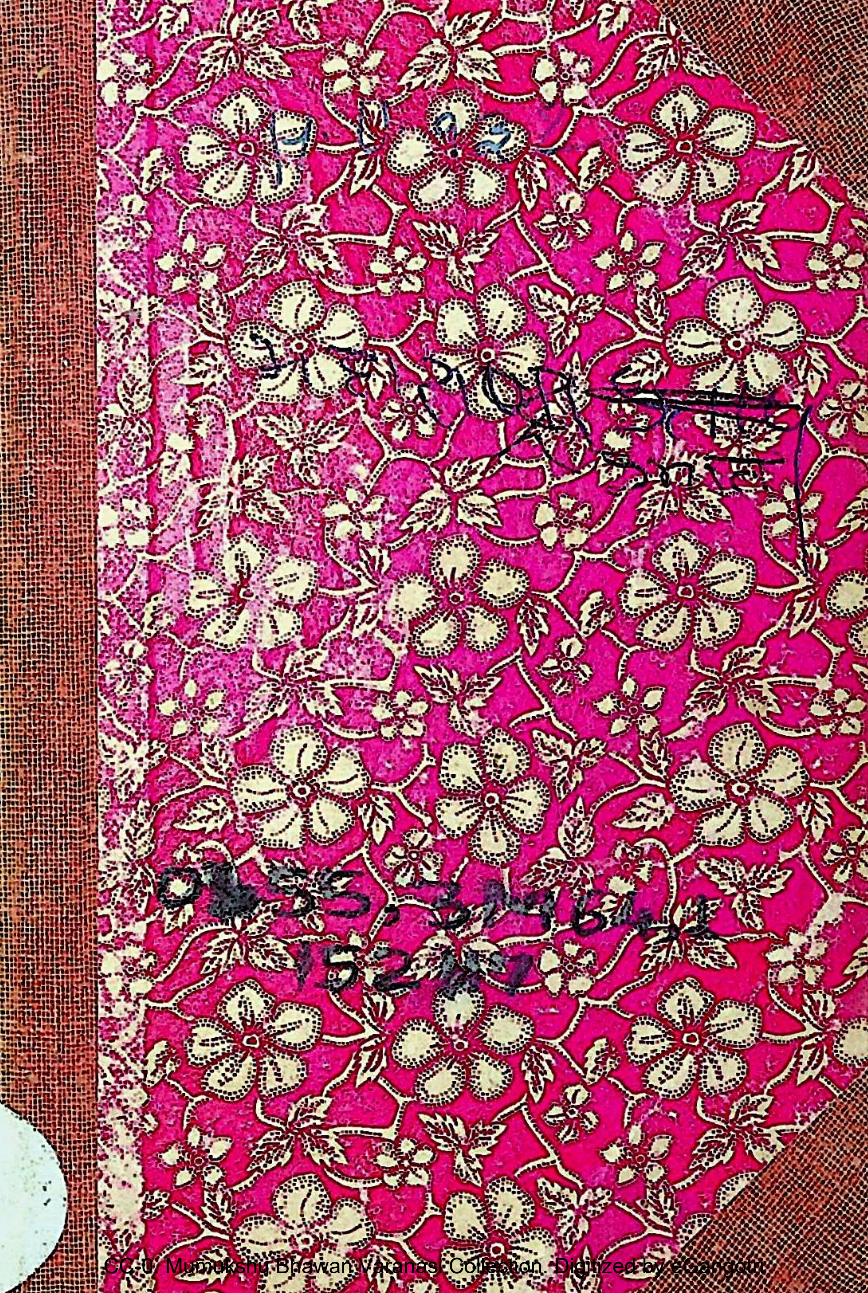


महाराष्ट्र-प्रभात

[हिन्दू-गौरव गाथा]

लेखक:—

स्वर्गीय हरिनारायण आपटे

श्री गान्धी ग्रन्थागार

सी $\frac{७}{१४०}$ सेनपुरा

बनारस

सजिल्द ३॥)

Published by P. Mandir Muttra
for The Shri Gandhi Granthagar Benares

अक्टूबर १९४७ ई०

मुद्रक—
रमाशंकरलाल श्रीवास्तव
श्री हनुमान प्रेस
बनारस

समर्पण

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के
वीर युवकों के बलिष्ठ हाथों में—
जिनके ऊपर भावी हिन्दू-
राष्ट्र के निर्माण एवम
उत्थान का भार
है।

प्रकाशक

दो शब्द

स्वर्गीय श्री हरिनारायण आपटे की इस महत्वपूर्ण रचना से हमें तीनसौ वर्ष पूर्व के महाराष्ट्र का सच्चा और बहुमूल्य ऐतिहासिक ज्ञान होता है। यह मराठी का सुप्रसिद्ध उपन्यास होते हुए भी ऐतिहासिक दृष्टि से अपना खास महत्व रखता है। कई साहित्य प्रेमियों के आग्रह से इस विशाल काय उपन्यास का सुबोध संक्षिप्त संस्करण निकालने का निश्चय हुआ था।

सन् १९३८ ई० में यह प्रयास सफल हुआ और इसका मराठी संस्करण प्रकाशित हुआ। जनता में इसका बड़ा प्रचार हुआ। विद्वानों ने इस संस्करण की भूरि-भूरि प्रशंसा की जिससे थोड़े ही समय में इसकी कई हजार प्रतियां हाथों-हाथ बिक गईं। मध्यप्रान्त के शिक्षा सचिव का भी ध्यान इधर आकर्षित हुआ और उन्होंने इसे दसवीं कक्षा के लिए पाठ्य ग्रन्थ स्वीकार करके अपनी गुण ग्राहकता का परिचय दिया।

आज हिन्दी राष्ट्र भाषा बनने जा रही है अतः इसके साहित्य भण्डार में ऐसे ग्रन्थ की कमी खटकती है। इस कमी को पूरा करने का हमने प्रयास किया है। आशा है हिन्दी भाषी जनता उत्साह के साथ इसे अपनावेगी।

हां हम हिंदू हैं, अपने हिन्दुत्व की रक्षा हमने कठोर से कठोर समय में भी किस प्रकार की है कैसे कैसे बलिदान दिये हैं, इसकी जानकारी के लिये प्रात स्मरणीय वीर शिवाजी महाराज का यह आदर्श चरित्र महाराष्ट्र-प्रभात (सं० उषःकाल) पढ़ना आवश्यक है। भूत हमारे भविष्य का पथ-प्रदर्शन करने में सहायक हो सकता है, इसे याद रखिये यह पुस्तक मनोरंजन के साथ-ही साथ पाठकों को एक विशेष शक्ति और प्रेरणा देगी जिसके विना वह निर्जीव है।

विश्वनाथ वैशम्पायन
अनुवादक

स्वर्गीय श्री हरिनारायण आपटे का संक्षिप्त

जीवन-चरित्र

नारायण चिमणाजी उर्फ नानासाहब आपटे के ज्येष्ठ पुत्र हरिनारायण आपटे थे। हरि का जन्म ८ मार्च सन् १८६४ में हुआ था। नामकरण संस्कार के दिन इनका नाम बाल कृष्ण रखा गया था। पर इनके परिवार में एक और बालकृष्ण होने के कारण इनका नाम बदल कर हरिनारायण रखा गया। हरि को मातृ-सुख अधिक दिनों न मिल सका। जब ये चार वर्ष के हुए तभी उनकी माता का देहान्त हो गया। माता की मृत्यु के पश्चात इनका लालन-पालन इनकी चाची ने किया। पर इनकी चाची भी अधिक समय तक जीवित न रह सकीं और उनकी मृत्यु के बाद इनका लालन-पालन उनकी मौसी ने किया।

हरि के पिता सरकारी नौकर थे और उनके आचार-विचार कट्टर सनातनी थे। इनके चाचा वकील थे और वे सुधारक थे। हरि का बचपन अपने चाचा के घर बीतने से इन पर उन्हीं का काफी प्रभाव पड़ा था।

हरि ने श्री गणेशा का प्रारम्भ बम्बई में किया। पर जिस समय नानासाहब पूने गए तो वे हरि को भी साथ लेते गए और वहां उन्हें हाईस्कूल में भर्ती करा दिया। इस समय हरि की अवस्था १४ साल की थी। वहां उन्हें घर पर पढ़ाने के लिए एक शास्त्री रखा गया था जिससे उन्होंने संस्कृति काव्य नाटक आदि का काफी अभ्यास किया। दो वर्ष पश्चात पूना में न्यू इंगलिश स्कूल खुला और हरि इस स्कूल में भरती हुए। यहां सेमैट्रिक पास करने के पश्चात कालेज की पढ़ाई डेकन कालेज पूना में शुरू की। फिर फर्ग्यूसन कालेज खुलते ही वे वहां गए

पर यहां एक वर्ष पढ़कर पुनः डेकन कालेज में आगये। इस प्रकार ५ वर्ष उन्होंने दोनों कालेजों में बिताया। ये गणित में बहुत कच्चे थे इस कारण वे कालेज से कोई डिग्री प्राप्त न कर सके। उन्हें दूसरी किताबें पढ़ने का बहुत शौक था इस कारण उन्होंने विभिन्न साहित्य पढ़ने पर हजारों रुपए खर्च किए। उन्होंने फ्रेंच तथा जर्मन भाषाएं सीखीं। इस प्रकार अनेक भाषाओं के हजारों ग्रन्थ उन्होंने पढ़ डाले।

हरि ने संसार को उच्चकोटि के ऐतिहासिक उपन्यास दिये हैं पर ये उपन्यास केवल जनता के मनोरंजन के लिए ही नहीं लिखे हैं बल्कि वे पतितों के उद्धार, दुखीजनों को सान्त्वना के हेतु तथा अपने मार्ग से हटे लोगों को सन्मार्ग पर लगाने के लिए हताश व्यक्तियों को पुनर्जीवन देने, समाज की बुराइयां दूर करने तथा उनमें राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने के लिए लिखे गए हैं।

'आज कल की बात-बीच की स्थिति' यह उनका सब से पहिला उपन्यास है जो उन्होंने अपने कालेज जीवन में लिखा था। यह उपन्यास १८८५ ईसवी में 'पूना वैभव' नाम के साप्ताहिक पत्र में धारा वाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। इसी से महाराष्ट्र में वे लोकप्रिय हो गये, दूसरा उपन्यास 'गणपतराव' मनोरंजन पत्र में धारावाहिक रूप से निकला। और इसी पत्र में फिर उनके अनेक उपन्यास निकलते रहे। अक्तूबर १८९०में उन्होंने 'कर मणूक' नाम का पत्र निकाला। और वह थोड़े ही समय में लोकप्रिय हो गया। फिर उन्होंने अपने उपन्यास इसी पत्र में प्रकाशित किए। आपका यह पत्र २८साल तक निकला। इस पत्र में उन्होंने १८ उपन्यास—जिनमें ८ सामाजिक १० ऐतिहासिक हैं, प्रकाशित कराये। इसके बाद 'गढ़ आला पणसिंह गेला' नामक कहानी लिखी। वज्राघात उनका अंतिम उपन्यास है। इसके

अलावा संत सखूबाई तथा सती पिंगला नाम के दो नाटक लिखे। उनका एक उपन्यास 'रामजी' नाम से अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ। उन्होंने अनेक लेखभी लिखे। 'आज प्रकाश' दैनिक में भी उन्होंने बहुत समय तक काम किया। उन्होंने लिखने का कार्य जीवन के ३५ साल तक किया।

पर दुख का विषय है कि उनके गुणों पर लुब्ध हो कीर्ति ही उनकी चेरी हुई लक्ष्मी उनके पास न आ सकी। आर्य भूषण प्रेस तथा उनके निससीम सेवक स्व० केशवराव बाल ने उनकी समय-समय पर यदि सहायता न की होती तथा सर्वेंएट आफ़ इण्डिया सोसाइटी ने उनका कर्ज अदा न किया होता तो उनकी मानसिक चिन्ता बहुत बढ़ जाती।

उनके चाचा ने अपनी सम्पत्ति में से उन्हें एक पैसा भी नहीं दिया फिर भी उन्होंने 'आनन्द आश्रम' नाम की संस्था बनाई और उस आश्रम की व्यवस्था हरि को सौंपी। इस आश्रम में हरि ने २५ वर्ष बिताए और अधिकतर साहित्य इस आश्रम में ही लिखा।

इस लेखक को बाल बच्चों का भी अधिक सुख न मिल सका। बचपन में उनकी माता का स्वर्गवास हुआ। जवानी में उनके स्त्री और तीनों बच्चे मर गए। दूसरा विवाह करने के बहुत दिनों बाद एक लड़की हुई पर बुढ़ापे में वह भी काल के कराल-गाल में समा गई और इसी समय उनके एक परममित्र का भी देहान्त हो गया। लड़की की मृत्यु के बाद उन्हें किसी ने हंसते नहीं देखा।

साहित्य के सिवा उनका और भी क्षेत्रों में दखल था। वे पूना म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष भी हुए थे। जिस विश्व विद्यालय की वे परीक्षा पास न कर सके थे उसी विश्व विद्या-

लय की मराठी की सब से उच्च परीक्षा के वे परीक्षक नियुक्त हुए। बम्बई यूनिवर्सिटी के वे कामलालाजिकल लेक्चरर नियुक्त हुए और १६१५ में मराठी-इटसंसोसैंज एण्ड डेवेलप मेण्ट इस विषय पर ६ व्याख्यान दिए। पूना प्रान्त परिषद् के १५ वें अधिवेशन के वे स्वागताध्यक्ष भी थे। उनके मित्रों में बहुत से विद्वान तथा बड़े-बड़े धनी-मानी लोग थे।

१६१८ में इस मराठी के महान् साहित्यकार का दीप निर्वाण का समय आ पहुंचा। उनकी एक आंख को लकवा लग गया। उसके अच्छे होने पर वे बंगाल रेलवे का शेयर बेचने के लिए कलकत्ता गए। वहां से लौटते समय उन्हें जालोदर हो गया। वे दवा करने बम्बई आए पर रोग बढ़ता ही गया। यह समय मार्च १६१६ का था। वे ३ मार्च को बम्बई पहुंचे और उसी दिन शाम को आनन्दाश्रम में इस महान साहित्यकार ने जीवन की अन्तिम सांस ली। इस प्रकार जीवन के ५५ वर्ष इस संसार में बिताकर उन्होंने नश्वर शरीर को छोड़ा।

महाराष्ट्र-प्रभात

[१]

हनुमान के मन्दिर में

शके १५६८ साल में आषाढ़ कृष्ण पक्ष की दशमी की रात्रि थी। पूना से सासवड़ जाने वाले रास्ते पर जोरों की वर्षा हो चुकी थी, और फिर भीषण वर्षा की सम्भावना थी। समस्त आकाश पर घना अन्धकार छाया हुआ था। मानो किसी ने तेल में काजल घोल कर आकाश पर पोत दिया हो। क्षण-क्षण में बिजली की चमचमाहट और गरज दिखाई और सुनाई दे रही थी। पर जिस विशेष क्षण का हम वर्णन कर रहे हैं उस समय वर्षा नहीं हो रही थी। पर घंटे डेढ़ घंटे पूर्व भीषण वर्षा हो चुकने के कारण सारे पेड़ पौदे भीग गए थे। पेड़ की चोटी पर से पानी पत्तों पर टप-टप शब्द करता गिर रहा था। और उससे एक भीषण शब्द उत्पन्न हो रहा था। उससे रात्रि की भयानकता और अधिक बढ़ गई थी। इस मार्ग पर जंगली जानवरों का भी डर काफ़ी था। इस भयानक रात्रि में उधर से निकलने को कोई व्यक्ति भी हिम्मत नहीं कर सकता था। और ऐसे समय यदि कोई यात्रि निकले तो उससे यही समझना चाहिए कि उसे कोई अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य होगा। ऐसे घने अन्धकार और भयानक रात्रि में आश्चर्य की बात यह है कि एक घुड़सवार बड़ी तेजी से चला जा रहा था। वह इतनी तेजी से जा रहा था कि उसे यह भी भय न रहा था कि घोड़े के पैर में किसी चीज

की ठोकर लग वह गिर भी सकता है। वह बढ़ रहा था और तेजी से घोड़ा बढ़ाए जा रहा था।

यह घुड़सवार किसी सेना का सिपाही नहीं था। बीच-बीच में चमकने वाली बिजली के प्रकाश में उस व्यक्ति की पोशाक का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता था। उसने शरीर पर कमर तक लम्बा मलमल का कुरता पहिन रखा था। वह बर्षा से भीग कर उस व्यक्ति के शरीर से चिपक गया था। उसने राजपूती ढंग से साफा बांध रखा था जिसका एक छोर पीछे लटक रहा था। वह छोर भी वर्षा से भीग कर उसकी पीठ से चिपक गया था। उसने हाथ में नंगी तलवार ले रखी थी। जिस गति से घोड़ा चल रहा था उससे अधिक तेजी से चलने के लिए सवार बार-बार उसे एड़ लगाता जाता था। थोड़ी ही देर में फिर मूसलाधार वर्षा होने लगी। घोड़े ने आगे बढ़ने से इन्कार किया इस कारण वह घुड़सवार एक बड़े पेड़ के नीचे जा कर रुक गया। उसकी व्यग्रता बढ़ती जा रही थी। उसे ऐसा मालूम हो रहा है कि जल्दी से जल्दी वर्षा रुक जाय और वह आगे बढ़े। वह मन ही मन सोचने लगा — इस वर्षा को क्या करूं। आखिर में कहीं ऐसा न हो जाय कि किया कराया मिट्टी न हो जाय। काम पूरा होने के पहिले ही कहीं सारा खेल समाप्त न हो जाय। कुछ समझ में नहीं आता है कि क्या करूं। मैंने जो प्रतिज्ञा की है उसे पूरा करूं तभी बात बनेगी। पर अब तक मुझे अपने साथियों में पहुंच जाना चाहिए था। पर अब वह किस प्रकार सम्भव हो। कहीं मेरे शत्रु तो मेरा पीछा नहीं कर रहे हैं।...इसी तरह के अनेक विचार उसके मन में उठ रहे थे।

अभी वर्षा अच्छी तरह बन्द नहीं हुई थी। पर आसमान कुछ-कुछ साफ़ होने लगा था। हमारा सवार फिर रवाना हुआ

और घोड़े को एड़ लगाकर फिर आगे की ओर बढ़ने लगा। इस समय उसके दिल में यही एक बात चक्कर काट रही थी कि वह यह रास्ता जितनी जल्दी समाप्त कर सके करे। इस प्रकार वह तीव्र गति से ढाई तीन घंटे तक चलता रहा। उसके बाद वह एकदम रुका। इस समय वर्षा बन्द हो चुकी थी। हमारे सवार को किसी प्रकार का शब्द सुनाई देने की शंका हुई। कारण वह रुक कर आहट लेता था और उस अंधेरे में आंखें गड़ाकर देखने का प्रयत्न करता था। करीब तीन चार मिनट बाद उसने अनुभव किया कि कहीं घोड़ों की टाप सुनाई दे रही है और अनुमान से वे तीन चार होने चाहिएं। उसने यह भी अनुभव किया कि वे घोड़े इसी ओर आ रहे हैं। इतने में तीन चार बार लगातार बिजली चमकी इस कारण उसे यह अच्छी तरह दिखाई दिया कि घोड़े किसके हैं तथा किस ओर से आ रहे हैं। इन आने वाले सवारों की गिनती चार थी। उन्हें देखते ही इसने घोड़े को तेजी से चलने के लिए एड़ लगाई। पर फिर कुछ सोच कर घोड़े को पीछे लौटाने के लिए उसने लगाम खींची। पर उसका मनोरथ सिद्ध न हुआ और घोड़े को जिधर रास्ता दिखाई दिया उधर ही वह भाग खड़ा हुआ। इस घोड़े के भड़कते ही पीछे आने वाले घोड़े भी भड़के। और पिछले चार सवारों में से हमारे इस सवार का पीछा केवल एक ही व्यक्ति कर सका। हमारा सवार आगे आगे और वह सवार इसके पीछे था और बाकी सवार बदल कर कहां गये इसका पता न चला।

इस दौड़ में दोनों ही सवारों के घोड़े बेतहासा भाग रहे थे और संभाले न संभल रहे थे। दोनों में एक होड़ सी लग गई थी। इतने में एक सवार का घोड़ा पेड़ से टकराया और उसका सवार 'या अल्ला या रहीम' कहता हुआ धड़ाम से पृथ्वी

पर जा गिरा। उस शब्द से हमारे सवार का घोड़ा झंडू फिर भड़का और तीसरी दिशा की ओर भाग निकला। इस प्रकार भागते भागते झन्डू थक गया और तब उसने अपने आपको अपने स्वामी के हवाले कर दिया। पर हमारा सवार यह अनुमान न कर पा रहा था कि वह कहां पहुंचा है और किधर जा रहा है। वह यह जानने के लिए बड़ा आतुर मालूम हो रहा था कि वह कहां है? इतने में उसे कुछ दिखाई दिया इसी कारण उसने घोड़े को तेजी से उसी ओर जाने का इशारा किया। उसने झंडू की गर्दन थपथपाकर कहा—झंडू तूने इस प्रकार भड़क कर आज शिकार हाथ से खो दी। खैर कुछ चिन्ता नहीं। तुझे आज अत्यन्त कष्ट हुआ है। पर अब जरा हिम्मत कर और उस सामने वाली बत्ती की ओर चल। हम वहां उतर कर निःशंक हो आराम करेंगे। वहां झोपड़ी, मन्दिर या घर अवश्य होगा। चलो हिम्मत न हारो। यह कह उसने घोड़े को पुचकारा, गर्दन पर थपथपाया तथा उसका मुंह उठाकर चूमने का प्रयत्न किया। इस प्रकार घोड़े को प्यार करता देख, इस बात की सत्यता अनुभव होती है कि एक मराठा सैनिक को उसका घोड़ा प्राणों से भी प्यारा होता है। थोड़ी देर में वह सवार दूर से दिखाई देने वाले प्रकाश के पास पहुंच गया। उसने देखा कि वहां एक छोटा सा हनुमान का मन्दिर है और उसके अगले आंगन में दो ओर बड़ी बड़ी मशाले जलती हुई बुझने के करीब थीं। हमारा सवार उस मैदान में पहुंच कर घोड़े से उतरा। वह इधर उधर देखने लगा। पर उसे उस स्थान पर एक चिड़िया भी नहीं दिखाई दी। किसी व्यक्ति के मिलने की आशा से उसने सारा मन्दिर कई बार खोजा। बाद में वह जमीन पर लेट गया। पर जैसे ही वह जमीन पर लेटा उसे जमीन

के नीचे से किसी के बोलने और हंसने का शब्द सुनाई दिया। वह आश्चर्य चकित हो हड़बड़ा कर इधर उधर देखने लगा।

पर उसे पहले यह विश्वास ही न हुआ कि ये शब्द जमीन के नीचे से आ रहे हैं। पहिले उसे यह अनुभव हुआ कि पास ही कोई काना फूसी कर रहा है या बहुत धीरे धीरे बोल रहा है। इसलिए उसने थोड़ी देर बैठकर आहट ली। बाद में उसे यह अनुभव हुआ कि मंदिर के पास कोई बोल रहा है उसने ठहर कर एक दो बार मंदिर की परिक्रमा की। वहां एक कोने में एक धूनी चेत रही थी। पास ही दो चार कुन्दे दो चिलमें एक लोटा, एक चिमटा इत्यादि वस्तुएं पड़ी थी। उसे पूरा विश्वास था कि उसने जो शब्द सुने थे वे मनुष्य के थे। यही बात सोचकर वह चौंक कर उठ खड़ा हुआ था। पर इतना खोजने के पश्चात् भी उसे मनुष्य का पता न लग सका और अब पता लगाने का और कोई साधन भी बाकी न रहा था। इस कारण वह निराश हो जाने की बात सोचने लगा था। पर फिर यह बात भी दिल में पैदा हुई कि यदि वह कहीं और भटक गया तो उसकी अगली योजना सारी नष्ट हो जायगी। यह मंदिर तो बिल्कुल निर्जन दिखाई देता है। पर यहां रात को अवश्य लोग जमा होते हैं। नहीं तो हनुमान जी के आगे यह ताजा फोड़ा हुआ नारियल तथा ये जलती मशालें कहां से आईं। ये सब तथा इसी प्रकार की अनेक बाते उनके दिमाग में आई। यहां जो लोग जमा होते हैं क्या उसके जैसे ही विचार वाले हैं और उसी के समान दृढ़ प्रतिज्ञ है। अगर वे लोग ऐसे हैं तो फिर क्या चाहिए। क्या आज हमारा धैर्य और वीरता सभी समाप्त हो गई ? भीष्म, द्रोण, कर्ण, अर्जुन, भीम आदि वीरों ने जिस भूमि पर जन्म लिया क्या वह आज वन्ध्या हो गई।

क्य। उस पर एक भी कुलदीपक पुत्र जन्म नहीं ले रहा है। नहीं ! नहीं ! यह नहीं हो सकता ! यदि आवश्यकता हुई तो मैं अपना घर बार छोड़ दूंगा—और बहुत हद तक तो मैंने छोड़ ही दिया है। पर अब मैं उसे पूरी तरह छोड़ दूंगा। मेरा कोई भी कार्य पिता जी को पसंद नहीं हैं। और मुझे भी उनकी कोई बात पसन्द नहीं हैं। वे कहते हैं—हमने इन शत्रुओं का नमक खाया, हम उन्हीं की रोटियों पर जीते हैं। क्या यह अन्न उनके बाप का है ? यह हमारा देश हमारा पैसा हमारी जमीन और यहां की प्रत्येक वस्तु हमारी है। हम अपना खाते हैं फिर भी हमारे बड़े बूढ़े यही कहते हैं कि हम उनका दिया खाते हैं। वाह ! यह भी एक ही रही। हरामखोर हमारा चाहे जैसा अपमान करें हमारा धर्म नष्ट करें, हमारी औरतों का अपमान करें, भरी सड़क और चौराहों पर गोवध करें, और वह सब हम चुप चाप देखते रहें और अधिक कुछ न कर सकें, केवल मन ही मन उदास होकर दिल की आग ठंडी करलें। इससे तो अच्छा है कि हम एकदम नष्ट हो जायं। हमारा केवल इतना ही अपराध है कि हम इन हरामखोरों का जुल्म नहीं सहन कर सकते। केवल इसी अपराध के लिए हमारे बाप दादा हमें घर से निकालने की धमकी देते हैं। इतना ही नहीं वे निकालने को भी बाध्य हो जाते हैं। निकालिए हमें घर से। मेरी तरह ही सारे नौजवानों को घर से निकाल दिया जावे। और यह सब एक स्थान पर जमा हों तो कितना अच्छा है। यह विचार मन में आते ही वह प्रसन्न दिखाई देने लगा। यह सोच रहा था कि ऐसे लोग एक स्थान पर जमा हो जायं तो क्या हो, उस कल्पना का चित्र उसकी आंखों के सामने खड़ा हो गया। उस समय वह उस हनुमान की मूर्ति की ओर तन्मय हो देखता रहा सहसा वह चौंका और उसके मुंह से ये शब्द निकल पड़े, अरे यह क्या ?'

वह स्थिर दृष्टि से टकटकी बांधे हनुमान की मूर्ति की ओर देख रहा था। पहिले तो उस वीर सिपाही को कल्पना हुई कि उसे पहले की तरह ही कोई शंका हुई है। वह मूर्ति न तो गिर रही थी और न वह आगे की ओर झुक रहा था धीरे धीरे बराबर आगे बढ़ रही थी। 'यह क्या बात है' क्या इस मूर्ति में चैतन्य उत्पन्न हो गया है या कोई उसे पीछे से हटा रहा है। पर नहीं वह धूनी और जलने वाली मशालों के सिवा यहां मनुष्य होने का कोई चिन्ह नहीं है। ऐसा होने पर हनुमान की पवित्र मूर्ति कौन सरका सकता है और अगर सरका भी रहा है तो वह किस लिए। ऐसे अनेक प्रश्न उसके दिल में उठे। पर इसका उसे समाधान कारक कोई उत्तर न मिल सका। अपने स्थान से उठकर एकदम वहां पहुंच कर देखने की उसकी हिम्मत न हुई। इतने में हनुमान जी की मूर्ति के पीछे से तनिक प्रकाश दिखाई दिया। यह प्रकाश कहां से आया ? यह सब क्या गोल माल है। हमारे मित्र की बुद्धि चकरा गई। उसने सोचा यह कोई रहस्य है या भूत चेष्टा ? यदि भूत चेष्टा है तो वह इस हनुमान के मन्दिर में देवता के साथ चल नहीं सकती। यह कोई रहस्य अवश्य है और उसे मुझे ढूंढ निकालना चाहिए। यह सोचकर उसने अपनी तलवार खींची और बड़ी सावधानी से वह हनुमान की मूर्ति के पास पहुँचा। मूर्ति के कंधे पर से उसने झुककर देखा। उसे दिखाई दिया कि हनुमान के आसन के नीचे एक चौकोर छेद है। उसमें से धीमी-धीमी प्रकाश की रेखा आ रही थी। उसी प्रकार कोई अभंग, श्लोक या दोहा कोई गुनगुना रहा था उसने तुरन्त ही उस प्रकाश तक जाने का निश्चय किया। पर फिर उसे ध्यान आया कि यदि उस छेद के अन्दर घुसते ही हनुमान की मूर्ति फिर अपने स्थान

पर आगई और इस प्रकार मैं अन्दर ही बन्द हो जाऊं तथा मेरे प्राण घुटजाएं या जो लोग अन्दर है उन्होंने मुझे मार डाला तो......पर जो सच्चा वीर होता है उसे ऐसी शंकाएं बहुत देर तक नहीं घेर सकती। मैं सच्चे मराठा (राजपूत) का बेटा हूँ। ऐसी शंका कर क्या मेरा पीछे हटना उचित होगा। इस प्रकार वह मन ही मन सोच वह मूर्ति के पीछे की ओर पहुंचा और 'जय बल' भीम की जय कह नीचे उतरा।

---

[२]

वड़े सरकार

पर अब हम अपने मित्र सैनिक को उस सुरङ्ग में उतरने के प्रयत्न में छोड़कर हम पाठकों को बीजापुर के एक जबरदस्त किले की ओर चलने की प्रार्थना करेंगे। उस समय महाराष्ट्र में जो प्रसिद्ध किले थे उनमें सुल्तानगढ़ का किला सबसे प्रसिद्ध था। पर अब उन किलों का कुछ महत्व नहीं रहा केवल नाम ही नाम रह गया है। सुल्तानगढ़ का पुराना नाम भीमगढ़ था। सुल्तानगढ़ का नाम भी काफी पुराना था। इस किले के कारण आस पास २०–२५ मील के दायरे में काफी रोब जमा हुआ था इस किले की तराई में सुल्तानपुर नाम का छोटा सा गांव था। उसमें अन्दाजन सौ सवासौ घरों की बस्ती थी। पर उस समय गांव के असली मुख्तयार पटेल होते थे। सुल्तानगढ़ पर आने जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आवजी पटेल के यहां ठहर कर किले के समाचारों के विषय में कुछ न कुछ बातें अवश्य करनी पड़ती थी। पटेल के घर की गपशप तथा उसके यहां के हुक्का पानी का इतना आकर्षण था कि प्रत्येक आने जाने वाले को गांव की

हद में पहुंचते ही पटेल के घर की याद आ जाती थी। और उनके पैर अपने आप ही पटेल के घर की ओर उठ जाते थे।

पिछले अध्याय में सारवाड़ के आसपास इतनी धुवांधार वर्षा हुई थी फिर भी सुलतानगढ़ तथा सुल्तानपुर के आस पास तनिक भी बूंदा बांदी नहीं हुई, केवल आकाश पर कुछ मेघ छाये हुये थे। सवेरे की जबरदस्त हवा से वे सारे बादल उड़ गए। प्रभात की शोभा अत्यन्त रमणीय दिखाई दे रही थी। ऐसे समय कोई भी बिस्तर में लेटा नहीं रह सकता पर पिछली रात आवजी को बहुत जगना पड़ा था इस कारण वह अब भी घुटनों तक मोटे गद्दे पर पड़ खुर्राटे भर रहा था। इतने में एक नौकर खड़ा होकर जोर जोर से कहरहा था—किले पर से सुभान आया है।' और किले पर से आने वाला सुभान भी वाहर उदास खड़ा था। सुभान को किले से नीचे आया देख तथा आवजी के मकान के सामने खड़ा देख गांव के कुछ लोग आवजी के आंगन में जमा होगए! उन्हें यह जानने की उत्सुकता थी कि किले से यह व्यक्ति क्या समाचार लाया है। इसी समय आवजी की भी नींद टूटी। उसने पूछा 'क्या शोर है?' उसके यह पूछने पर सुभान ने आगे बढ़कर कहा सरकार ने आपको याद किया है। जल्दी चलिए। सुभान की बात सुनकर आवजी चिन्तित हो उठ बैठा। बाद में निवृत्त होने के लिए लोटा लेकर बाहर गया। प्रातःविधि समाप्त कर अपने कुम्बकर्णी की काम बता कर हुक्का गुड़गुड़ाते हुए गांव के ज्योतिषी जी से उसने कहा— क्यों पण्डितजी! आपका वह उंगली गिनना तथा कुंडली देखना सब व्यर्थ हुआ। नाना साहब का कुछ पता नहीं चला। इस पर दो चार ताने मार कर अपनी कलगीदार पगड़ी सिरपर रखी। दो बिलस्त चौड़े पाड के डुपट्टे को, जो सदा कोरा

ही रहा है, अपने कंधे पर डाल अपनी लम्बी टेढी तलवार ले वे किले की ओर बढ़े। 'सांवलिया तू भी साथ चल। यहां बैठकर तू क्या करेगा ? आवश्यकता पड़ने पर तुझे नीचे खदेड़ने के लिए ठीक रहेगा। अबे इसी प्रकार चल तुझे साफेकी आवश्यकता नहीं है।' यह कह उन्होंने सांवलिया को साथ ले लिया। सांवलिया १४,१५ साल का लड़का था वह तुरन्त ही साथ हो लिया।

किले की ओर जाते हुए आवजी पटेल ने सुभान से पूछा — क्योंरे सुभान बड़े सरकार नाना साहब को बहुत प्यार करते हैं नहीं तो वे इतने बीमार न होते। पर क्योंरे जिस दिन नाना साहब गायब हुए थे उसके पहिले दिन बाप बेटों में कुछ कहा सुनी तो नहीं हुई थी ?

हां! हां! पटेल जी! उस रोज बड़े सरकार बहुत बिगड़े इसी कारण नाना साहब को क्रोध आगया और वे कहीं चले गए।'

क्या! क्या! उन्होंने ऐसी क्या बात कह दी ?'

वाह क्या आपको कुछ भी नहीं मालूम पटेल जी ?'

अजी आपको यह तो मालूम है कि नाना साहब मुसलमान के नाम से चिढ़ते हैं।'

अबे यह बात तो मैं जानता हूं! पर कल क्या हुआ वह बात बता।'

सरकार आप जानते ही हैं कि उस दिन बादशाह के यहां से पोषाक आई थी। उसी के साथ परवाना भी आया। उसमें लिखा था कि नाना साहब अब बड़े होगए हैं इस लिए उन्हें सरकार की सेवा में भेजा जाय। इस प्रकार का परवाना तथा सुन्दर पोषाक आई देख बड़े सरकार अत्यन्त प्रसन्न हुए और उनके मुंह से सहज ही निकल गया कि इतने दिन नौकरी करना आज सार्थक हुआ।' उन्होंने तुरन्त ही नाना साहब को बुलवा

भेजा। दो चारबार बुला भेजने पर हजरत आए उन्होंने उन्हें यह पोषाक दिखाई तथा पत्र पढ़ने के लिए दिया। उस पोषाक को देख उनकी तेवरी चढ़ गई। उन्होंने पत्र पढ़ा।

पटेल ने बीच में ही कहा — 'वाह उसे देख उनका मुंह लाल हो गया।'

इस बीच बड़े सरकार ने कहा — पोषाक देखी तुमने! परवाना पढ़ा। अब कल तुझे बीजापुर जाना होगा। बादशाह की आज्ञा सिर आंखों पर। हमारी कितनीही पीढ़ियां उनके नमक से पली हैं।' बड़े सरकार के मुंह से ये शब्द निकलने की ही देर थी कि नाना साहब की जो हालत हुई वह बताना असम्भव है। इतना क्रोध करते मैंने कभी किसी को नहीं देखा था।

सुभान ने कहा— पटेल जी मैं आज आप को बताता हूं कि हमारे नाना साहब की तरह व्यक्ति संसारमें ढूंढ़े भी न मिलेगा। पर उन्हें इस एक बात से ऐसी चिढ़ है कि बस कुछ न पूंछिए। क्रोध के मारे उनके मुंह से एक अक्षर भी न निकला।

पटेल ने उत्सुकता से पूछा फिर क्या हुआ?'

छोटे सरकार की वह हालत देख बड़े सरकार ने तनिक चिढ़ कर कहा — तो फिर दो चार दिन में जाओगे न? मुहूरत देखा जाय? गुरुवार को अच्छा दिन है! अब तू बड़ा होगया है तुझे इस ओर ध्यान देना चाहिए।' दरबार में आना जाना चाहिए।' इस प्रकार बड़े सरकार ने बहुत कुछ उपदेश दिया। पर छोटे सरकार बिना कुछ कहे चुपचाप खड़े थे।

फिर बड़े सरकार ने क्रोधित हो कहा— क्यों चुप क्यों हो?'

क्या बोलूं! मैं अपना उत्तर इसके पूर्व ही दे चुका हूं। कहिए तो मैं उसे एक बार और दुहरा दूं। मैं इन मुसलमानों के दरबार में कभी नहीं रहूंगा। और न उन्हें झुककर सलाम ही करूंगा।'

नाना साहब का यह उत्तर सुन बड़े सरकार क्रोध से कांपने लगे, और उन्होंने एकदम चिल्ला कर कहा—दुष्ट तू हमारे कुल का नाश करने के लिए पैदा हुआ है। अब तक मैं समझता था कि तू आज समझेगा, कल समझेगा, और इसी कारण मैं तुझ पर दया करता रहा। पर आज से तू मेरा कोई नहीं और मैं तेरा कोई नहीं।' आगे वे कुछ और कहने वाले थे पर उन्हें चक्कर आ गया और वे गिर पड़े। उन्हें चक्कर आते ही नाना साहब उन्हें होश में लाने के लिए दौड़े, कुछ उपचार किए। पर ज्योंही बड़े सरकार को होश हुआ वे तुरन्त उनकी आंखों से ओझल हो गए; और रात्रि को कहीं निकल गए। बस नाना साहब जब से गए है बड़े सरकार को चिन्ता सवार हो गई है। छोटे सरकार को वे बहुत प्यार करते है। पर नाना साहब ग़ुस्से में चल दिए।

फिर सोचकर उसने पूछा—अच्छा पटेलजी नाना साहब कहां गए होंगे ? यहां से तो वे बड़ी तेज़ी से निकल गए।'

सुभान कुछ कहना चाहता था पर बात वहीं रुक गई। कारण वे किले के दरवाजे पर पहुंच चुके थे और दस पांच व्यक्तियों ने 'आइये पटेल साहब' यह उनका स्वागत किया। पर इस ओर अधिक ध्यान न दे वे पांचों दरवाजे पार करते हुए तथा पहरेदारों का सलाम लेते हुए किलेदार साहब के महल के सामने पहुँचे। और अन्दर प्रवेश कर बड़े सरकार से तीन बार झुककर मुजरा किया। उस समय बड़े सरकार दीवानखाने में मसनद के सहारे बैठे हुए थे। उस समय बड़े सरकार के मुंह पर बुढ़ापे से अधिक चिन्ता की छाया ही दिखाई दे रही थी।

आबजी पटेल को आया देख उन्होंने पूंछा—आपको अभी तक कुछ पता नहीं चला ! आप और सारे गांव के लोग इसी प्रकार बेखबर और लापरवाह रहते हैं। गांव में चाहे जो

व्यक्ति आये और चला जाय। फिर भी तुम्हें पता न चलेगा। आखिर इस प्रकार कैसे काम चलेगा ?'

आवजी ने एक शब्द भी न कहा और कहना भी चाहता तो भी वह क्या कह सकता था।

वह वृद्ध आगे कहने लगा— आवजी मैं समझता हूँ कि कोई गुप्तचर किले पर आकर यहां की सारी बातें मालूम कर चला जायगा और शायद फिर भी तुम लोगों को पता न चलेगा। यदि आप लोग इसी प्रकार मेरा नमक हलाल करना चाहते हैं तो यहां से काला मुंह करें ? अच्छा बताइये तो आपने खोज के लिये कहां कहां आदमी भेजे। यह कहते कहते बड़े सरकार इतने क्रोधित हो उठे कि आवजी घबरा गया। उस काल के बूढ़े जमदग्नि का अवतारी होते थे। पर वे सदा एक मार्ग पर चलने वाले, दृढ़ निश्चयी और बात के धनी तथा नाम वाले होते थे। इस कारण उनके शासन में काम करने वाले लोगों पर उनका काफी रोब रहता था। जिस राष्ट्र में ऐसे लोग होते हैं वहां महत्वपूर्ण कार्य अवश्य होते हैं। हमारे ये किलेदार रंगराव अप्पा ऐसे ही दृढ़ निश्चयी व्यक्तियों में से एक थे।

आवजी पटेल ने नानासाहब को ढूढ़ने के लिए बहुत से आदमी भेजे थे, पर उन्हें सफलता नहीं मिली यह कहने का उसका साहस नहीं होता था। बड़े सरकार कुछ समय सोचते रहे फिर उन्होंने तिरस्कृत मुद्रा बनाकर कहा—आवजी मैं आपको चार दिन का समय देता हूँ। इस समय में आप यह पता लगाइये कि वह पाजी कहां गया है। यदि पता नहीं लगा सके तो फिर मुझ से पाला हैं। यहां सबके सब नमक हराम जमा हुए हैं। यह कह वे आवजी की ओर न देख मसनद पर लेट गये।

रंगराव अप्पा साहब ऐसे वीर दृढ़ निश्चयी होते हुए भी उनके अन्तःकरण में एक कोमल स्थान था। वह था पुत्र प्रेम। प्रत्येक दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति का ऐसा एक स्थान होता है। बचपन ही से यह पुत्र उनके दिल का टुकड़ा था। वे उसे प्राणों से भी अधिक प्यार करते थे। उनकी सदा यही इच्छा रहती थी कि यह लड़का उनमें उसका मान बढ़ाये, उसे मनसबदारी मिले, या हजूर का वह दीवान हो, और उनकी यह उत्कट इच्छा थी कि ये सारी बाते उनके जीवित रहते ही हों। पर लड़के का कुछ और ही हाल था। उसके सामने मुसलमान का नाम लेते ही उनका चेहरा, द्वेष, क्रोध तथा घृणा से लाल हो उठता था। उसके पिता समझते थे कि बादशाह की ओर से इस पर नियंत्रण होगा और तब वह ठीक हो जायगा। वे चाहते थे कि वह राजदरबार में जाय। और आज उनके प्रयत्न किए बिना ही वह अवसर आ पहुंचा। बादशाह के यहां से फरमान और पोषाक पहुंचा। उसे देख अप्पा सहाब को आनन्द हुआ। पर उस सारे आनन्द पर किस प्रकार पानी फिर गया वह हम देख ही चुके है। लड़का किला छोड़ कर चला गया। जाते समय न किसी से कुछ कह गया और न कोई पत्र ही लिख गया। लड़के के इस प्रकार चले जाने से उन्हें अत्यन्त दुख हुआ है।

लड़का जब तक था उन्होंने उसे बहुत कुछ भला बुरा कहा, पर उनके ऐसे रूखे व्यवहार से ही वह किला छोड़कर चला गया है यह बात जब उन्हें मालूम हुई तो उनकी हिम्मत टूट गई। अपने दिल की बात उन्होंने किसी पर भी प्रकट न होने दी। उनके दिल में यह भय उत्पन्न हुआ कि मार्ग में यह झगड़ालू लड़का किसी मुसलमान से झगड़ा न कर बैठे और इस प्रकार

वह मारा गया तो उनके दिल में यह विचार आते ही कलेजा कांप गया दूसरा यह भी विचार उनके दिल में आया कि कहीं शिवाज़ी के मूर्ख कृत्यों में सहायता देने के लिए तो वह उससे नहीं जा मिला। यह विचार भी उनके लिए उतना ही भीषण था। उन्होंने सोचा हर प्रकार से ही लड़का हाथ से निकल गया और अब वह कभी नहीं लौटेगा। यह सोच वे एकदम निराश हो गए।

चार दिन के अंदर लड़के को खोजने की आज्ञा दे किले-दार मसनद पर लेट गए। पटेल घबरा रहा था। उसे जब जाने की आज्ञा मिली तो दिल में वह प्रसन्न हुआ कि चलो किसी प्रकार छुट्टी मि ी वह चट बोला—अच्छा सरकार।' यह कह वह जाने को तैयार हुआ। इतने ही में एक नौकर ने आकर कहा— हुजूर सलावतखां सवार बीजापुर से एक जरूरी चिटठी लेकर आया है और वह कहता है कि यह चिट्ठी सरकार के पास अभी पहुंचनी चाहिए।'

उन्होंने यह सुनकर कहा—बुलाओ उसे जल्दी अंदर बुलाओ।' उन्होंने फिर खीझ कर कहा — आवजी जाना मत शायद और कुछ काम पड़े तो वह भी तुम सुनते जाओ।

सलावतखां वहुत दूर नहीं था लवास उसे तुरन्त अंदर ले आया। उसने रीति के अनुसार झुककर सलाम किया। और वह चिट्ठी सामने रख दी। बड़े सरकार ने उसके सलाम की ओर न देख कर चिट्ठी खोली। उसमें बहुत लम्बी चौड़ी बातें न थी। पर पत्र पढ़ते ही बड़े सरकार का चेहरा काला स्याह पड़ गया।

———

[३]

सुरंग में

हमारे बीर सिपाही 'बलभीम की जय' का नारा लगा ताल ठोक कर हनुमान की उस मूर्ति के नीचे वाले सुरंग में कूदा। जैसे ही वह अन्दर घुसा उसके कान में ये शब्द आए—'कौन हरामजादा अन्दर घुसने की हिम्मत कर रहा है।' यह कह किसी ने ज़ोर से उसके पैरों पर प्रहार किया।

पर उसकी पर्वाह न कर उसने कहा—जो हिम्मत रखता है वही अन्दर घुसने की हिम्मत कर सकता है। दूसरा और कौन कर सकता है। 'यह कह उसने ऊपर से हाथ छोड़ दिए और अन्दर कूद पड़ा। और जिसने उसके पैरों पर प्रहार किया था वह उसकी ओर दौड़ा। पर उस व्यक्ति की वेष भूषा देख तथा उसके चेहरे पर का तेज देख वह दंग रह गया। यह व्यक्ति कफनी पहिने हुए था उसके एक हाथ में रुद्राक्ष की माला और दूसरे हाथ में कुक्कड़ी थी उसने सिर की जटा बढ़ा रखी थी और उसकी दाढ़ी भी बढ़ी हुई थी। दोनों ही बहुत देर तक एक दूसरे की ओर देखते रहे। किसी के मुंह से एक शब्द भी न निकला। इसके सिवा अब एक दूसरे से लड़ने का भी आवेश कम हो चला था।

आखिर उस रुद्राक्षधारी व्यक्ति ने शुद्ध मुसलमानी भाषा में पूछा 'आप कौन हैं' और यहां कैसे आए? यहां तुम्हारा क्या काम है? अगर तुम मरना नहीं चाहते हो तो जिस रास्ते से आए हो उसी से वापस लौट जाओ। नहीं तो बेकार मारे जाओगे और जान से हाथ धो बैठोगे! तुम सुरंग में नहीं शेर की मांद में घुसे हो। मौत के मुंह में आ घुसे हो। यदि तुम मुसलमान हो तो अपने को मरा ही समझो।

यह सुन हमारे सिपाही ने प्रसन्न हो कहा—क्या ऐसी भी जगह है जहां मुसलमान मर सकता है ? तो मैं योग्य जगह ही आ पहुंचा हूँ ! साधु बाबा जैसा आप कह रहे हैं यदि यह जगह वैसी ही है तो मैं योग्य स्थान पर ही आ पहुँचा हूँ। मैं आप का गुलाम हूँ। यह बात आप सच मानिए। मैं असली मराठा हूँ आप मुझे मुसलमान समझ कर मेरा अपमान न कीजिए।

ये शब्द उस वीर सिपाही ने इस प्रकार कहे कि वह साधु आश्चर्य चकित हो उसकी ओर देखने लगा। उसने कहा शावाश ! यदि तुम जितनी बातें कह रहे हो वे सत्य हैं तो फिर तुम्हें यहां मौत का भी डर नहीं है। पर तुम कौन हो ! कहां के रहने वाले हो और यहां कैसे आए ?

बाबाजी आप यह सब जानकर क्या करेंगे ? मेरे तो आगे नाथ न पीछे पगहा ! यदि आप मुझे अपनी शरण में रहने दें तो मैं आपकी सेवा करूंगा इससे अधिक मैं अपने विषय में अधिक जानकारी न दे सकूंगा।'

नहीं। नहीं ! जो कुछ तू कह रहा है उस पर मैं तनिक भी विश्वास नहीं कर पा रहा हूँ। तू जो यह कह रहा है कि तेरे कोई नहीं है यह गलत है। मैं यह जानता हूँ कि तेरा उद्देश्य महान् है। और उसे सफल बनाने के लिए तू आगे बढ़ेगा। यह मत समझ कि मैंने तुझे पहिचाना नहीं यदि तू अपना नाम और रहने का स्थान गुप्त रखना चाहता है तो रख सकता है पर······'

पर ये शब्द अधूरे ही रहे। कारण साधु को यह शंका हुई कि किसी ने सीटी बजाई है। थोड़ी देर उन्होंने स्तब्ध हो सुना और वे तुरन्त अंधेरे में गायब हो गए। यह देख वह

सिपाही आश्चर्य में आ गया और इधर उधर देखने लगा। बहुत देर हो गई पर साधु न लौटा और न उसके लौटने के कोई चिन्ह ही दिखाई दिए। तब वह साधु गया था उसी दिशा में अंधेरे में टटोल २ कर आगे बढ़ने लगा। इतने में उसे एक दीवार मिली और जिस में एक बड़ा सा छेद था। उसी पर वह जा टकराया। यह छेद इतना बड़ा था कि एक व्यक्ति मुश्किल से झुककर अन्दर घुस सकता था, वह अन्दर घुसा और थोड़ी देर आगे बढ़ने पर वह रुका। उसे ऐसा मालूम कि कहीं से प्रकाश आ रहा है। उसने देखा कि यह प्रकाश लकड़ी के एक दरवाजे से आ रहा है। उसे अनुभव हुआ कि उसमें ताला लगा है। उसने टटोल कर देखा तो नीचे एक ओर ऊपर एक जन्जीर चढ़ी हुई थी। उन्हें खोलकर वह जल्दी से अन्दर घुसा। उसने अन्दर एक बड़ी भारी दालान देखी, और उसमें अष्टभुजा देवी की मूर्ति थी। देवीं के सामने दो बड़े २ दीपक जल रहे हैं। देवी को मूर्ति देख हमारे सैनिक ने उसे साष्टांग प्रणाम किया; फिर उसने चारों ओर देखा तो उस सभा मण्डप में चारों ओर हथियार ही हथियार दिखाई दे रहे थे। तलवारें, ढाल, बर्छें, बन्दूकें सभी तरीके से लगे हुए थे। यह देख उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ। वह बहुत थक गया था, वह वहीं लेट गया और थोड़ी देर में वह सो गया।

इधर जब साधु बाबा लौटे तो सिपाही गायब था। आखिर बाहर आकर उन्होंने उसे बहुत खोजा पर सिपाही का कहीं पता न चला। तब वे मन्दिर में वापस आए और स्वयं धूनी के पास आ बैठे और चिलम भरते हुए कोई अभंग अपने मुंह से गुनगुनाने लगे।

———

[४]

गुप्त भेंट

सुल्तानगढ़ के आसपास बहुत सी झाड़ियां थीं। पर पिछली ओर वे कुछ अधिक थीं। सभी ओर नागफनी तथा दूसरी कटीली झाड़ियां थीं। झाड़ियों के बीच गुप्त रास्ता था पर यह गुप्त मार्ग कुछ इने गिने लोगों को ही मालूम था। इस कारण उस मार्ग से कोई नहीं जाता था। जो लोग गुप्त मंत्रणा करना चाहते थे या फिर षड़यंत्रकारी ही इस मार्ग का उपयोग करते और आते जाते थे। तथा ऐसे लोग संकेत द्वारा ही ऐसे स्थानों पर जमा होते थे।

सुलतानगढ़ पर जो पत्र सलामतखां लाया था उसे पढ़कर बड़े सरकार थोड़ी देर चुपचाप बैठे रहे। फिर थोड़ी देर बाद होश में आकर उन्होंने आवजी को सलामतखां के खाने की व्यवस्था करने की आज्ञा दी।

आवजी और सलामतखां जैसे ही बाहर आए उन्होंने देखा की सर्फोजी कुछ व्यक्तियों के साथ उधर ही आ रहा था। उसे देख आवजी कुछ अप्रसन्न हुआ और सलामतखां से बोला—खां साहब अब आपको हमारी बिलकुल आवश्यकता नहीं है। अब चौकीदार साहब आगए हैं, अब आपको किसी बात को कमी न होगी। अब मैं जाता हूँ। जब आप किले से उतरें तो मेरे यहां अवश्य आएं।' इतना कह वह सलामतखां के उत्तर की प्रतीक्षा कर वहां से रवाना हुआ?

उसे जाता देख सर्फोजी ने सलामतखां को इशारा किया। उस संकेत का चाहे जो मतलब हो पर सलामतखां ने आवजी को वापस नहीं बुलाया। आवजी अपने घर गया पर सांवलिया इसके साथ नहीं था। पता नहीं वह इसबीच कहां गायब होगया।

थोड़ी देर बातें करने के पश्चात सर्फोजी ने काम के बहाने उन सब लोगों को वहां से भेज दिया। वह सलामतखां से बातें करने के लिए बिशेष उत्कंठित दिखाई दे रहा था सब लोगों के चले जाने के बाद एक बार सर्फोजी ने चारों ओर देखा और तुरन्त ही सलामतखां से पूछा— 'मेरे लिए ...... की ओर से कोई संदेशा नहीं है क्या ?'

सलामतखां ने भी इधर उधर देखकर कहा—कुछ विशेष संदेशा नहीं है। केवल इतना ही कहा है कि तू हमेशाके मकान पर आकर सारी बातें सुनाना। और ठीक आधीरातको वहां पहुँच जाना। मैं वहां आऊंगा। बस इतना ही संदेशा मुझे कहने के लिए कहा है।' सलामतखां के इतना कहने के पश्चात् वे दोनों वहां से उठे। ज्योंही वे दोनों वहां से हटे। सांवलिया पास के चबूतरे के पीछे से बाहर आया। अब इन दोनों के पीछे जाने से कोई लाभ नहीं यह सोचकर उसने तुरन्त ही किले से नीचे जाने का रास्ता पकड़ा। और वह इस प्रकार सर्फोजी तथा सलामतखां को चकमा दे निकल भागा।

किले से निकलकर वह सीधा आवजी पटेल के मकान की ओर भागा। आवजी पटेल आकर लेटा ही था। जैसे ही वह पटेल के सामने पहुँचा पटेल ने आंखें तरेर कर कहा—मूर्ख राज तुम इतनी देर कहां थे ?'

मैं वहीं था और कहीं नहीं गया था। आप तो सर्फोजी और सलामतखां से डरकर भाग आए। पर पटेल साहब उन दोनों में कोई षड़यन्त्र हो रहा है। कुछ दाल में काला है। मैंने उन दोनों को आपसे छिपाकर कुछ इशारा करते देखा और मैंने उनकी कुछ बातें भी सुनी। और भी सुनिए। अपने किले के उस ओर जो, शेरका झरना है। वहां किसी ने सर्फोजी

को गुप्त रूप से मिलने के लिए बुलाया है। और वहां जाने का सर्फोजी ने निश्चय भी किया है।

यह बात सुन आवजी बहुत देर स्तब्ध रह सोचता रहा। सोचते सोचते उन्हें कुछ पूर्व संदर्भ समझ में आया। पर उन्होंने सांवलिया को एक चपत जड़ते हुए कहा—अबे बकता है तू! यह सब सुनने के लिए तू वहां कहां था?'

इस पर सांवलिया ने कहा—जनेऊ कसम मैं कभी झूठ नहीं कहूँगा। सर्फोजी बहुत खराब आदमी हैं। वह अश्वय कोई बुरा काम करने पर तुला है। वह उस समय जो कुछ कर और बोल रहा था वह चोरी-चोरी हो रहा था।

सांवलियां जो कुछ कह रहा है यह झूठ है या सब बातें बनाकर कह रहा है यह बात आवजी पटेल के दिल में एक बार भी नहीं आई। उसने सांवलिया पर यह जो आरोप किया वह सब केवल अपने दिल में भाव छिपाने के लिये किया था। कुछ देर विचार कर वह उठ खड़ा हुआ और बोला—लड़के तूने रोटी खाई या नहीं।'

सांवलिया ने उत्तर दिया 'नहीं।'

पटेल ने कहा—तो फिर मेरे साथ चलकर रोटी खाओ। और फिर एक बार किले पर जाकर सुभान को बुला लाओ।'

सांवलिया रोटी खाकर बात की बात में किले पर जा पहुंचा। वह सुभान से मिला उसे पटेल का संदेशा देकर तुरन्त ही आवजी पटेल के पास लौट आया। उसके पीछे पीछे ही सुभान भी किले से उतरा और आवजी के संदेशे के अनुसार उससे मिला। उन दोनों को बड़ी देर तक गुप्त बातें होती रहीं। और सांवलिया के बताए गुप्त स्थान पर जाने की बात तै हुई।

इन लोगों के जाने के पूर्व ही सांवलिया उस गुप्त स्थान को देख आया था। और उसने वह स्थान भी देख रखा था कि कहां बैठकर वह अच्छी तरह सारी बातें सुन सकता है। निश्चय के अनुसार सुभान और आवजी रात को टकराते ठोकर खाते निश्चित स्थान पर पहुँचे। इतने में सुभान ने देखा कि सामने से कोई जल्दी आकर इशारा कर रहा है। इस प्रकार की शंका आते ही वह रुक गया।

उस आने वाले व्यक्ति ने कहा— सुभान बाबा और पटेल साहब आप एक शब्द भी न बोलिये। वह पाजी आ गया है उसने घोड़ा पेड़ से बांध दिया है और कगार पर खड़ा है। आप धीरे धीरे कगार की ओर आइये।'

सांवलिया के वे शब्द सुन वे दोनों दबे पांध कगार की ओर बढ़ने लगे। पर आवजी को आगे चढ़ना असम्भव होने के कारण वह ऐसे स्थान पर बैठ गया जहां से वह दिखाई न दे। सुभान तथा सांवलिया भी छिपकर अपने अपने स्थान पर बैठ गए और उन्होंने अपने कान उस कगार पर खड़े व्यक्ति की ओर लगाए।

बहुत देर हो गई पर सर्फोजी नहीं आया। इस प्रकार देर होती देख कगार पर खड़ा व्यक्ति त्रस्त दिखाई दिया। पर थोड़ी ही देर में ऐसा मालूम हुआ मानों उस कगार पर कोई व्यक्ति चढ़ रहा है। यह देख कगार पर खड़े व्यक्ति ने कहा— हरामजादे अपने बाप को इतनी देर यहां खड़ा रखा इसके लिए तुझे शर्म नहीं आती। हरामजादा कहीं का क्या तू यह सोचता था कि जितनी बातें तूने मुझे बताई हैं उन्हें मैं सच मानूंगा ?'

सर्फोजी ने घबराई आवाज में उत्तर दिया—मैंने जो बातें आपको बताई उनमें से एक भी झूठ नहीं है सरकार।'

'तो क्या वह नमकहराम लड़का वापस नहीं आएगा ऐसा इन्तजाम हो गया है ? क्या यह सच है ?, बिल्कुल ठीक है सरकार ! इसका एक एक अक्षर सत्य है। आप इस विषय में तनिक भी शंका न करें। मैंने स्वयं ही उसे जाने में सहायता की है। और उसे यह विश्वास है कि मुझ जैसा विश्वासपात्र नौकर और मित्र उसे इस संसार में नहीं मिलेगा। इस विषय में मुझे तनिक भी शंका नहीं है। आप बिना किसी प्रकार की दुविधा के अगली तैयारी कीजिए। यहां की सारी व्यवस्था मैं कर लूंगा पर······।'

सर्फोजी के मुंह से पर शब्द निकलते ही उसने कहा— जानता हूँ कि इस पर का इतना ही मतलब है तुम्हारा इनाम तुम्हें मिल जाय ? हमें इसकी याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारी मदद और तुम्हारा हमें पूरा खयाल है। अच्छा और कोई समाचार हो तो हमें बताओ। जिस काम के लिए मैंने तुम्हें कहा था यह पूरा हो रहा है या नहीं। यदि वह काम पूरा न हुआ तो आजतक की मसलहत और मदद का कोई लाभ न होगा। और यह सारी मेहनत बेकार जायगी।'

'वह काम बहुत कठिन है। मेरी ओर से यत्न जारी हैं पर······।'

पर क्या ? यह अर पर मैं नहीं सुनूंगा। वह का । पहिले होना चाहिए। जाते समय वह जनानखाने में यह कह गया है कि उन्हें तुझपर विश्वास रखना चाहिए। और आवश्यकता पड़ने पर तू उनके लिए जान भी दे देगा। यह बात तो तूने ही मुझे बताई थीं।

'पर इस बात से अधिक लाभ होने की सम्भावना नहीं है।' इसके बाद बहुत देर तक कोई न बोला। बाद में उस

व्यक्ति ने सर्फोंजी से कहा—आज से आठ दिन के अन्दर मेरे कहने के मुताबिक किलेदार के पास फर्मान आएगा। उसी के साथ तुम्हारे लिए भी एक खत आएगा। अब हमारी तबियत के मुताबिक सारे काम होने में कोई रुकावट नहीं है। अच्छा अब तुम जाओ।' यह कह वह व्यक्ति कगार से नीचे उतर गया। इधर सुभान और सांवलिया भी अपनी अपनी जगह से निकल वह नीचे उतरने लगे। उन्होंने जो कुछ सुना वह उनके लिए एक समस्या थी। उसमें से एक भी बात उनकी समझ में नहीं आ रही थी।

सर्फोंजी तथा उस घमंडी सरदार को क्या सम्बन्ध था यह बात सुभान के समझ में नहीं आ रही थी। फिर भी उसे यह समझते देर न लगी कि सर्फोंजी के हाथों किलेदार के अनिष्ट की आशंका है। सर्फोंजी किलेदार के विरुद्ध किसी षड़-यन्त्र में फंसा है।

उसने सारी बातें आवजी पटेल को बताते हुए कहा—हमने अभी जो कुछ सुना है उसे अभी बड़े सरकार को बताना चाहिये। यदि हमने ऐसा न किया और यदि कुछ अनिष्ट हो गया तो हमें यह बात जीवन भर खटकेगी कि हमें सब कुछ मालूम होते हुए भी उसने कुछ नहीं किया। हमने सरकार को समय पर नहीं चेताया। और फिर हमारी यह सब मेहनत बेकार जायगी।' इसके बाद आवजी तथा सुभान दोनों ही आवजी के घर गए और वहां उन्होंने आगे क्या करना चाहिए इसका निश्चय किया।

सुभान अलख सवेरे ही किले पर गया। वह उतावला हो रहा था। वह सोच रहा था कि किलेदार कब उठते हैं और कब वह उन्हें एकान्त में लेजाकर सारी बातें सुनाता है। इसके

लिए वह अत्यन्त उतावला हो रहा था। आखिर उसे ऐसा अवसर मिल गया। और उसने जो रात को बातें देखी और सुनी थी उसका सारा किस्सा कह सुनाया। पर बड़े सरकार ने वे सारी बातें इतने शान्त चित्त से सुनी कि यह मालूम करना कठिन था कि उन बातों का उन पर क्या असर हुआ। या कुछ परिणाम हुआ भी है या नहीं। पर इतनी बात अवश्य मालूम हो गई कि उसे सुन बड़े सरकार विचार मग्न हो गए।

यह सब कहने के पश्चात् सुभान को अनुभव हुआ कि उसने अपना कर्तव्य किया है। अब जिम्मेदारी सरकार की रह जाती हैं। कि इस पर वे कुछ बिचार करें या न करें। इस प्रकार विचार कर सुभान जाने ही वाला था कि बड़े सरकार ने उसे रोक कर कहा— सुभान तुम मेरे नमकहलाल नौकर हो। आज तुम्हें मेरा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और विश्वास का कार्य करना होगा ? बोलो करोगे ? यहां से बाहर जाना होगा। जो बातें आज तुमने मुझे बताई है उनके विषय में मुझे जिस से पूर्व ही शंका हो चुकी थीं। और आज सवेरे सलामतखां ने······पर बीच में ही वे रुक गए और इधर उधर देखने लगे। दरवाजा खोलकर एक नौकर अन्दर आया और बोला—सरकार यह नौकरानी जो समाचार लाई है। हम वह समाचार सुनकर घबरा गए हैं।'

बड़े सरकार ने माथे पर बल डालकर कहा—ठीक बताओ क्या समाचार है ? आज समाचारों का ही दिन है। बोलो जल्दी बोलो क्या बात है।

यही कि चन्द्राबाई और चिंगी सवेरे से ही अपने महल में नहीं हैं और कहीं मिल नहीं रही हैं।

[५)

ये लोग कौन हैं ?

पहले परिच्छेद में हमारा सैनिक तथा वह रुद्राक्षधारी साधु एक दूसरे से अलग हो गए। बाबाजी को बाद में ढूंढने पर भी उसका पता न चला, इस कारण वे ऊपर आकर अपने नित्य के कार्य में लग गए। मन्दिर से कुछ दूर पर कुंआ था, वहां जाकर उन्होंने स्नान आदि किया। और पास ही के गांव में जाकर जो कुछ भीख मिली उसे वे ले आए और भोजन इत्यादि से निवृत हो अपने आसन पर बैठ गए और हरिभजन करने लगे।

करीब ५ घड़ी रात वीते एक व्यक्ति मन्दिर में आया। अन्दर आते ही उसने साधु बाबा को झुक कर प्रणाम किया और धीरे से कहा—आज सरकार के इधर आने की आशा नहीं है। आप प्रतीक्षा कर रहे होंगे इसी कारण मैं समाचार देने आया था। उसकी यह बात सुन बाबाजी कुछ क्षण चुपचाप बैठे रहे और फिर बोले—आज तुम लोग इधर आते तो अच्छा ही होता। अच्छा कल आने में भी कोई हर्ज नहीं है। मेरा यह संदेसा सरकार को देना।' साधु को यह बात सुन वह व्यक्ति फिर एक वार साधु को नमस्कार कर वहां से चला गया।

वहुत देर तक साधु बाबा चुपचाप बैठे सोचते रहे। कुछ देर बाद उनकी ही तरह का एक और साधु वहां आया। उसे देख पहिले साधु ने आश्चर्य चकित हो पूछा— क्या तुम इतनी जल्दी लौट आए। आखिर तुम ऐसा कौनसा महत्वपूर्ण समाचार लाए हो।'

इस पर उस दूसरे साधु ने कहा— सुल्तानगढ़ के किलेदार की गठरी ...... ।'

'अरे मूर्खराज मैंने तुम्हें जिस कार्य के लिए भेजा था उसे अधूरा छोड़ कर ही तुम बीच से लौट आए। इसके लिए तुम्हें क्या कहा जाय ?'

गुरूजी के ये शब्द सुन कर दूसरे साधू का चेहरा उतर गया। बाबाजी ने यह भांप लिया और तुरन्त ही उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा— बेटा ! मैंने अभी जो कुछ कहा है उसका दुख न मानना। अभी तू जो कुछ बता रहा था उसके विषय में मुझे कितना मालूम है यह यदि तू जानना चाहता है तो मेरे साथ चल।' यह कह बाबाजी उठ खड़े हुए। उनके पीछे उनका चेला भी चला। और वे दोनों सुरंग के रास्ते से नीचे उतरे। और दोनों अम्बादेवी के मन्दिर में आए। 'देखो अन्दर क्या है ? यह व्यक्ति कल रात यहां आया है। जब यह स्वयं ही आ गया है तो अब तुम इसके विषय में समाचार क्या दोगे ? अच्छा अब तुम जाओ, इसकी क्या हालत है उसे देख मैं भी आता हूँ।'

थोड़ी देर में साधु बाबा और उनके पीछे माता के मन्दिर में सोने वाला व्यक्ति भी ऊपर आया। उसने मन्दिर में हथियार और ताले लगे बड़े-बड़े सन्दूक देखे थे और उन्हें देख वह आश्चर्य चकित हो गया था। इस कुतूहल को मिटाने के लिए उसने बाबाजी से पूछा— बाबाजी यह मन्दिर कैसा है ? और इस सुरंग में मन्दिर क्यों है ? और वे हथियार किस के हैं क्या यह सब बातें आप मुझे बतायेंगे। आप अपने को साधु कहते हैं पर आप निरे साधू होंगे इस बात पर मुझे विश्वास नहीं होता। यहां बहुत से लोग आते जाते होंगे। वे सब कौन लोग हैं यह सब मुझे बताइये। बाबाजी यदि आप कोई राज-नैतिक कार्य कर रहे हैं तो आप मुझे अपना चेला बना लीजिए।

मेरे घरबार कुछ नहीं है। मैं सब प्रकार से आपकी सेवा करूंगा।'

बाबाजी उसकी बात सुन कर मुसकराए। और बोले — तो मतलब यह है कि तुम्हारे कोई नहीं है और तुम मेरी ही तरह साधु बनना चाहते हो। पर थोड़े दिनों बाद यदि तुम्हारा घर-बार और रिश्तेदार पैदा हो गए तो फिर मैं क्या करूंगा ?'

बाबाजी के इस प्रश्न से हजरत चक्कर में आ गए। और चुपचाप होकर बैठ गए। उसकी यह मुद्रा देख बाबाजी विशेष रूप से हंसे और उसकी पीठ ठोकते हुए बोले — अच्छा कुछ चिन्ता न करो। तुम्हारी इच्छानुसार ही सारी बातें होंगी। आज की रात और कल का दिन तुम यहां किसी प्रकार बिताओ। शाम को तुम कुछ विचित्र बातें यहां देखोगे जिसे देख तुम्हें यह अनुभव होगा कि अच्छा ही हुआ जो तुम यहां आ गए।'

इस प्रकार का आश्वासन मिलने पर भी सैनिक इस बात को न समझ सका कि यह सब क्या हैं, और वह किस स्थान पर आया है ? वह गम्भीर हो सोचने लगा। आखिर साधु बाबा ने उससे कहा — तुम इस प्रकार कितनी देर बैठे रहोगे ? मेरी तरह घड़ी भर आराम करो।'

साधु बाबा के इस प्रकार कहने पर भी उसे नींद नहीं आ रही थी। वह वीर अवश्य था पर किसी भी स्थान पर लेटने की आदत उसे नहीं थी। यह बात उसके चेहरे पर से भी दिखाई देती थी। अमीरी के चिन्ह छिपाए भी नहीं छिपते। बीच में ही वह उठ खड़ा हुआ और इधर उधर देख साधू से बोला — साधु बाबा मेरे जी में आ रहा है कि मैं यहां से चला जाऊं। मैं जाना चाहता हूं वहां मुझे इससे पूर्व ही पहुंच जाना चाहिए था। तो मुझे आज्ञा दीजिए। आपके यहां क्या है यह देखने मैं फिर कभी आऊंगा।'

साधु बाबा जग रहे थे। उन्होंने उसकी यह बात सुन कर हंसते हुए कहा — यदि तुम्हें जाना था तो तुम पहिली रात ही यहां से चले जाते। अब बहुत देर हो गई है। यहां से कुछ दूर जाने पर ही सवेरा हो जायगा। पिछले दो चार दिन में तुमने जो कुछ किया है उस कारण तुम्हारा दिन में घूमना हानिकर होगा। शायद यह बात तुम भूल गये हो। मैं तुम्हारे विषय में सब कुछ जानता हूँ। शायद यह बात तुम्हें मालूम नहीं है। और जो कुछ तुमने किया है वह प्रशंसनीयकार्य है इस बात को मानने वाले लोग तुम्हें आज यहां मिलेंगे इसलिए जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो।

सिपाही तनिक विचार मग्न हुआ। पर अन्त में उसने साधु की आज्ञा पर चलने का निश्चय किया किसी प्रकार दिन समाप्त हुआ। जैसे जैसे शाम होने लगी सिपाही की उत्सुकता बढ़ने लगी। शाम होने के थोड़ी देर बाद उसने देखा कि बहुत से लोग उस मन्दिर की ओर आ रहे हैं। उनके आने का समाचार उसने साधु बाबा को दिया और उसने पूछा ये लोग कौन है?' वे लोग जब आजाएंगे तो सब कुछ मालूम हो जायगा। इस प्रकार का अनिश्चित उत्तर साधु ने दिया। इतने में 'जय भवानी की जय' के नारे लगाते हुए वे सब मंदिर के आंगन में घुसे। उसने देखा कि वे सब उसी की तरह मराठा सैनिक थे।

उनमें से जो तरुण और सुन्दर युवक था वह हनुमान की मूर्ति के पास गया। उसने मूर्ति को भक्तिभाव से प्रणाम किया और फिर धूनी के पास आकर साधु बाबा को नमस्कार कर बोला—क्या आज आप अन्दर ही बैठे रहेंगे ? आज हम कुछ और भी ले आये हैं। जो आप के चरणों के पास रख देना

चाहते हैं बस इसके बाद हमारा कार्य समाप्त ।' यह कहते कहते उसकी दृष्टि उस नवीन सैनिक की ओर गई । उसने तुरन्त ही स्वामी जी से पूछा—यह व्यक्ति कौन है ।'

स्वामीजी ने भी इशारे से ही तुरन्त उत्तर दिया कि वह हममें से ही एक है । इस प्रकार इशारा कर वे हंसने लगे। इसके बाद उन्होंने इस प्रकार धीरे धीरे कुछ कहा जो उस नवयुवक तथा उसके दो साथियों को ही सुनाई दे ।

थोड़ी देर बाद बाहर खड़े आदमियों ने एक पिटारा लाकर हनुमान की मूर्ति के पीछे रख दिया । बाद में वे बाहर चले गए । जब वे लोग चले गए तो श्रीधर स्वामी ने उस तरुण व्यक्ति से कहा—जिस प्रकार इन दो व्यक्तियों को अपने हित चिन्तक समझते हो उसी प्रकार इस वीर सैनिक (हमारे सैनिक) को भी समझो । यह तुम्हारी रक्षा के हेतु अपने प्राणों की भी आहुती दे देगा । तुम्हारी ही तरह भारत भूमि की स्वतंत्रता के लिए उसकी आत्मा व्याकुल है । वह अब घर बार छोड़कर तुम्हारे संगठन में ही सम्मिलित होने के लिए घर से निकला है । रास्ता भूलकर वह यहां पहुंचा है । मैंने उसे यहां रख लिया है । और तुम्हारा उसका परिचय करा दिया है । श्रीधर स्वामी अब यह कह रहे थे तो वह नवयुवक तथा तरुण सैनिक एक दूसरे की ओर देख रहे थे । ऐसा ज्ञात हो रहा था कि एक दूसरे के मन वे अपनी ओर खींच रहे थे ।

उस तरुण ने यौवन के प्राङ्गण में कदम रखा ही था । पर इससे उसका महत्व कम नहीं था । कारण तेजस्वी पुरुषों का महत्व उनकी आयु पर निर्भर नहीं करता । वहुत देर तक उस तरुण व्यक्ति ने उस सिपाही की ओर देखने के पश्चात फिर स्वामीजी की ओर घूमकर कहा—स्वामीजी जिस व्यक्ति को

आपने योग्य व्यक्ति कह दिया और जिस पर आपका विश्वास होगया उसके विषय में अधिक पूंछ ताछ करना मेरी आदत नहीं।'

यह कह फिर उस तरुण ने उस सिपाही की ओर घूमकर कहा—स्वामीजी की आज्ञा आपने सुन ही ली है। आज से आप मैं और ये दोनों व्यक्ति एक प्राण दो शरीर हैं। आज जब मैं यहां से जाऊंगा तब आप हमारे साथ चलेंगे।

थोड़ी देर में स्वामीजी ने उस मूर्ति को हिलाया और वे अंदर घुसे। उनके पीछे उन दो नवयुवकों में से एक नीचे उतरा दूसरे ने वह पिटारा अन्दर छोड़ा। उसके बाद वह जवान अन्दर उतरा। हमारे सिपाही को उन्होंने ऊपर ही खड़े रहने की आज्ञा दी। यह सुन वह कुछ हतोत्साह हो गया पर उसने अपना कदम आगे नहीं बढ़ाया। सेनापति की आज्ञा सुनकर उसे शिरसावंद्यमान उस आज्ञा को पूरा करने के लिए योग्य सैनिक की तरह वह जहां का तहां खड़ा रहा। करीब पौन घंटे बाद नीचे उतरे व्यक्तियों में से एक न आकर उसे नीचे उतरने को कहा। यह आज्ञा पा वह तुरन्त नीचे उतरा और उस व्यक्ति के पीछे पीछे भवानी के मन्दिर में गया।

वहां उस तरुण पुरुष ने भवानी के आस पास परिक्रमा दी और जब वह भवानी के सामने आया तो उसका तेज कुछ और ही था। वह ऐसा दिखाई दे रहा था कि आस पास की चीजों से वह मानो अलिपत है। और कुछ दूसरी अवस्था में है। कुछ समय तो वह कुछ भी न बोला और बाद में उसने भवानी को प्रणाम किया और कुछ शब्द कहे। जो इस प्रकार थे। 'संकट उत्पन्न होगा पर विनाश नहीं होगा सावधानी से रहिए...अत्यन्त विश्वासपात्र व्यक्ति, मुसलमान तनिक शक्ति-

शाली ।' केवल ये ही शब्द उनके मुंह से निकले और वे बेहोश होकर गिर पड़े। वे थोड़ी देर तक इसी स्थिति में पड़े रहे। उन्हें किसी ने कुछ भी नहीं कहा और न उन्हें जाग्रत करने का प्रयत्न किया गया।

जब वह नवयुवक फिर होश में आया तो उसने अपनी तलवार म्यान से निकाल कर भवानी के सामने रखी और कहा—मैं भवानी की सेवा में और गौ ब्राह्मण पर होने वाले अत्याचारों को दूर करने के लिए प्राणों की बाजी लगा दूंगा। ये शब्द दुहराने के लिये तथा माता भवानी को दण्डवत करने के लिए हमारे सैनिक से कहा गया। हमारे सैनिक ने क्षण भर का भी विलम्ब न कर तलवार उठाई और जो कुछ उसे दुहराने को कहा गया था उसे दुहराया।

यह सब होने पर वह तरुण पुरुष उठ खड़ा हुआ और स्वामी जी की ओर देखकर बोला—कुछ नया समाचार है ?'

स्वामी ने कहा—हां है ! संकट आएगा पर विनाश नहीं होगा। मुसलमान शक्तिशाली, तनिक जोरों पर।' इस प्रकार के शब्द सुनकर उस तरुण के मुंह पर चिन्ता की छाया दौड़ गई। फिर भी उसे छिपाने का प्रयत्न करते हुए उसने सबकी ओर देखते हुए कहा—सगुन अच्छा नहीं हुआ। अम्बा माता के संकेतानुसार संकट कब उपस्थित होगा कहा नहीं जा सकता। पर विनाश नहीं होगा यह निश्चिन है। अब हमें अपने मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए। इसी समय द्वारपाल का कार्य करने वाले भीमा ने आकर सूचना दी कि पठानों की एक टुकड़ी बिल्कुल समीप आ गई है और उसने अपना मोर्चा इसी ओर घुमाया है। ऐसा ज्ञात होता है कि उन्हें इस स्थान की शंका है। वे हम लोगों की घात में हैं।'

यह सुन वह तरुण श्रीधर स्वामी की ओर देखकर हंसा और बोला—संकट तो आ पहुँचा है पर अभी इसका सामना करने का मौका नहीं है। अभी उनसे मोर्चा लेने के लिए शायद ही कोई स्थान मिले। इस लिए ऊपर जाकर वहां लोगों को आज्ञा दीजिए कि कल रात तक वे अपने अपने स्थान पर रहें। हम अपने विषय में सोच लेंगे।' श्रीधर स्वामी यह आज्ञा लेकर ऊपर गए। हनुमान की मूर्ति को उन्होंने यथा स्थान बैठाया। और सब लोगों के चले जाने पर राम राम ! सीताराम सीता-राम ! इस प्रकार भजन करते हुए तथा चिलम का दम लगाते हुए वे चुपचाप अपनी धूनी पर जा डटे।

———

[६]

सांवलिया की हिम्मत

शाम का समय था। घनी झाड़ी थी, पगडण्डी इतनी सकरी थी कि बड़ी मुश्किल से दिखाई दे रही थी। उसी रास्ते से दो व्यक्ति जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाते हुए आगे बढ़ रहे थे। वे जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाते हुए किसी गांव को पहुँचने के इरादे में थे। प्रत्येक क्षण सायंकाल का अंधेरा उन्हें पकड़ने के फेर में था और वे अंधेरे को पीछे छोड़ आने के लिये बेतहाशा भागे जा रहे थे। उन दोनों में से बड़े व्यक्ति ने उस छोटे लड़के की पीठ ठोक कर कहा — क्यों बे सांवलिया तू तो अपनी मां को धोखा देकर मेरे साथ भाग आया है और उधर तेरी मां तुझे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते थक जाने पर क्या करेगी ?'

सांवलिया ने जोर से हंसते हुए कहा — क्या करेगी इसका क्या मतलब ? इधर देखो सुभान दादा। यह लड़का सब दिन

इसी प्रकार नहीं रहेगा । एक दिन सरदार, बनेगा सरदार, समझे ! मैंने अपनी मां से कह रखा है कि मैं बड़ा होने पर तलवार का पराक्रम दिखाने कहीं न कहीं निकलूंगा।'

'वाह! तो फिर तुम तलवार के हाथ दिखाओगे।' इस प्रकार कह सुभान चुप हो कुछ सोचने लगा। थोड़ी देर दोनों ही चुपचाप चलते रहे, फिर सांवलिया ने सुभान से पूछा — पर क्यों सुभान दादा! तुम अब किधर जा रहे हो? मैं तुम्हारे कहने पर तुम्हारे साथ चला तो जा रहा हूं, पर पता भी तो लगे कि हम कहां जा रहे हैं।'

सुभान ने तुरन्त ही उसकी ओर घूम कर कहा — अबे तुझे इन सब बातों से क्या मतलब, तू अभी बच्चा है। तू मेरे साथ चलाचल। पर सांवलिया बिलेदर था। वह यह जानता था कि बड़े सरकार ने एक खास चिट्ठी सुभान को दी है, जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है। थोड़ी देर में ही वे गांव के नजदीक पहुँचे। सांवलिया ने सुभान से कहा — हम इस समय चावड़ी में न जायं। सवेरा होने तक इस म्हसोबा के मंदिर में ठहरें और सवेरे गांव में घुसें। यहां का पटेल हमेशा सर्फोजी के यहां आता-जाता है। वह यह सर्फोजी को बताये बिना न रहेगा।' सुभान को सांवलिया की बात जच गई। वे दोनों म्हसोबा के मंदिर में गये। सांवलिया को जोरों की भूख लग रही थी। उसने अन्दर घुसते ही अपना कंबल बिछाया और डट कर प्याज रोटी खाई और कंबल पर लेट गया। बहुत देर चलते रहने के कारण दोनों ही बहुत थक गये थे। इस कारण लेटते ही दोनों खर्राटे भरने लगे।

आधी रात के पश्चात् चन्द्रमा का उदय हुआ। इतने में उस प्रकाश में दो व्यक्तियों की छाया मंदिर की दीवार पर दिखाई दी। इनमें से एक स्त्री और दूसरा पुरुष था और दोनों

ही मंदिर की ओर बढ़ रहे थे। वे जब मंदिर की अरगनी के नीचे पहुंचे तो उन्होंने अनुभव किया कि वे सुरक्षित हैं। उस समय उन्हें धीरज बंधा। स्त्री ने हंसी उड़ाते हुए कहा — बस ऐसे ही तुम बहादुर हो ? यह पोशाक पहिन कर तुम्हें ऐसा व्यवहार करना शोभा नहीं देता। इसे शोभा देने वाला व्यवहार तुम्हें करना चाहिये।'

तुरन्त ही वह पुरुष घूम कर बोला — चुप रहो बको मत। यह समय हंसी करने का नहीं है।' यह कह वह मंदिर के अन्दर पैर रखने ही वाला था कि सुभान की लम्बी-लम्बी सांसों से वह चौंक पड़ा और तुरन्त ही वह बाहर जाने लगा। जैसे ही वे बाहर जाने को हुए, वैसे ही सुभान बाहर आया। वे दोनों अलगनी के नीचे जा छिपे। सुभान फिर अन्दर चला गया। जब वह अन्दर चला गया तो उन्होंने वहां से भागने का प्रयत्न किया। पर इतने में सुभान और सांवलिया अपने-अपने कंबल कन्धे पर डाल बाहर निकले।

उन दोनों के जाने के बाद उस तरुण और युवती की जान में जान आई। इन्हें देख जो डर पैदा हुआ था वह अब जाता रहा। वे दोनों मंदिर में घुसे। वह तरुण सिर पर का मंदिल उतारे बिना ही जमीन पर लेट गया और थोड़ी देर में ही गहरी नींद में सो गया। और वह स्त्री एकाग्र हो उसके पैर दाबने लगी।

सुभान और सांवलिया रात को सोने के कारण ताजे हो चुके थे इस कारण वे नई स्फूर्ति से आगे बढ़ने लगे अब पौ फट चुकी थी और सवेरे का प्रकाश दिखाई देने लगा था। सवेरे के धुंधले प्रकाश में सांवलिया ने देखा कि एक भीड़ उनकी ओर चली आ रही है। उसने तुरन्त ही सुभान से

कहा—दादा ! मुझे मालूम हो रहा है कि मुसलमानोंकी एक टोली इधर ही आ रही है। ये लोग न जाने कौन हैं हम लोग रास्ता छोड़ कर एक ओर खड़े हो जायं। 'पर आखिर डरने की क्या बात है। वे अपने रास्ते चले जायंगे चलो हम अपने रास्ते आगे बढ़ें।' यह कह वे कुछ कदम आगे बढ़े ही होंगे कि आने वाले सैनिक उनके पास पहुंच गए। उन्हें रास्ता देने के लिए ये लोग रास्ता छोड़ कर एक ओर खड़े हो गए। आने वाले लोग जोरों से बातें करते जा रहे थे। उनके ये शब्द इन दोनों के कानों में पड़े। 'सुलतानगढ़, चंद्राबाई, नाना साहब, हरामजादा, सर्फोजी। ये शब्द कानों में पड़ते ही सुभान तनिक सावधान हो उनकी बातें सुनने लगा। उन्हें सुन सुभान बेचैन हो गया। आखिर उसने सांवलिया से कहा—सांवलिया अब बड़ा कठिन मोर्चा है। जो कुछ अभी हमने सुना है वह तुरन्त किले पर जाकर कहना चाहिए। इधर जिस काम के लिए मुझे सरकार ने भेजा है उसे भी पूरा करना है।'

यह सुन सांवलिया ने जल्दी से कहा हम दोनों दो काम करें। मैं किले पर जाता हूँ तुम अपने काम पर जाओ।' सुभान तनिक हिचकिचाया उसने सांवलिया से कहा—नहीं नहीं मैं ही किले पर जाता हूँ। तुम यह लिफाफा लेकर जाओ·····' यह कहते कहते उसने अपने साफे में छिपा लिफाफा निकाला। पर दुर्भाग्य की बात यह कि उसने जैसे ही वह लिफाफा निकाला और जैसे ही वह सांवलिया को उसके विषय में समझाने लगा उसी समय आगे जाने वालीटोली का एक सिपाही जो पीछे रह गया था वहां आ पहुंचा। उसने एकदम चिल्लाकर कहा—ओ हरामज़ादो तुम कौन हो ? तम लोग क्या कर रहे हो ? वह लिफाफा कैसा है ? लाओ उसे मैं देखूंगा।

ये सब बातें इतनी जल्दी हुईं कि सुभान उससे घबरा गया और उस घबराहट में वह लिफाफा उसके हाथ से गिर पड़ा। वह मुसलमान सैनिक ज्यों ही उसे उठाने के लिए नीचे झुकने ही वाला था कि सांवलिया उसे उठा कर इतनी तेजी से भागा जैसे शिकारी के डर से शेरनी अपने बच्चे को लेकर लम्बी २ छलांगे मार कर भागती है। सांवलिया की वह फुर्ती तथा हिम्मत देख कर सुभान को भी अत्यन्त आश्चर्य हुआ। इतने में एक और मुसलमान सैनिक वहां आ पहुंचा और दोनों ने सुभान को पकड़ा तथा उसे गिरफ्तार कर आगे बढ़ाया।

सुभान की यह स्थिति हुई पर उसे यह संतोष था कि सांवलिया ने वह चिट्ठी बचा कर इन दोनों मुसलमानों को खासा चकमा दिया। वे दोनों मुसलमान सिपाही उसे ढकेलते और गालियां देते आगे ले जा रहे थे तथा प्रश्न कर रहे थे तू कहां जा रहा था, वह लिफाफा किसका था तथा उसे तू कहां ले जा रहा था?' पर सुभान इन प्रश्नों का कोई भी उत्तर नहीं दे रहा था वह गूंगे की तरह चुप था।

आगे जाने वाले सैनिक धीरे धीरे जा रहे थे और पीछे से जाने वाले सैनिक सुभान को गिरफ्तार करने के बाद तनिक तेजी से आगे बढ़ रहे थे इस कारण उन्होंने आगे जाने वाले सैनिकों को पकड़ लिया। उनके पास पहुंचते ही उन्होंने एक सैनिक दुल्लेखां को बताया कि उन्होंने इस व्यक्ति को किस प्रकार पकड़ा।

इस पर दुल्लेखां ने कहा— अच्छा अब जहां पड़ाव डालेंगे, वहां इस का इन्साफ करेंगे। एक टीम! तुम आगे जाकर पड़ाव डालने की जगह ढूंढ़ रखो। इस नमकहराम को साथ ले चलो।

करीमबक्श यह आज्ञा पा तेजी से आगे बढ़ा और पड़ाव डालने के लिये जगह खोजता हुआ उसी म्हसोबा के मंदिर के पास जा पहुंचा। और उसने उसी मंदिर के सामने खास तम्बू गाड़ने की आज्ञा दी। पर मंदिर में कोई है यह बात जान करीमबक्श ने अहमद को बुला कर कहा — मंदिर में जो आदमी हैं उन्हें कहना यहां खान साहब की छावनी लगने वाली है, वे यहां से कहीं दूर चले जायं। वे चाहें तो गांव में जा सकते हैं।

मंदिर में जो लोग थे उनके दिमाग में भी यही विचार आ रहा था। इतने में करीमबक्श का यह संदेश रहीम ने सुनाया। उसे सुन उस नवयुवक को अत्यन्त आनन्द हुआ। और वे दोनों जाने को तैयार हुए। करीमबक्श जिस पेड़ के नीचे बैठा था, उसी पेड़ के नीचे से गांव की ओर जाने का रास्ता था, पर मंदिर में ठहरे दोनों व्यक्ति उस ओर से गांव न जाकर दूसरी ओर से गांव की ओर जाने लगे। इतने में अहमद ने उन्हें संदेश दिया कि उन्हें करीमबक्श ने बुलाया है। वापस जाने से इन्कार करना मुसीबत मोल लेना है यह सोच कर वह नवयुवक क्षण-भर सोच कर अहमद के साथ हो लिया।

थोड़ी देर में जब वह करीमबक्स के पास गये तो दोनों ही उस नवयुवक की ओर टकटकी बांध कर देखते रहे। इससे उन्हें और भी अधिक संकोच हुआ। करीमबक्श ने पूछा — आप कहां से आये हैं और कहां जा रहे हैं।'

इस प्रकार का उत्तर देने के बजाय वे और अधिक घबरा गये। आखिर उन्होंने कुछ उत्तर दिये। पर उन उत्तरों से करीमबक्श का समाधान न हो सका। इसलिये उसने कहा — हमने जो सवाल किये, उसके आप ठीक-ठीक जवाब नहीं दे सके हैं, इस कारण खान साहब के आने तक आपको जाने नहीं दिया

जा सकता। खान साहब अभी आते ही हैं, उन्हें आप अपना सच्चा हाल बताइये और तभी आप यहां से जा सकेंगे।

'छिद्रेश्वनर्था वहुली भवन्ती' कहावत का अर्थ झूठ नहीं है, यह बात उस नवयुवक के इस समय समझ में आई। वेचारे ने उस स्त्री को बुलाया और दोनों ही फिर उस मन्दिर में जा बैठे।

थोड़ी देर में तम्बू ठोकने का काम समाप्त हुआ और जो लोग पीछे रह गये थे, वे भी आ पहुंचे। खान साहब खाना खा कर जब हुक्का गुड़गुड़ा कर आराम कर चुके तो उन्हें रास्ते में गिरफ्तार किये व्यक्ति की याद आई और उन्होंने उस व्यक्ति को लाने की आज्ञा दी। तुरन्त ही वह सिपाही सुभान को ले आया। इसी समय करीमबक्श ने आकर खान साहब के कान में कुछ कहा, उसे सुनते ही उन्होंने कहा — उन्हें अन्दर ले आओ।'

अहमद मन्दिर में जा कर उस नौजवान और उसकी स्त्री को ले आया। वह नवयुवक ज्योंही कुर्निसात कर खड़ा हुआ, उसकी नजर सुभान पर और सुभान की उसपर पड़ी। और इस नई समस्या से उसकी गम्भीरता दूर हुई। और सुभान भी आश्चर्य चकित हो हक्काबक्का रह गया।

---

[७]
गुसाईं जी

पाठकों को याद होगा कि कुछ मुसलमानों की टोली के आने का समाचार मिलते ही हनुमान के मन्दिर में जो लोग थे, उन्होंने सारी व्यवस्था ठीक कर दी और वहां मनुष्य होने का कोई चिन्ह बाकी नहीं छोड़ा। सब लोगों के जाने के बाद केवल

गुसाईं जी ही अकेले वहां बैठे हरिभजन कर रहे थे। गुसाईंजी मुंह से तो भजन कर रहे थे, पर यह स्पष्ट मालूम हो रहा था कि उनकी दृष्टि बाहर तथा चारों ओर बड़ी व्यग्रता से कुछ खोज रही हैं। धीरे धीरे आने वालों का शब्द और भी नजदीक आता गया। गुसाईं जी ने और जरों से भजन करना शुरू किया। उनके भजन का शब्द सुन बाहर से जाने वाले लोगों में से दो की दृष्टि उनपर पड़ी। वे दोनों गुसाईंजी के नजदीक आ कर बोले — यह फकीर कौन है! इधर चलवे साले।'

तुरन्त ही बाबाजी ने आकर कहा — कौन है सरकार! क्या मुझे बुलाया है?'

उन सैनिकों में से एक ने पूछा — यह मंदिर किस का है? यहां कौन-कौन रहता है? तू यहां क्या करता है? यहां रहने का तुझे किसने हुक्म दिया।

बाबाजी ने एकदम शान्त हो उत्तर दिया — यह हनुमान का मंदिर है। मैं यहां अकेला ही रहता हूं और आस-पास के गांवों से भीख मांग कर पेट भरता हूं।

और कौन रहता है। सच-सच बतावें मंगते? यहां वह शाह जी का बेटा शिवाजी आता है या नहीं। बोलो यहां वह हमेशा आता है या नहीं। मैं मराठा हूं और बाहर जो लोग हैं, वे सब मुसलमान हैं। वे बादशाह के यहां से उसे पकड़ने आये हैं। यदि तुम चुपचाप उसका पता बता दोगे तो ठीक है अन्यथा ....।

पर आगे कुछ कहने के पूर्व ही उस साधु ने कहा — हां! हां! तो आप लोग उसको पकड़ने यहां आये हैं, आप मराठे हैं और गोल बना कर शिवाजी को पकड़ने आये हैं। वाह-वा! भगवान् सीताराम की अगाध लीला है।

ये शब्द सुन कर उस मराठा सरदार को ये सब बातें शायद कुछ अजीब-सी लगी, इसी कारण उसने इस साधू की ओर देख कर कहा — बस ! बस ! मैं यह सब व्यर्थ की बकवास नहीं सुनना चाहता। मैं अन्दर घुस कर सब कुछ देखूंगा।'

पर जैसे ही वह मराठा तथा मुसलमान सरदार मंदिर में घुसने के लिये आगे बढ़े, वैसे ही साधु दरवाज़े में खड़ा होकर बोला — मराठा या हिंदू के सिवा — यदि कोई व्यक्ति मंदिर में घुसेगा तो उसे मेरी लाश पर पैर देकर जाना होगा। मैं जब तक जीवित हूँ तब तक ····।

पर तुरन्त ही उस सरदार ने कहा — मैं मराठा हूँ, इसी कारण अन्दर जा रहा हूं। ये अन्दर नहीं जायंगे। पर यदि मुझे कुछ शंका हुई तो याद रखना तुम्हारा ····' यह कह वह सरदार अकेला ही उस साधु के साथ मंदिर में घुसा।

दरवाजे से काफी अन्दर जाने के बाद उस साधु ने हिम्मत कर कहा -- सरदार साहब आप बादशाह का काम करने आये हैं, फिर भी क्या मैं कुछ कहने की हिम्मत कर सकता हूं ?'

'हां ! हां ! जरूर कहो।'

सरदार साहब आप हिंदू हैं, मराठा हैं, क्या आप को आप के कुल का, आपकी जाति का तथा अपने देश का कुछ भी अभिमान नहीं है।'

साधु की यह बात सरदार साहब को तनिक भी न रुची। वे उसकी ओर एकदम घूम कर बोला —'साधु बाबा आप की इन बातों से आप के निरे साधु होने पर मुझे विश्वास नहीं होता है और मेरी यह इच्छा होती है कि आपको उन लोगों का साथी कह पकड़ ले जाऊं।'

आप मुझे पकड़ ले जाना चाहते हैं तो आप खुशी से पकड़ ले जाइए, सूली पर चढ़ाइए, चाहे जिस प्रकार मेरी दुर्दशा कीजिए और मुझे मार डालिए। मेरे तो आगे नाथ न पीछे पगहा। हमारे लिए तो कोई रोने वाला भी नहीं है। हमें जेलखाना, सजा या मृत्यु-दण्ड का भय दिखाना व्यर्थ है। इससे कोई लाभ नहीं होगा। इससे तो यही सिद्ध होगा कि आपके जैसे मुगलों की गुलामी करने वालों के लिए गौ ब्राह्मण की हत्या करना भी साधारण-सी बात है। और उसका आपपर कोई असर नहीं पड़ता। पेट के लिए आप अपना मानगौरव मराठा और हिन्दुत्व सभी भूल गये। आपके इस कृत्य से दुनिया को बस यही बात मालूम होगी।

साधु बाबा यह सब इतनी शान्तिपूर्वक तथा तन्मयता से कह रहे थे कि सुनने वाले पर उसका कुछ असर अवश्य होता। और इस मराठा सरदार पर भी इसका असर हुआ। पर इसपर होने वाले उस असर को छिपाने के हेतु उसने साधु से कहा — ठीक है! ठीक है! आपकी पण्डिताई की मुझे आवश्यकता नहीं। मैं जिस कार्य के लिए आया हूँ, उसे मुझे पूरा करने दो। यहां नीचे एक सुरंग है और उस सुरंग में ····।

अभी बात पूरी भी न हो पाई थी कि इस साधु ने कहा — क्या! क्या यहां सुरंग है! बताइये वह सुरंग किस स्थान पर है। यदि आप को मालूम है तो आप अवश्य उसे ढूंढ निकालिए मेरे छिपने के लिए एक स्थान हो जायगा।'

इसपर उस सरदार ने कुछ भी उत्तर न दिया। एक-दो बार उसने जमीन पर लेट कर आहट ली। फिर जहां-जहां उसे शंका हुई उसने हाथ-पैर पटक कर देखे। पर कहीं भी पोली जमीन का चिन्ह न मिला। इसका एक कारण था कि यह सुरंग हनु-

मान की मूर्ति की पिछली ओर थी और वहां बहुत कम जगह थी।

आखिर निराश हो वह सरदार दरवाजे के पास जाकर मुसलमान सरदार से बोला इस स्थान की अच्छी तरह छानबीन की गई, पर यहां शंका करने की कोई बात नहीं दिखाई देती। इसलिये अब हम यहां से ....।

'पर मैं समझता हूं इस फकीर पर विश्वास करना उचित नहीं।' माथे पर बल डालते हुए उस मुसलमान सरदार ने कहा– यह बड़ा उस्ताद दिखाई देता है। इसे मैं गिरफ्तार कर ले जाऊंगा। मुझे तो यह शंका हो रही है कि इस फकीर ने तुम्हें अपनी ओर मिला लिया है। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मौके पर हिन्दू-हिन्दू एक हो जाते हैं। कुछ भी हो पर मराठे निमक़हराम ....।'

पर मराठा सरदार की चढ़ी तेवरियां देख उस सरदार ने बात अधूरी ही छोड़ दी। मराठा सरदार को इन बातों से बहुत क्रोध हो आया। पर वह समय कुछ कहने का नहीं था, उसने सोचा अब यहां से तुरन्त चल देना चाहिए। कारण यदि कुछ समय वह और ठहरा तो इस सरदार ने जिस प्रकार कहा है, वह इस साधु को पकड़ लेगा। सरदार यह नहीं चाहता था। इस कारण उसने यह समय टालना ही उचित समझा। पर बात बनी नहीं और उस मुसलमान सरदार ने उस साधू को गिरफ्तार कर लिया।

वह मुसलमान सरदार भी काफी चतुर था। वह मराठा सरदार की ओर देख कर बोला — आप चाहे जो कहें पर यह व्यक्ति केवल फकीर नहीं है। इसकी इस बात पर मुझे विश्वास नहीं होता है। मैं इसे अवश्य पकड़ ले जाऊंगा। यह कह

उसने आज्ञा दी — इस फकीर को पकड़ ले चलो, उसकी यह आज्ञा पा चार-पांच सैनिक एकदम उसकी ओर दौड़े।

उन्हें अपनी ओर आता देख उस साधु ने कहा — खबरदार ! मेरे शरीर को हाथ न लगाना, तुम्हें इस प्रकार भाग कर पकड़ने की आवश्यकता नहीं है। मैं स्वयं ही तुम लोगों के साथ चलता हूं। पर इस स्थान पर न जाने फिर कब आने को मिले, इस कारण मैं भगवान को चार परिक्रमा दे लूं। उसने एक-दो परिक्रमा की और तीसरी बार दो उंगलियों से मूर्ति सरका कर उसमें हुई जगह में कुछ डाल दिया और मूर्ति को फिर यथास्थान रख दिया। इसके बाद वह बाहर आकर उन लोगों से बोला — अब मुझे जहां ले जाना चाहो, ले चलो। पर यहां से चलने के पूर्व मैं एक बार फिर तुम लोगों को बता देना चाहता हूं कि तुम मुझ गरीब को व्यर्थ ही कष्ट दे रहे हो। पर जैसे ही वह बाहर आया, त्योंही सिपाहियों ने उसे घेर लिया और उसे बीच में कर वे लोग रवाना हुए।

वे दोनों सरदार शान्तिपूर्वक आगे बढ़ रहे थे। पर पीछे से आने वाले व्यक्ति रास्ता चलने वालों की हंसी उड़ाते हुए चल रहे थे। धीरे-धीरे वे लोग एक गांव की सीमा के पनघट पर पहुंचे। वहां कुछ कोलियों की औरतें पानी भर रही थीं। उनमें एक स्त्री अत्यन्त सुन्दर थी। इसपर इन गुण्डों की नजर पड़ते ही उन्होंने उसके साथ हंसी-मजाक शुरू कर दिया। यह सब देख वह साधू अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। वे सोचने लगे 'ये मुसलमान हम मराठों की स्त्रियों का अपमान करें, उनकी हंसी उड़ाए और हम उसे चुपचाप देखते रहें। इसके समान और दूसरी कमजोरी नहीं हो सकती।' इस विचार के आते ही वे अत्यन्त क्रुद्ध हुए।

इसी समय उस सुन्दर स्त्री की गर्दन में टीस उठने के कारण उसने दोनों हाथों से घड़ा ऊपर उठाया और एक दो बार गर्दन इधर उधर कर फिर घड़ा सिर पर रख लिया।

यह देख उनमें से एक व्यक्ति बोला ओह! मार डाला क्या खूबसूरती है। घड़े के कारण उसे बड़ी तकलीफ हो रही है।'

दूसरा बोला—घड़े से जो तकलीफ हो रही है उसकी व्यवस्था मैं किये देता हूं। देखो क्या तमाशा होता है। यह कह वह नीचे झुका और उसने एक छोटा सा पत्थर लेकर उस सुन्दरी के घड़े में मारा और बोला—इतनी देर तो बिजली ही चमक रही थी अब देखो कैसा पानी बरसता है।'

पत्थर लगते ही घड़ा टूट गया। और घड़े के पानी से वह सुन्दरी तर हो गई। पर साथ ही पत्थर मारने वाले की भी हालत बहुत खराब हो गई। कारण साधु को यह सब सहन न हुआ। उन्होंने उस सिपाही के पास जाकर इतनी जोर से कमर में लात मारी कि वह सिपाही जमींन पर गिर पड़ा। उसके नीचे गिरते ही साधु उसकी छाती पर चढ़ बैठा और धड़ाधड़ घूंसे मारने शुरू किए। जब उस व्यक्ति के मुंह से खून बहने लगा तो उन्होंने उसे छोड़ा और गम्भीर मुद्रा से वे बाकी लोगों की ओर देखने लगे।

इतने ही में वह मुसलमान सरदार बेतहाशा घोड़ा दौड़ता हुआ वहां आ पहुंचा और मारपीट का कारण पूछने लगा। लोगों ने जैसी बातें देखी थीं वैसी ही उसे बताई। पर एक बात का जो उसे आश्चर्य हुआ उसे वह छिपा न सका कि इतने लोगों से घिरे रहने पर भी साधु ने हिम्मत कर एक मुसलमान को मारते २ जमीन पर लिटा दिया। यह सब सुन और देख कर उसने साधु से कहा—क्या साधु बाबा अब आप बताइये

कि मामला क्या है। यह सब कैसे हुआ। यह सुनने पर ही झूठ सच का निर्णय किया जा सकेगा।

यह सब सुन साधु हंसा और बोला—मेरे विषय में छान-बीन करने वाला तू कौन है। तू जो कुछ करना चाहता है वह बेशक कर सकता है।

---

[८]

मंदिर से डेढ़ कोस पर

इधर हनुमान के मंदिर में श्रीधर स्वामी उर्फ साधु बाबा तो ऊपर चले आये और उन दो सरदारों के साथ झगड़ते रहे और उधर उस सुरंग में उन चारों व्यक्तियों की मंत्रणा होती रही। उन्हें स्वप्न में भी यह ध्यान नहीं था कि उनके स्वामीजी को कोई पकड़ ले जायगा। पर जब श्रीधर स्वामी बहुत देर तक नहीं लौटे तो लोगों को चिन्ता उत्पन्न हुई। येसाजी तीन बार ऊपर के दरवाजे तक आकर आहट ले गया। चौथी बार ताना जी आया और उसने आहट ली पर चारों ओर सन्नाटा था। इधर-उधर देखने पर उसे एक खंजर दिखाई दिया, जिसकी नोक पर एक फूल लगा हुआ था। इस संकेत का यह अर्थ होता था कि अब सीधे रास्ते से न जाकर दूसरे रास्ते से जाना चाहिये। इस कारण इस प्रकार करने का निश्चय किया गया। तानाजी ने एक बार ऊपर जाकर जब श्रीधर स्वामी के गिरफ्तार होने का निश्चय कर लिया और नीचे जाकर सारा समाचार कह सुनाया उसके बाद चारों ने बैठ कर अगली योजना तैयार की। बाद में चारों मंदिर में से डेढ़ मील की दूरी पर सुरंग के दूसरे दरवाजे पर निकले। यह दरवाजा ऊबड़खाबड़ जमीन में निकलता था।

वहां आने पर येसाजी ने 'जीवा ओ जीवा !' कह कर आवाज दी। पर उस पुकारका किसी ने भी उत्तर नहीं दिया। आखिर वह बाहर आकर पास ही की एक झोंपड़ी में गया और फिर आवाज़ दी — जीवा, ओ जीवा बोलता क्यों नहीं, क्या मर गया या जिन्दा है। क्या इसी प्रकार पहरा देता है ?'

इस प्रकार येसाजी के चिल्लाने से जीवा चौंक कर उठ बैठा। उसने इस प्रकार सोने के लिये येसाजी से माफी मांगी। येसाजी ने उसे चार घोड़े लाने को कहा और यमाजी के विषय में पूंछा।

जीवा ने उत्तर दिया — 'वह मुझे यह कह गया था कि वह आधी घड़ी में लौट आएगा। पर वह बदमाश अभी तक नहीं लौटा है।' यह कह जीवा जल्दी से झोंपड़ी के बाहर निकला और शीघ्र ही न जाने किधर गायब हो गया।

इसके जाने के बाद येसाजी फिर उस सुरंग के मुंह पर गया और उन तीनों व्यक्तियों को साथ ले आया। येसाजी ने पीछे आने वाले तीनों व्यक्तियों से कहा — अब यहां अधिक देर ठहरना उचित न होगा। जीवा अब उधर घोड़े कस कर तैयार कर रहा होगा और इसलिए यदि हम आगे बढ़ चले तो अच्छा ही होगा। यमाजी के आने पर मैं आगे की व्यवस्था करता हूं। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यदि श्रीधर जी का बाल भी बांका हुआ तो दक्षिण में मुसलमानों का नामोनिशान भी बाकी नहीं छोड़ूंगा।'

उधर जीवाजी को जिस प्रकार आज्ञा मिली थी, उस प्रकार उसने चारों घोड़े तैयार कर निश्चित स्थान पर खड़े किये। अनुमान से अभी दो घड़ी भी न बीती थी कि हमारा जवान सैनिक तानाजी और वह तेजस्वी नवयुवक पहाड़ी से नीचे उतरे और

घोड़ों पर सवार हुए। जब वह चलने लगे तो तानाजी ने जीवा जी की ओर घूम कर कहा — तू थोड़ी देर चौथी घोड़ी यहीं तैयार रख और तू यहीं खड़ा रह। येसाजी आता ही होगा। आज राजा ने तुझे क्षमा किया है, पर फिर यदि इस प्रकार गाफिल हुआ और पकड़ा गया तो... पर अगले शब्द पूरे होने के पूर्व ही उस तेजस्वी नवयुवक ने तेजी से घोड़ी आगे बढ़ाई। उसकी एक ओर तानाजी और दूसरी ओर हमारा वीर सैनिक था।

इधर आखिर यमाजी लौट आया। उसके आते ही येसाजी ने कहा — यमाजी आज तक तुमने जो नौकरी बजाई है, उसे मैं जानता हूँ और तेरी बुद्धिमत्ता तथा पराक्रम भी राजा साहब की नजर में आ चुका है और समय आने पर इसके लिए तुम्हें उपयुक्त पुरस्कार भी मिलेगा। पर आज तुम्हें मैं एक महत्वपूर्ण कार्य बताता हूं। वह कार्य केवल इतना ही है कि हमारे उस हनुमान के मन्दिर के साधु को आज एक मराठा और मुसलमान सरदार पकड़ ले गये हैं। तुम इसी समय जाओ और उनपर निगाह रख उनके विषय में समाचार दो। यदि साधु के प्राणों को भय उत्पन्न हो तो चाहे जिस प्रकार हो, उसकी मुझे तुरन्त सूचना देना। तीन दिन के अन्दर ही मैं उसे छुड़ा लूंगा। जाओ और शीघ्र रवाना हो। इसमें हिचकिचाने की आवश्यकता नहीं है। तुम जब यहां से मेरी आंखों से ओझल हो जाओगे तभी मैं यहां से हटूंगा।

येसाजी की यह बात सुन यमाजी तुरन्त अपनी झोंपड़ी में गया। थोड़ी देर में वह तेलियामसान बन कर बाहर निकला। उसके कड़े और घुंघरू बज रहे थे और वह साथ ही डफ बजा रहा था तथा उसके कंधे पर कोड़ा और माथे पर सिन्दूर पुता

हुआ था। इस प्रकार वेश बना येसाई जी को राम-राम कह वह मंदिर की ओर चल दिया।

येसाई यमाजी की ओर हंसते हुए देखने लगा और जब वह आंखों से ओझल हो गया तो वह पहाड़ी चढ़ने लगा। उसके वाद वह पहाड़ी उतरा और अपने लिए तैयार खड़े घोड़े पर सवार हो, वह भी उन्हीं तीनों की तरह पूर्ण वेग से घोड़ा दौड़ाता हुआ आगे बढ़ा।

———

[६]

सांवलिया ने क्या किया ?

सुभान के घबराने के बाद उसके हाथ से गिरे लिफाफे को लेकर सांवलिया तेजी से आगे बढ़ता गया। इस प्रकार वह भरी दुपहरी में गांव पहुंचा। इसी गांव के देशमुख को यह लिफाफा देना था। इसलिए वह सीधा देशमुख के महल की ओर बढ़ा। पर वहां जाकर उसने देखा कि जहां तहां लोग पकड़े जा रहे थे तथा भाग दौड़ मची हुई थी। देशमुख के मकान के चारों ओर हथियारबंद मुसलमानों का पहरा था। और सारे महल में मुसलमान हथियार लेकर घूमे हुए थे। महल में कोलाहल मचा हुआ था। पर अन्दर क्या हो रहा था इसका सांवलिया को कुछ भी पता न चल सका। उसने आस पास के लोगों से अनेक प्रश्न किए पर प्रत्येक व्यक्ति अपने ही कार्य में व्यस्त था! आखिर एक व्यक्ति ने चिढ़कर उत्तर दिया—अबे तुझे दिखाई नहीं देता है कि बादशाह के आदमी महल में घुसे हैं और सबको पकड़ रहे हैं तथा महल लूटा जा रहा है।

गांव के लोग देशमुख को बहुत चाहते थे पर उसका क्या लाभ हो सकता था। कारण ऐसे समय कौन काम आता और एक तरह से वे सभी असहाय थे। उन सबको यही आश्चर्य था कि एक दम यह सब कैसे और क्यों हुआ? यह सब इतना अचानक हुआ था कि लोगों के दिलों में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही था। सबेरे १० बजे के करीब ५० सवारों का एक दल जिसमें अधिक मुसलमान ही थे गांव में घुसा और तेजी से देशमुख के महल की ओर गया।

महल में पहुंचते ही उन्होंने चिल्लाना प्रारम्भ किया—कहां है देशमुख-पकड़ो उस हरामजादे को? कहां है उसकी स्त्रियां वह षड़यंत्र करना चाहता है न। देखें वह कैसे षड़यंत्र करता है।' इसी प्रकार की गालियां देते शोर मचाते उन्होंने उत्पात प्रारम्भ किया। आखिर उस गुट के सरदार ने देशमुख तथा उसकी स्त्रियों को गिरफ्तार कर उस धूप में आगे बढ़ाया और अपने आदमियों को आज्ञा दी कि वे देशमुख का महल लूटकर उसे जमीनदोस्त करदें। इस प्रकार जब लूट हो रही थी तो गांव के लोगों के दिल न भर आए थे ऐसी बात नहीं थी। पर क्या करें बेचारे। उस गांव में मराठा वीर भी थे। वे भी दिल मसोसकर रह गये। उनके बाहु फड़क उठे पर अभी उन्हें यश मिलने का समय नहीं आया था कारण अभी मुसलमानों का पाप का घड़ा नहीं भरा था। जिससे ईश्वर अवतार गृहण करते। अभी इसके लिए समय बाकी था।

यह सब मामला सांवलिया देख रहा था। वह बाहर ही रुक गया। वह भय में हो रहा था और उसे सबेरे से कुछ खाने को भी नहीं मिला था। पर यह लोमहर्षण दृश्य देख उसकी भूख प्यास न जाने कहां की कहां भाग गई। उसे

उसका स्मरण भी न हुआ। इतने में उसे कुछ याद हो आया और वह अपने से ही बोला--पर इस भीड़ में सूर्याजीराव का कहीं पता नहीं लग रहा है। कहीं इन बदमाशों ने उसे मार तो नहीं डाला। अब सूर्याजीराव की स्थिति जाने वगैर मुझे यहां से जाना उचित नहीं।' यह सोच वह महल में पिछली ओर से घुसा और प्रत्येक चौक से सतर्क हो आगे बढ़ने लगा।

प्रत्येक कमरे में अनेक लाशें पड़ी हुई थीं। अभी सूर्य का प्रकाश काफी था इस कारण उसने प्रत्येक को अच्छी तरह देखा। पर उन लाशों में सूर्याजी की लाश कहीं नहीं मिली। वह पहले चौक से दूसरे चौक में गया और वहां उसने जो भीषण दृश्य देखा उसे देख वह चौंका।

उसके दूसरे चौक में पैर रखते ही एक लाश ऊपर से आंगन में आ गिरी। वह प्रेत एक दासी का था। वह सब देख सांवलिया के शरीर में रोमांच हो आया। उसे कुछ भी नहीं सूझ रहा था। इतने ही में उसे एक जोर की चीख सुनाई दी। वह उस अनुसंधान से एक शिकारी की तरह दबे पांव आगे बढ़ा। और पास वाले जीने से ऊपर चढ़ गया। उसने देखा कि पास के कमरे में एक अत्यन्त रूपवती स्त्री बेहोश पड़ी है और एक मुसलमान उसे कालीन पर रखने के विचार में है। पास ही पालने के पास एक सुन्दर बालक रो रहा है।

वह गुण्डा उस बेहोश स्त्री की ओर देखकर बोला—हे सुन्दरी मैं तुझ पर बहुत दिनों से आंख लगाए था। आज मुझे मौका मिल गया। आज मैं तुझे ले जाऊंगा। उस तेरे भिखमंगे खसम को मैंने कभी का शैतान के यहां रवाना

कर दिया है । और बार बार मेरे काम में दखल देनेवाली तेरी दासी को भी जहन्नुम रवाना कर दिया है । पर तेरे लड़के को मार डालने की धमकी देते ही तू बेहोश होगई । पर चलो यह बात भी मेरे मतलब की ही हुई। इस लौंडे ने भी क्या शोर मचा रखा है । क्यों न इसकी गर्दन पर पैर रख कर इसका काम तमाम कर दूं ।' यह कह वह दुष्ट सचमुच ही वह बालक की ओर बढ़ा। क्षणभर की ही देर थी। वह पाजी शैतान उस बालक पर जूतेवाला पांव रखने ही वाला था । उस दृश्य की कल्पना भयंकर थी । एकाएक सांवलियां में मानो किसी दैवी शक्ति का संचार हुआ । वह इतनी तेजी से आगे बढ़ा और उसने उसी की तलवार से उसकी पीठ पर इस जोर का बार किया कि वह बदमाश पीछे घूमकर भी न देख सका । वह धड़ाम से पीछे गिर पड़ा। बच्चा बच गया । सांवलिया ने उस समय ऐसा कार्य किया जैसा कि एक बड़ा आदमी भी नहीं कर सकता । उस समय की उसकी सूझ प्रशंसनीय थी । शत्रु और उसकी शक्ति में जमीन आसमान का अन्तर था । उसने उस भीमकाय मूर्ति की ओर देखकर कहा यदि यह व्यक्ति उठ खड़ा हुआ तो यह मेरी धज्जियां उड़ा देगा । इस-लिए उसने अपने छोटे छोटे हाथों से एक दो तीन चार हाथ जहां उससे लगे उसने मारे । वह दुष्ट बहुत कुछ छटपटाया पर वह उठ नहीं पा रहा था। उसके सारे शरीर पर घाव ही घाव होगए थे और उसके चारों ओर शरीर से निकले रक्त की नदी बह रही थी। यह देख सांवलिया को चक्कर आ गया और वह जमीन पर गिरकर बेहोश होगया ।

उस दुष्ट को सांवलिया ने तलवार से खूब छेदा था। इससे वह समझ चुका था कि अब वह बच न सकेगा। बड़ी मुश्किल से उसने करवट बदली और आंखें खोलकर देखा तो उसकी दृष्टि उस सुन्दर स्त्री पर पड़ी। और उसमें फिर एकदम शक्ति का संचार हुआ। उसके दिल में आया कि आज तक जिसके लिए उसने इतने प्रयत्न किए वह इच्छा आज पूरी होनी ही चाहिए। कम से कम उसके अधरों का स्पर्श तो किया ही जाय। इस विचार से वह उठने का प्रयत्न करने लगा। पर उसमें उठने की शक्ति नहीं रही थी। इस कारण वह लेटे लेटे ही उस स्त्री की ओर बढ़ने लगा। वह धीरे धीरे लुढ़क कर उस स्त्री के पास पहुंचने का प्रयत्न करने लगा। धीरे धीरे वह उस सुन्दरी के नजदीक पहुंच गया और जैसे ही वह चुम्बन लेने को मुंह ऊपर करने वाला था कि उस स्त्री की बेहोशी टूटी। और जिस प्रकार कोई काला भुजंग देखकर कूदकर एक ओर होजाय उसी प्रकार वह स्त्री भी क्रोध से चिल्लाई 'मरे' और चीखकर दूर जा खड़ी हुई उसके चीखने से सांवलिया भी जागा। उसने आंखें खोलीं तो उसे वह स्त्री दिखाई दी। उसने पूछा—सूर्याजीराव कहां है?'

"उसका वह प्रश्न सुनते ही उस स्त्री की स्थिति क्या हुई वह बताई नहीं जा सकती। उसने एकदम चौकड़ी भरी और दीवानखाने से बाहर निकल गई। उसके पीछे पीछे सांवलिया भी गया। वह यह नहीं जानता था कि उस स्त्री की मनः-स्थिति क्या है। वह एक कमरे से दूसरे में और दूसरे से तीसरे में दौड़ने लगी और अन्त में एक और दीवानखाने में आई। और वहां छटपटाए वीर पुरुष को देख चारों ओर शून्य दृष्टि से देखने लगी। उसने एक बार फिर उस वीर पुरुष

की ओर देखा और चीखकर बेहोश हो गई । सांवलिया भी उसके पीछे पीछे वहां पहुँच गया । उसने देखा सूर्याजी घायल हो वहां मरे के समान पड़ा है। वह यह जानता था कि बेहोश व्यक्ति की आंखों में पानी लगाने से उसे होश आता है। इसलिए वह दौड़कर गया और पानी ले आया। उसने पानी सूर्याजी की आंखों से लगाया। एक घूंट पानी उसके मुंह में डाला और मुँह पर पानी का छींटा दिया । यह उपाय काम कर गया । सांवलिया ने सूर्याजी, सूर्याजी कह उसे पुकारा। सूर्याजीराव अब भी अच्छी तरह होश में नहीं आया था। पर सांवलिया की पुकार ने उसे जागृत कर दिया था।

उसने धीरे से कहा—कौन सांवलिया तुम यहां कब आए ! सांवलिया पिताजी कहां हैं ? बहिन कहां है ! वह कहां हैं ?' पर इस सब का क्या जवाब दे यह सांवलिया नहीं समझ पा रहा था । पर उसने इतना ही कहा—यह देखो यह आपकी संतान के पास लेटी हैं।' यह कह वह उस सुन्दरी के पास गया ।

वह भी बेहोश थी। सांवलिया ने उस पर भी पानी छिड़का वह होश में आई। पर वह पहिले से भी अधिक पागलों की तरह कहने लगी। उस समय सूर्याजी ने प्रश्न सूचक दृष्टिसे सांवलिया को ओर देखा । सांवलिया ने गांव में घुसने लेकर सूर्याजी के पास पहुंचने तक जो जो हुआ था वह कह सुनाया।

सूर्याजी ने जब वह सब सुना तो बहुत देर तक स्तब्ध रहा और फिर बोला—सांवलिया आज तूने बहुत वीरता का कार्य किया है । आज तूने एक बड़े शत्रु को गो ब्राह्मण को कष्ट देने वाले दुष्ट को मराठों के बहुत बड़े शत्रु को चित कर दिया । वह है तो जरा सा आदमी पर बादशाह की

उस पर वहुत मेहरवानी है। सांवलिया जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ। पर इसका परिणाम भयंकर होगा। अब तू क्षण भर भी न ठहर। बाग में जाकर इसे घोड़े पर बैठा कर तू यहां से निकल भाग। यहां से दो कोस जाने पर एक जंगल मिलेगा। वहां एक वड़ा भारी बरगद का वृक्ष है। उसके नीचे एक झोंपड़ी है। उस झोंपड़ी में एक बूढ़ा मिलेगा। उसे यह कटार और तावीज दिखाना बाद में उसे सारा समाचार कह सुनाना। और कहना सूर्योजी ने अपनी स्त्री और बच्चा तुम्हारी गोद में दिया है।' ये शब्द सूर्योजी के मुंह से बड़ी कठिनाई से निकल रहे थे।

सांवलिया ने सूर्योजी को फिर दो घूंट पानी पिलाया। उसे पीकर तनिक सचेत हो उसने कहना प्रारम्भ किया—और सांवलिया यदि तुझे नाना साहब मिलें तो उन्हें मेरा इतना संदेसा कहना कि यदि तुम सच्चे मराठा हो तो हमारे तुम्हारे बीच जो कसमें और वायदे हुए हैं वे तुम्हें याद ही होंगे तुम मेरे इस खून का बदला अवश्य लेना।' यह कह वह बेहोश होगया। सांवलिया ने फिर पानी का प्रयोग किया।

सूर्योजी की स्त्री एकदम पागल होगई थी। सांवलिया ने जो पानी उड़ाया था उसके कुछ छींटे उस पर भी गिरे थे। उन्हें देख वह पगली बोली, आग लगी है। ओह चिनगारियां उड़ रही हैं।' यह कह वह वहां से भाग खड़ी हुई।

इसी बीच सूर्योजी ने आंखें खोलीं। उसने सांवलिया से कहा — अरे तू अभी तक यहीं खड़ा है। जा तू यहां से जल्दी चला जा और मेरी चिन्ता न कर। मेरे विषय में अब तुम चाहे जितनी चिन्ता क्यों न करो, पर तुम मुझे बचा न सकोगे, वह आया भूल गई है पागल हो गई है, यह एक तरह से अच्छा

ही हुआ है। मुझे तो कोई फूंक ही देगा। अब तुम यहां से जल्दी जाओ और उसे ले जाओ।' इसके आगे सूर्याजी कुछ भी न बोल सका। सांवलिया ने सोचा यदि वह इसके आगे वहां ठहरा तो वह निश्चय ही क्रोधित हो उठेगा। यह सोच वह वहां से उठ खड़ा हुआ और सूर्याजी की तरुण स्त्री को ढूंढने निकला।

वह इधर-उधर घूमा पर उसका कहीं पता न चला। पर इतने ही में उसे अनुमान हुआ कि कहीं कोई मधुर स्वर में गा रहा है और उस आवाज के सहारे वह आगे बढ़ने लगा। उसने देखा कि सूर्याजी की पागल स्त्री ठाकुरद्वारे में बैठ कभी हंसती है, कभी रोती है। इसके बाद हंसते-हंसते चुटकिया बजा-बजा कर यह गीत गाने लगती है —

गीत

किसी दुष्ट ने फूलों को कुचला,
किसी ने उन्हें खूब मसला।
मैंने चुना उन्हें उपवन में,
अर्पित किया ईश-चरणों में।
उन्हें किसी ने नोचा मसला,
किसी ने उन्हें खूब मसला॥ १॥

ताजे ताजे कुसुम चुने थे,
कुम्हलाने मैंने न दिये थे।
उन्हें किसी ने रौंदा कुचला,
किसी ने उन्हें खूब मसला॥२॥

मेरा चम्पा भी कुम्हलाया,
मेरा गुलाब भी मुर्झाया।
बेला जुही नष्ट क्यों होती,

उन्हें किसी ने रौंदा मसला।
किसी ने उन्हें खूब मसला।।३।।

यह गाना वह तन्मय हो गा रही थी। सांवलिया यह समझ नहीं पा रहा था कि इस गाने का क्या मतलब है। उसका पागलपन बढ़ता ही जा रहा था कि वह क्या करे।

[१०)
अग्नि के मुख में

पिछले अध्याय में वह तरुणी यदि पागल न होती तो उसे समझा-बुझा कर उसे वहां से चुपचाप ले जाना सम्भव था। पर इस समय उस आए संकट को समझना तथा वहां से निकल भागने की बात उसे समझाना अत्यन्त कठिन था। इस कारण सूर्याजी ने उसे जो काम बताया था, उसे किस प्रकार पूरा किया जाय, यह सांवलिया के लिए एक समस्या हो उठी थी। गांव या महल का कोई आदमी यदि उसकी सहायता को आता तो बहुत ही अच्छा होता, पर कोई भी व्यक्ति उसे दिखाई नहीं दे रहा था और ऐसे समय वहां न किसी के आने की आशा ही थी।

बड़ी देर सोचने के बाद वह वहां से निकल कर घुड़साल की ओर आगे बढ़ गया। उसने वहां चारों ओर नजर दौड़ाई। उसे दूर पर घास की गंजी दिखाई दी। उसे ऐसी शंका हुई कि वहां से कोई झांक कर देख रहा है। इस समय सूर्य अस्ताचल की ओर जा चुका था। धीरे-धीरे अन्धेरा छा रहा था। फिर भी वह हिम्मत कर गंजी की ओर गया और उसने उस व्यक्ति को पहिचान कर बोला — वाह हरवा नाईक। अरे तुम्हें कुछ तो सोचना चाहिए था। सूर्याजी मरे पड़े हैं। देशमुख बाई साहब

तथा ताई साहब को मुगल पकड़ ले गये हैं। अब महल में भाभी साहिबा तथा नन्हा बालक ही रह गया है। अजी सूर्याजीराव ने उन्हें एक निश्चित स्थान पर पहुंचाने का अन्तिम कार्य पूरा करने की आज्ञा हमें दी है। उतना तो कार्य हम सब को पूरा करना ही चाहिये। सूर्याजीराव की मृत्यु हो गई, इस विषय में तुम लोगों को क्या तनिक भी दुःख नहीं है।' सांवलिया ने यह बात इतनी दीन होकर कही कि हरबानाईक जैसे डरपोक व्यक्ति की चाहे हिम्मत न बंधी हो, पर हरबानाईक के पीछे से जो तीन-चार व्यक्ति बाहर निकले थे, उन्हें बहुत ही दया आई और उन्होंने आगे बढ़ कर कहा — लेकिन महल के आसपास बादशाह के सिपाही पहरा दे रहे हैं। यदि हमने महल में जाने का विचार किया तो क्या हम बिना किसी के जाने महल में प्रवेश कर सकेंगे।

यह कठिनाई सामने आने पर थोड़ी देर कोई भी कुछ न बोला। बाद में उनमें से एक और व्यक्ति ने भर्राई आवाज में कहा — शंकराजी नाईक! इस समय तो कम से कम नमक-हलाल करो। तुम चुपचाप जाकर देख आओ कि महल के आस-पास कहां-कहां पहरा है। चाहे जो हो, हम आठ व्यक्ति हैं। इतना काम हम अवश्य करें कि जहां भाभी साहिबा को पहुंचाना हो, वहां हम उन्हें पहुंचा दें। यह कह वह शीघ्र घोड़ों की ओर मुड़ा और दूसरे दो व्यक्ति सांवलिया के साथ महल की ओर जाकर भाभी साहिबा की खोज करने लगे।

पर आश्चर्य यह कि भाभी साहिबा कहीं दिखाई नहीं दी। इतने में चौक में उन्हें काफी शोर सुनाई दिया और शोर उर्दू भाषा में हो रहा था। इससे यह स्पष्ट मालूम हो रहा था कि ये लोग पियारीखां की तलाश में आये थे, जिसे सांवलिया ने मारा

था। वे सिपाही उस स्थान पर गये, जहां पियारीखां जख्मी होकर छटपटा रहा था, वहां ये लोग गए। उस शव की ओर इन सिपाहियों के सरदार की दृष्टि जाते ही उनका सरदार क्रोध से लाल हो गया और उसने बहुत गोलमाल शुरू किया।

सांवलिया ने अंधेरे में इधर-उधर आहट लेकर महल का पिछला भाग छोड़ा और वह चुपचाप घुड़साल की ओर गया। वहां उसने घोड़े तैयार कर खड़े व्यक्ति को सारा मामला कह सुनाया। सांवलिया ने कहा — अब एक ही बात हम कर सकते हैं कि सूर्याजीराव की आज्ञानुसार अब उस बरगद के वृक्ष के पास जाकर कम से कम इतना इशारा तो बतला दें।

उस व्यक्ति को सांवलिया की बात जच गई। और वे दोनों ही उस बरगद के वृक्ष की ओर जाने को तैयार हुए। पर सूर्याजी राव की स्त्री न मिली, इस विषय में सांवलिबा को अत्यन्त दुःख हुआ था। पर ऐसी स्थिति में वह कह ही क्या सकता था।

खान का शव देख उस पठानों की टोली के सरदार को एक बात सूझी। उसने खान की लाश महल से बाहर निकाल कर महल को आग लगाने का निश्चय किया। ऐसा करने से उसका यह विचार था कि वह बादशाह से यह कह सके कि खान को मारने वाले व्यक्ति को उन्होंने जला कर भस्म कर दिया है। इस प्रकार विचार कर उन्होंने खान की लाश बाहर निकाली और गांव वालों की आंखों के सामने देशमुख के महल में आग लगादी। और वे सब अलविदा ए अलविदा' कहते हुए वहां से रवाना हुए।

सांवलिया तथा वह दूसरा व्यक्ति सूर्याजीराव द्वारा बताए वृक्ष के पास पहूँचे और वहां रहने वाले बूढ़े से मिलकर उन्होंने सूर्याजीराव द्वारा दिए गए दोनों चिन्हों को दिखाया।

उस वृद्ध ने उन्हें झोंपड़ी में ले जाकर सारा हाल सुना। जब सब बात समाप्त हो गई तो उस वृद्ध ने जोर से सीटी बजाई। उसे सुन एक काला भुजंग व्यक्ति कहीं दूर से आकर उस वृद्ध के सामने खड़ा हुआ बूढ़े ने उसके कान में कुछ कहा। उसे सुन वह व्यक्ति तुरन्त सांवलिया और उसके साथी द्वारा लाए घोड़ों के पास गया और उनमें से एक घोड़े पर सवार हो बड़ी तेजी से आगे बढ़ा।

इधर महल में आग लगने के कारण उसमें प्रवेश करने के लिए कहीं से भी रास्ता नहीं था चारों ओर से दरवाजों किड़कियों तथा झरोखों में से आग की लपटें निकल रही थीं। पर उन ज्वालाओं के रों रों शब्द के बीच भी एक स्त्री के चीखने चिलाने का शब्द सुनाई दे रहा था। वहां खड़े लोग सभी यह कह रहे थे कि इस स्त्री को बचाना चाहिए। पर आगे बढ़ने के लिए ऊनमें से एक ही व्यक्ति तैयार हुआ और उसे भी कई व्यक्तियों ने पीछे खींचने का प्रयत्न किया। पर सरवाजी ने उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। अब वह आग में कूदने ही वाला था कि पीछे से बड़ी जोर से घोड़ा भागकर उनके बिल्कुल पास आकर रुका। घोड़े के रुकते ही सवार उस पर से नीचे कूद पड़ा। उसने सरवाजी को अन्दर घुसते की तैयारी में देख कहा—शाबास आओ तुम और मैं साथ साथ अन्दर घुसें। ये सब डरपोक हरामखोर लोग हैं। इनकी स्वयं तो हिम्मत हो नहीं रही है और दूसरों को भी पीछे खींच रहे हैं। धिक्कार है इन लोगों के जीवन को।' यह कह उसने उस खिड़की की ओर देखा जहां से करुण स्वर में चीखने चिल्लाने की आवाज सुनाई दे रही थी। उस ओर देख उसने एकदम प्रत्येक मराठे

के दिल में वीरता उत्पन्न करने वाले 'जय शंभूमहादेव ! जय तुलजापुर की माता भवानी । तुम्हारी जय हो ! जय हो ! आदि शब्द कहे। और दोनों ही पास के दरवाजे से अन्दर घुसे । इतने ही में एक कड़ी जोर का शब्द कर गिरी। पर दृढ़ प्रतिज्ञ और प्राणों पर खेल जाने वाला व्यक्ति जब किसी काम के करने पर तुल जाता है तो किसी की भी पर्वाह नहीं करता । या तो वह काम पूरा करेगा या फिर मर जायगा ।

वे दोनों परिश्रम कर उस स्त्री के पास पहुंचे। वहां पहुंचने पर एक क्षण भी बिलम्ब न कर उस काले व्यक्ति ने उस स्त्री को अपने कन्धे पर ले लिया। और दूसरे हाथ से उस बच्चे को उठा लिया । और वह अपने साथी से बोला—सरवाजीराव तुम आगे जाकर निकलने का रास्ता ढूंढो । बाहर निकलते समय तुम स्त्री बच्चे को ले लेना। और उन्हें कहीं दूर ले जाकर होश में लाने का प्रयत्न करना। तब तक जो एक काम बचा है उसे पूरा कर आता हूं ।'

भाग्य से उसका वह साहस सफल हुआ। उसने दोनों को ही आग से सुरक्षित बाहर निकाल दिया और स्वयं उल्टे पैरों अन्दर घुसा। उसे यह सोचने और देखने का भी समय नहीं था कि जिस स्त्री और बच्चे को उसने बचाया है वे किस स्थिति में हैं।

---

[११]
पुरंदरगढ़

सवेरे का समय था। सूर्य आकाश से अभी अभी झांक रहा था। उसकी बार किरणें अपना मधुर हास्य किले पर बिखेर रही थीं और अपनी रक्त आभा से किले को रंग रही थीं। ऐसे समय साधु बाबा पुरंदरगढ़ की एक कोठरी में इधर उधर घूम रहे थे और अपने से ही खीझ रहे थे। मन्दिर से पकड़े जाने के बाद यह दूसरा दिन था। उस मुसलमान सरदार के दिल में इस साधु के विषय में जो शंका उत्पन्न हुई थी वह अब भी शान्त नहीं हुई थी। यह चाहता था कि वह साधु को अपने कब्जे में कर ले और इसके लिए उसे यदि कष्ट भी देना पड़े तो वह इससे न हिच-किचाए। और इस प्रकार वह जो कुछ जानना चाहता है वह जान ले। ऐसे कार्य के लिए यह किला उपयुक्त था और वह स्वयं इस किले का सूबेदार भी था।

उस अन्धेरी कोठरी में साधु बाबा इधर से उधर और उधर से इधर घूम रहे थे। इस समय उनका सहयोगी या साथी जो भी कुछ था वह उनकी कुटी थी। इतने में उन्हें सुनाई दिया कि किले के नीचे कहीं ढफ बज रहा है। इस कल्पना से उनके मुख पर एक आनन्द की रेखा दौड़ गई। थोड़ी देर में एक पहरेदार अन्दर आया। उसे देख गुसाईं जी ने पूछा क्यों नाईक यह सवेरे सवेरे ढफ कहां बज रहा है?'

'ढफ' तनिक विचार कर उस सिपाही ने कहा—'ढफ तो कहीं बज नहीं रहा है। पर नीचे मेरी माता आई हुई है। यह मेरी माता का भगत आठ १५ दिन में यहां एक बार गढ़ पर भीख मांगने आता है।'

यह सुन गुसाईं जी ने सोचा उन्हें जो चाहिए था वह भी मिल गया। साधु बाबा तथा उस पहरेदार नाईक की थोड़ी देर बात चीत होती रही। बात करते २ साधु एक दम रुक गया। नाईक दरवाजे के पास गया और किलेदार अन्दर आया।

किलेदार वय में अत्यन्त वृद्ध थे। उनके मुंह तथा गालों पर जो झुर्रियां पड़ गई थीं वे केवल वृद्धावस्था के कारण ही न थीं बल्कि चिन्ता के कारण भी ये उत्पन्न हो गई थीं। किलेदार के अंदर आते ही एक लोढ़ और गद्दा एक पहरेदार ने अन्दर लाकर बिछा दिया और और वह पास ही खड़ा हो गया। किलेदार ने उसे दूर जाने की आज्ञा दी और मधुर शब्दों में साधु बाबा से कहा—आप इनके चक्कर में कहां से फंस गए?'

साधु बाबा ने उत्तर दिया—मैं ही क्या, हमारा सारा देश हमारा धर्म, समस्त गोब्राह्मण ही इनके चक्कर में आए हुए हैं महाराज फिर मेरे जैसे गरीब के बारे में तो कहना ही क्या है महाराज? इनकी तबियत में आया! मुझे ये मंदिर से पकड़ कर यहां ले आए और लाकर यहां बन्द कर दिया।' जिस समय साधु यह सब कह रहा था तो किलेदार साहब की नजर उनके मुंह पर पड़ गई थी। उन्होंने तुरन्त ही पूछा बाबाजी आपने ये गेरुए वस्त्र कब से पहिने? आपकी उम्र क्या है? आप कहां कहां घूमे हैं, आपकी स्थिति कैसी है क्या आप सारी बातें मुझे सच सच बताएंगे?'

ये प्रश्न सुनते ही साधु बाबा ने मन में सोचा मुझे जो डर था वह कहीं सच्चा तो नहीं हो रहा है। इन्होंने कहीं मुझे पहिचान तो नहीं लिया है। पर अब यदि मैं चुप रहता हूँ तो किलेदार साहब को और अधिक शंका हो जायगी। यह सोच उन्होंने धीरे से गर्दन ऊंचीकर कहा—महाराज

संसार से विरक्त हो कौन साधु बनता है यह कोई नहीं बता सकता है। मेरे माता पिता बचपन में ही मर गए। घर में दारिद्रता थी। मेरा पालन पोषण करने वाला कोई नहीं था। एक साधु ने मुझे पाला और तभी से मैं उस स्थिति में हूं।' जिस समय यह सब कह रहे थे किलेदार की दृष्टि उन पर लगी हुई थी।

इतने ही में उस ढफ का शब्द धीरे धीरे उनकी ओर आने लगा। इसी आवाज को वे बहुत देर से सुन रहे थे। धीरे धीरे मरी भाई का वह फेरा नाचते नाचते उस कोठरी की ओर आने लगा। जैसे ही साधु और मरीभाई की आंखें चार हुईं, मरीभाई की गर्दन विचित्र रूप से घूमी और वह पीछे लौट गई। उसके जाने पर शान्तता रही। किलेदार न वहां से हिल ही रहा था और न कुछ बोल ही रहा था।

अंत में गुसाईं जी ने बड़ी नम्रता से कहा—यदि आप मुझसे कुछ मालूम करने की चिन्ता में आए हैं तो वह······।'

"आपका प्रयत्न व्यर्थ होगा, यही तो आप कहना चाहते हैं।' फिर किलेदार ने पूछा—मैं जिस कार्य के लिए यहां आया हूँ उसे आप तनिक भी नहीं जानते हैं। तो आपको वे लोग बेकार पकड़ लाए हैं? ठीक है और तुम भी अपने विषय में ठीक ठीक नहीं बताना चाहते? इधर देखो।' यह कह किलेदार साधुबाबा के बिल्कुल पास पहुँचे। और उन्होंने धीरे से उनके कान में कुछ कहा।

उसे सुन साधुबाबा का चेहरा उतर गया और उन्होंने कहा—नहीं नहीं आप गलती कर रहे हैं। आप जो समझे हैं वह मैं नहीं हूँ।' बात तो उन्होंने कही पर उन शब्दों पर उनका स्वयं

विश्वास नहीं हो रहा था। किलेदार ने नाईक को इस गुसाईं पर सख्त पहरा रखने की आज्ञा दे वह वहां से चला गया।

सन्ध्या तक कुछ विशेष बात नहीं हुई। एक पहर रात बीते सूबेदार साहब जब शराब पीकर मुक्त हो रहे थे तो उन्होंने उस साधु को पकड़ बुलाया और कहा— यदि यह हरामखोर कबूल नहीं करता है तो इसके पैरों में मन मन भर की बेड़ियां डालकर इसे अंधेरी कोठरी में डाल दो।' उसी समय सूबेदार की आज्ञा से मन मन भर की बेड़ियां उस साधु के पैरों में डाल दी गई और उसे अन्धेरी कोठरी में डाल दिया। इस प्रकार साधुबाबा की स्थिति सवेरे से और अधिक खराब हो गई।

दूसरे दिन भी मरीमाता का ढफ खूब बजा। पर गुसाईंजी न तो उस ढफ को सुन सके और न मरीमाता से साक्षात कर सके। और मरीमाता को भी उनका दर्शन न हो सका। जो कुछ जानकारी उसे मिल सकती थी उसे ले वह निराश हो किले से नीचे उतरीं।

———

[१२]

कगार पर

पूना से बीजापुर जाने वाले रास्ते पर पूना से तीस बत्तीस कोस पर एक जंगल था। वहां इस समय घनी झाड़ी के बीच घना अन्धकार छाया हुआ था। इस जंगल में इतने घने पेड़ थे कि उसमें से रास्ता निकालना बहुत कठिन था। इसी जंगल में छिपकर मराठे बैठते और अचानक शाही सेना पर हमला कर उसकी धज्जियां उड़ा देते थे। इस जंगल के बीच चौथाई मील जगह अच्छी तरह साफ कर रखी गई थी। इस

समय उस स्थान पर चोर डाकू नहीं बल्कि अपने पहिचान के ही चार व्यक्ति बैठे हुए थे। पर इस समय उनके चेहरों का रंग कुछ और ही था। कोई किसी से बात नहीं कर रहा था। पर ऐसा ज्ञात हो रहा था कि उनमें से प्रत्येक कुछ न कुछ कहना चाहता है।

उनमें से एक तेजस्वी पुरुष ने अपने सहयगी की ओर देखकर कहा—महात्माओं के समान पुण्यात्मा व्यक्ति की हमारे लिए दुर्दशा हो इसके समान लज्जाजनक बात और क्या हो सकती है? कुछ न कुछ भीषण कार्य किए बगैर उन्हें छुड़ाया नहीं जा सकता। यह बात मैं जान चुका हूं।' वह आगे कुछ कहने ही वाला था कि दूर से किसी व्यक्ति के आने की आहट सुनाई दी। यह आहट पाते ही हमारा तरुण सिपाही अपनी तलवार संभाल कर आगे बढ़ा। उसे अनुमान हुआ कि कोई व्यक्ति पेड़ों के पीछे से भाग रहा है। यह देख वह उसे पकड़ने के लिए भागा। पर उस व्यक्ति ने कहा—मैं यमाजी हूँ।' यह कहता हुआ वह व्यक्ति बाहर निकल आया और उस तेजस्वी पुरुष को साष्टांग प्रणाम कर बोला—हुजूर! सरकार! आज रात को बेड़ियों समेत स्वामी जी को कगार पर से नीचे फेंकने का निर्णय किया गया है। आप जल्दी करें तो........

पर ये शब्द पूरे होने के पूर्व ही उस तेजस्वी पुरुष ने पेड़ से घोड़ा खोला और कहा—क्या करना है यह तो तुम्हें बताता हूं। अरे ला...' पर ये शब्द पूरे होने के पर्व ही चारों सिपाही हवा की तरह घोड़े फेंकते आगे बढ़े।

जिस समय यह घटना हो रही थी उस समय एक घास वाली और एक बूढ़ा घास वाला दो बड़े बड़े घास के गट्ठे

लेकर पुरंदरगढ़ के नीचे के गांव में पहुंचे और मार्ग में आने जाने वाले हर किसी से घास का बोझ लेने के लिए मिन्नतें करने लगे। आखिर जब किसी ने घास के बोझ नहीं लिए और अन्धेरा बढ़ने लगा तो बुढ़िया उस बुढ़े से बोली—अब चलो गढ़ पर चलें वहां घुड़साल में चारे की बहुत आवश्यकता है वहीं जाकर चारा बचेंगे।'

ये शब्द जैसे ही बूढ़ी के मुंह से निकले वैसे ही उस बुड्ढे ने सिर पर का बोझ नीचे फेंक दिया और चिढ़कर बोला जा! जा! रांड़ ने चार गांव मुझे बंदर की तरह नचाया और अब कहती है गढ़ पर चलो।'

बस दोनों में लड़ाई होने लगी। आखिर वहां लोग जमा हो गए। बुढ़िया अपना बोझ सिर से नहीं उतार रही थी और कह रहीं थीं हम गढ़ पर जाएंगे। और बूढ़ा इस बात पर अड़ा था कि कुछ रोटियों पर वह घास का गट्टा पटेल के यहां ही डाल देगा। दोनों ही अपनी अपनी जिद पर अड़े थे। आखिर बुढ़िया यह कह कर रवाना हुई—मैं अकेली ही जाती हूं।' बूढ़ा जगह पर बैठ गया। बुढ़िया ने गढ़ की घाटी चढ़ना शुरू किया। इतने में गढ़ के पहरेदार ने उसे डांटा।

पर वह औरत बड़ी जबरदस्त थी। उसने होली की भाषा में जो बुरी बुरी गालियां दीं उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। पर स्त्री के शरीर को हाथ कौन लगाता। आखिर उस सिपाही ने कहा—जाने भी दो आखिर वहां से जूतियां खाकर लौट ही आएगी।' पर बुढ़िया हर डेवढ़ी पर आगे ही बढ़ती गई।

बुढ़िया के जाने के बाद वह बूढ़ा पटेल से बोला—पटेल बाबा! अब मेरे घास का बोझ खरीद कर पेट के लिए टुकड़ा और रात काटने के लिए जरा सी जगह पड़ रहने को दे दो।

इस प्रकार कह उसने पोहट में घास का गठ्ठा डाल घुड़साल और पोहट के बीच अपने सोने की जगह बनाई।

उधर वह बुढ़िया हर प्रकार से मिन्नत खुशामद करते हुई गढ़ के प्रमुख द्वार पर पहुंची। और वहां भी मिन्नतें कर अन्दर घुसी और सीधी घुड़साल की ओर गई। वहां जो सहीस थे उनसे उसने कहा—मेरी यह घास खरीदकर मुझे पेट भरने के लिए रोटी का टुकड़ा देदो। आखिर अपने पति से अधिक बेशर्मी से उसने रात पड़ रहने का ठिकाना बना लिया।

धीरे धीरे रात बढ़ने लगी। इसी दिन आधी रात को श्रीधर स्वामी को कगार पर से नीचे फेंक कर संसार से विदा करने का निश्चय हुआ था। आधी रात का समय धीरे धीरे नज़दीक आने लगा। इसी समय किलेदार और उनके साथ एक दो व्यक्ति स्वामी जी की कोठरी की ओर आए। किलेदार अत्यन्त उदास था। उसने अपने साथ के व्यक्ति से कहा—कुशाबा! अब जो कुछ कहना हो तुही कह अब मुझसे पर आगे वे कुछ भी न बोल सके।

इनके अन्दर आते ही स्वामी जी ने अपनी दृष्टि उनकी ओर घुमाई। कुशाबा ने तुरन्त ही कहा—स्वामी जी अब प्राण जाने का समय आ गया है। अब भी कुछ कहोगे या नहीं नहीं तो बेकार ही जान जायगी ओर तो कुछ न होगा।'

स्वामी जी टस से मस न हुए। आखिर जाते समय किले-दार से रहा न गया। उन्होंने कहा—फिर क्या? अब प्राणों की पर्वाह भी न करोगे? यह खान की आज्ञा है इसमें तनिक भी फ़ेर बदल नही हो सकता। इसलिए अन्तिमबार कहता हूँ

और एक दो दिन की मोहलत मांगता हूं। मैं उनसे कहूंगा कि कल वह सब कुछ बताएगा।

स्वामी जी शीघ्र ही उनकी ओर मुंह कर बोले—जो आज कह रहा हूँ वही वहां भी कहूंगा। मेरे पास बताने को कुछ भी नहीं है और मौत का ही तो डर है। आज तक मुझ जैसे न जाने कितने मर चुके हैं। यह कह उन्होंने अपना मुंह जोर से भींच लिया मानो उसे किसी ने सी दिया हो। आखिर किलेदार और कुशावा निराश हो लौट गए!

थोड़ी देर बाद चार पांच आदमियों के साथ खानसाहब किलेदार को लेकर आए। और स्वामी जी की कोठरी के बाहर खड़े हुए। खानसाहब की आज्ञा से स्वामी जी को कोठरी के बाहर निकाला गया। खान साहब जीभर कर गालियां दे रहे थे। दो तीन आदमियों ने उन्हें पकड़ा और उन्हें कगार की ओर ले चले। पर स्वामी जी के चेहरे पर तनिक भी फरक न हुआ। वे केवल मुंह से यही कह रहे थे—'जय रघुबीर' 'गुरू महाराज की जय'।

———

[१३]
मुक्ति

कगार से दो हाथ अंतर पर एकबार फिर खानसाहब ने उनके पास जाकर कहा—बता! बता! नहीं तो आज तू यहां से जीता न जायगा।'

स्वामीजी ने कुछ भी उत्तर न दिया। किलेदार खान के पास ही खड़ा था। आखिर उससे न रहा गया और उसने सर्जेखान को कुर्निसात कर कहा—हजरत इस फकीर को आप बेकार सज़ा

दे रहे हैं। हम सभी तो इससे पूछ चुके हैं। पर स्वामीजी ने कुछ भीं नहीं बताया। आज तक साधु सन्तों की हत्या कभी नहीं हुई है इस कारण मैं अर्ज करता हूँ कि आज भी साधु की हत्या न होनी चाहिए। यह साधु सच्चा साधु है। इसके बाद आपको अख्तियार है......इसके आगे साधु के मुंह से एक भी शब्द न निकला।

सर्जेखान ने किलेदार की बात की अवहेलना की और कहा-तुम सब एक हो। पर मैं तुम लोगों के इस झांसे में नहीं आऊंगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि साधु को सारी बातें मालूम हैं। इतना ही नहीं बल्कि इसे उस मन्दिर में पहरे के लिए रखा है। यदि यह व्यक्ति सच्चा साधु होता तो इसकी गुबड़ी में गुप्ती क्यों होती। तुम सब इसे छोड़ने को तैयार हो गए हैं। तुम सबके रोम रोम में नमकहरामी भरी हुई हैं।'

ये तीर से चुभने वाले शब्द सुनकर किलेदार जलभुन कर खाक हो गया। उसका क्रोध आपे से बाहर हो गया। उसने कुशाबा के हाथ से तलवार छीन ली और वह एकदम सर्जेखान पर दौड़ा। यदि एक मिनट की भी देर होती तो सर्जेखान की मृत्यु हो जाती। पर शिवदेवराव सरदार ने आगे बढ़कर बूढ़े को पीछे खींच लिया।

बूढ़ा किलेदार उस साधु की ओर घूमकर बोला—भलेमानस अब तुम नहीं जी सकते। आज कितने वर्षों बाद तू दिखाई दिया। ऐसा मालूम होता था कि तू बच जायगा......पर चिन्ता नहीं। आनन्द से मरो। सत्य के लिए यदि तू इस प्रकार मरता है तो भी तू अमर है। और हम मरने तक भी इन बेईमानों की नौकरी हलाल करते हैं तो भी 'नमकहराम' कहलाते हैं। 'एक या...' पर इसके आगे उनके मुंह से क्या शब्द

निकले वे सुनाई नहीं दिए। कारण शिवदेवराव सरदार तथा कुशाबा उन्हें वहां से हटा ले गए।

इस ओर सर्जेखान का भी क्रोध बढ़ रहा था। इसी कारण उसने साधुबाबा को मौत की सजा देने का निश्चय किया। इस कारण उसने आज्ञा दी कि मोटी मोटी जंजीरें लाकर साधुबाबा के हाथ पैर जकड़ दिए जायं। और जब साधु को जकड़ा जा चुका तो उसने एक बार फिर प्रश्न किया—यदि तुझे कुछ भी मालूम हो तो सचसच बतादे। यदि तूने नहीं बताया तो तुझे तो जहन्नुम भेजूंगा ही और मुझे तुम्हारे उस मंदिर के विषय में भी शंका है उसे भी खुदवा डालूंगा।'

इस पर भी उस साधु ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। उसकी धमकी का कुछ भी परिणाम होता न देख उसने आज्ञा दी—जाने दो साले को फेंक दो।'

पर इतने ही में पीछे की ओर किले में जोरों का शोर सुनाई दिया। 'यह क्या' कह उन्होंने पीछे की ओर जो घूमकर देखा तो घुड़साल की गंजी तथा उ.के आसपास के छप्परों में आग लगी दिखाई दी। इतना ही नहीं किले के नीचे के गांव में पाटिल के घर गंजी तथा पांच दस मकानों में भी आग लगी दिखाई दी। आग लगने से चारों ओर हाहाकार मचना था। सभी इधर उधर भागने लगे। उस समय की सैनिक व्यवस्था आज कल के समान व्यवस्थित नहीं थी। इस कारण कुछ तो किले की आग बुझाने तथा कुछ गांव की आग बुझाने भागे। सब दरवाजे खुले ही रह गए।

इस आग के गोलमाल के साथ ही उधर कगार के पास मशालों का प्रकाश दिखाई दिया और साथ ही बीस पच्चीस व्यक्ति ऊपर चढ़ते दिखाई दिए। खान की दृष्टि उस ओर गई

और वह चिल्लाया—'तोबा! तोबा यह क्या! यह क्या!' अभी वह शब्द पूरे भी न कर पाए थे कि वे लोग ऊपर भाग गए और उनमें से ४ व्यक्तियों ने उन्हें घेर लिया। और चार-पांच ब्यक्तियों ने साधु की जंजीरें और बेड़ियां तोड़नी शुरू करदीं।

वे लोग जानते थे कि सब लोग आग बुझाने में मस्त हैं इस कारण इधर कोई नहीं आएगा। उन्होंने बिना पीड़ा के साधुबाबा की बेड़ियां खोलीं और उन्हें मुक्त कर दिया। उन्हें मुक्त करने के पश्चात् उन सबने उनके चरण छूए। इसके बाद एक भीमकाय व्यक्ति ने उन्हें कन्धे पर उठा लिया और दो चार व्यक्ति उनकी रक्षा के लिए साथ हो लिए। और जिस मार्ग से वे आए थे इसी मार्ग से नीचे उतरने लगे। बाकी लोगों ने खान को नीचे ढकेलने को लाकर कगार पर खड़ा किया पर प्राणों का मोह बहुत होता है इस कारण खान ने दयायाचना शुरू की।

इस पर एक ठिगने पर तेजस्वी पुरुष ने एकदम आगे होकर बाकी लोगों से कहा—गाफिल व्यक्ति को पकड़ कर मारना हिन्दुओं का ध्येय नहीं है। जाओ तुम्हें जीवन दान दिया।

उस व्यक्ति के मुंह से ये शब्द निकलते ही बाकी लोगों ने खान को पीछे खींचा। उन्होंने खान को उन्हीं जंजीरों से जकड़ दिया जिससे स्वामी जी को बांधा गया था। उसके बाद 'हर हर महादेव' माता भवानी की जय' के नारे लगाते हुए जिस मार्ग से वे आए थे उसी मार्ग से वे वापस लौट गए।

सर्जेखां को जंजीरों से जकड़ने के बाद उसका क्रोध और अधिक बढ़ गया। और उसका वह निर्बल का क्रोध उस समय देखने योग्य था। इधर किलेदार साधु को छुड़ाने का प्रयत्न निरर्थक हुआ देख अपने कमरे में जा पलंग पर लेट

गया । पर उसका सारा ध्यान उस स्वामी की ओर उस कगार की ओर था । आखिर उससे न रहा गया और वह एक दम उठकर उधर जाने को तैयार हुआ । वह उठकर उधर चल दिया । पर वहां पहुंच सर्जेखांन को जंजीरों में बधा छटपटाता देख उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ । इतने में खान साहब के ये शब्द उसने सुने । 'ओह दुश्मन इस बार लोग तुझे छुड़ा ले गए ये शब्द सुनते ही किलेदार को अत्यन्त आनन्द हुआ ।

उन्होंने खान के पास जाकर कहा—यह क्या हुआ ? यह यह कैसी अजब बात है ?'

इस प्रश्न से खान को लज्जित होना स्वाभाविक ही था। किलेदार ने जोर जोर से चिल्लाकर लोगों को जमा किया । और खान साहब को मुक्त किया खान ने छूटते ही अनाप सनाप बकना शुरू किया। और उस हनूमान के मन्दिर को जमीन दोस्त करने का निश्चय किया ; पर शिवदेवराव तथा किलेदार उसके कहने का विरोध करने लगे।

सर्जेखान बहुत चालाक और षड़यन्त्रकारी था। उसने सारी परिस्थिति का विचार कर सोचा—जो कुछ हुआ है उसके विषय में बढ़ा चढ़ाकर सारी बातें हजरत से कहूंगा और एक सेना की टुकड़ी लेकर लौटूंगा तथा इन सब को ठीक कर दूंगा । यह सोच वह शिवदेवराव को ले गढ़ से चला गया ।

इधर स्वामीजी को छुड़ाकर लोग नाचते कूदते किले से नीचे उतरे। वहां घनी झाड़ी में खड़े घोड़ों पर पांचों-वीर सवार हुए और यमाजी की झोंपड़ी के पास आए तथा वहां से गुफा के द्वार से वे सुरंग में घुस भवानी मन्दिर में पहुंचे।

स्वामी जी ने सारी बातें बताईं और कहा—दूसरे दिन मुझे यह आशा न थी कि तुम लोग मुझे वहां से छुड़ा ला सकोगे। पहिले दिन यमाजी मरी माता का रूप बनाकर मेरे यहां आया था और मैंने उसे और उसने मुझे देखा था। उस समय मुझे कुछ आशा हुई थी ! पर जब दूसरे दिन मुझे अन्धेरी कोठरी में बन्द किया तो मैं निराश हो चुका था।

इतने में तानाजी स्वामी की ओर देखकर बोला—स्वामी महाराज। शिवाजी राजा यदि तरकीब न निकालते तो आज बड़ी भारी विपत्ति आती इसमें शंका नहीं थी। शिवाजी राजा ने येसाजी से कहा— तूने अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं की इस लिए अब जैसा मैं कहता हूं करो। तुम और यमाजी घसियारे का भेस बनाकर शाम को किले के नीचे वाले गांव में जाएं और तू किले पर जा। और रात को दोनों ही दोनों स्थानों में आग लगादो। मैं, तानाजी और ये हमारे नये साथी किले की पिछली ओर बैठते हैं। और ज्योंही तुम्हारी आग की ज्वाला दिखाई देगी वैसे ही सारा काम हम कर लौट आएंगे।

इस प्रकार इस विलक्षण युक्ति से यह काम पूरा हुआ। इस प्रकार आनन्द मनाते हुए उन्होंने तनिक समय बिताया। उसके बाद स्वामीजी ने गम्भीर मुद्रा कर कहा—अब अगले विचार कर हमारी योजना निर्भर करती है। आज मुसलमानों के हाथ में कितने ही गढ़ है। उनमें से दो चार किले हमें लेने ही चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया तो हम अगला कार्य पूरा नहीं कर सकेंगे।

इसके बाद सब चुप होगए। और शिवाजी ने एक के बाद एक अनेक किलों के विषय में विचार किया। पर वे कोई बात निश्चित न कर सके। पर एक भी बात निश्चित न होसकी।

आखिर स्वामीजी ने उसकी पीठ थपथपाकर कहा—क्या शिव कोई बात निश्चित न हो सकी है ? मेरे दिल में एक किले की बात सूझी है पर उस किले का मालिक यहां बैठा है। उन्हें उस किले को जीतने का विचार कहां तक पसन्द होगा पता नहीं।'

यह सुनते ही उस वीर सैनिक ने शिवाजी तथा स्वामीजी की ओर घूमकर कहा—मैं भी यही कहने वाला था। आप यदि उसे जीतने का विचार करें तो मिनटों में काम फतह होगा।'

अभी यह बात हो ही रही थी कि गुफा के मुंह पर पहरा देने वाले व्यक्ति ने तानाजी के कान में कुछ कहा तानाजी वहां से आज्ञा ले गुफा के द्वार पर गया। वहां एक साधु प्रतिज्ञा में खड़ा था उसकी बात सुनकर वह तुरन्त ही अन्दर गया और स्वामीजी को एक ओर ले जाकर सारा मामला बताया।

—

[१४]

अत्याचार की पराकाष्टा

स्वामीजी को जो गुप्त समाचार बताया गया था उसे स्वामी जी ने उस नये वीर सैनिक के कान में कह दिया। उसे उसे सुनते ही अत्यन्त सन्तप्त हो वह बोला—मुझे यह पहिले ही से मालूम था और मैंने उन्हें हजार बार यह बात कह भी दी थी। अब भी उनकी आंखें खुल गईं इतना भी अच्छा हुआ। उन्हें पकड़ कर लोग बीजापुर ले गए हैं और उनके साथ ही मेरी स्त्री को भी पकड़ ले गए हैं ? उनके साथ उसकी भी बेइज्जती की। क्या स्वामीजी आप बोलते क्यों नहीं हैं आपकी

इस चुप्पी से मुझे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। ठीक है। मैं अब अपना यह कर्तव्य समझता हूँ कि इसी समय मैं जाकर उन्हें छुड़ालूं या फिर इस कार्य में अपने प्राण गमा दूं।' वह लगातार बोलते ही जारहा था।

उसकी यह बातें सुन स्वामीजी तानाजी या किसी और व्यक्ति ने उन्हें तनिक भी सान्त्वना देने का प्रयत्न नहीं किया कारण वे समझ रहे थे कि इस समाचार को सुनकर उसे जो दुख हुआ है उसे इस प्रकार कम होने के बाद ही कुछ कहना या सान्त्वना देना उचित होगा। पर अब वह विल्कुल हताश हो अपनी जान पर खेलने को तैयार देख स्वामीजी ने कहा—पागल ! तुम्हारी स्त्री चतुर है। वह एक दिन पूर्व ही वहां से कहीं चली गई है पर अभी तक यह पता नहीं चल सका है कि वह कहां गई है। पर शिवाजी की ओर से तुम्हें यह आश्वासन या वचन दिलाता हूं कि तीन दिन के अन्दर उसे हम ढूंढ निकालेंगे। तुम घबराओ नहीं। मराठे का लड़का इस प्रकार घबराता नहीं।' यह सुन उस सैनिक को तनिक शान्ति हुई और वे सभी मिलकर आगे क्या करना चाहिए इस बात पर विचार करने लगे।

सुलतानगढ़ के किलेदार को उसके पद से हटाकर उसे पकड़ ले जाने के लिए रणदुल्लाखां सुलतानगढ़ की ओर जा रहा था। पाठकों को यह स्मरण होगा कि उस म्हसोवा के मन्दिर के सामने खान के तम्बू में सुभान एक और मराठा युवक को देख आश्चर्य चकित हुआ था और कुछ घबरा भी गया था। और वह तरुण भी सुभान को देख अपना गाम्भीर्य खोने लगा था और वह कुछ हक्का वक्का होगया। यह बात खान साहब को मालूम हो चुकी थी वे बड़े ध्यान से उस तरुण पुरुष

की ओर और बीच बीच में सुभान की ओर भी देखते जा रहे थे । पर अंत में उसे यह बात उचित न मालूम हुई कि इस प्रकार उस पुरुष की ओर घूर कर देखा जाय हंसकर उसनें पूछा—आप कहां रहते हैं? इधर कहां जारहे हैं?' इत्यादि

इस पर उस व्यक्ति ने कहा—सरदार साहब मैं साधारण मनुष्य अपनी स्त्री को लेकर दूसरे गांव को जा रहा था और आराम करने के लिए इस मन्दिर में हम आ बैठे थे। उसी समय आपके आदमियों ने आकर कहा कि आपके आने तक हमें वहां रुकना होगा और बाद में हम जा सकेंगे। अब आप हमें अपने रास्ते जाने की आज्ञा देंगे ऐसी मैं आशा करता हूं।'

उस मराठा तरुण के ये शब्द सुन खान साहब मुस्कराए। उन्हें इन बातों पर तनिक भी विश्वास नहीं हो रहा था पर यह बात उन्होंने तनिक भी नहीं दर्शाई और उन्होंने तनिक मुस्कुराकर पूछा —यदि आप मामूली आदमी है तो आप मामूली आदमी रहे, और वह भी मेरे मिलने पर, यह मुझे अच्छा नहीं मालूम हो रहा है। अब आप हमेशा मेरे साथ रहें। मैं आपकी और बादशाह की मुलाकात करा दूंगा और आपको सरदारी दिलवाऊंगा।'

खान साहब की वह बात सुनकर वह तरुण सरदार तनिक घबराया और अत्यन्त बारीक आवाज में बोला—मुझे सरदारी नहीं चाहिए ? सरदारी पाने की मुझ में योग्यता नहीं है।' इत्यादि इत्यादि बातें उसनें कहीं। पर उस कहने का कुछ भी उपयोग न हुआ। उसे यह ज्ञात होगया कि खान साहब यह जो सरदारी जबरदस्ती लाद रहे हैं उसे मानना ही पड़ेगा ! इस कारण फिर उसने कुछ भी नहीं कहा। उसके कुछ न कहने के कारण खान साहब ने समझ लिया कि उसे खान साहब

की आज्ञा स्वीकार है इस कारण उन्होंने आज्ञा दी कि उनकी ठीक से व्यवस्था रखी जाय तथा सुभान को उसकी सेवा के लिए नियुक्त किया गया । इसके बाद उन्होंने आज्ञा दी कि वे अगले पड़ाव पर फिर उनके सामने हाजिर किए जायं।

रणदुल्लाखान ने म्हसोबा के मन्दिर के सामने से पड़ाव उठाकर सीधा सुल्तानगड़ पर ही जाकर रोका। उनके गढ़ पर जाते ही किलेदार ने उसका स्वागत किया। खान स्वभाव का अच्छा तथा गुणग्राहक था। किलेदार के सामने आते ही उन्होंने आगे बढ़कर कहा—किलेदार साहब मैं हुक्म का ताबेदार हूँ इस कारण आज्ञानुसार यहां आया हूं। पर आपका किसी प्रकार भी अपमान होगा इस विषय में तनिक भी शंका न करना। आज्ञानुसार मेरे साथ चलो। आपके पीछे यहां किसी को भी कष्ट न होगा इसकी व्यवस्था मैं करता हूं।'

उसके इस प्रकार सम्मान भरे शब्द सुनकर किलेदार साहब को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उन्हें यह स्वप्न में भी ध्यान न था कि उन्हें गिरफ्तार करने आया मुसलमान सरदार उनके साथ इतनी भलमनसाहत का व्यवहार कर सकता है, खान की इच्छा किले पर रहने की इच्छा नहीं थी इस कारण उसने अपना सारा लवाजमा नीचे ही रखा था। जिस मराठा सरदार पर खान की महरबानी थी उसे किले पर चढ़ने के लिए खान ने बहुत आग्रह किया पर उसने यह स्वीकार नहीं किया। इसलिए खान ने कहा--जो कुछ करना है वह मैं जल्दी से करके आता हूं।' यह कह वह किले पर गया।

इधर नीचे तम्बू में वह नया तरुण मराठा सरदार अत्यन्त विचारमग्न हो उधर से इधर और इधर से उधर घूम रहा था। वह सोच रहा था—करने कुछ गए और हुआ कुछ और।

ऐसा संकट कभी किसी पर न आया होगा।' पर उस पर क्या संकट आया था उसे वही जाने।

इधर रणदुल्ला खान तथा किलेदार के बीच जो कुछ हुआ उससे दूसरे लोगों को ऐसा मालूम हुआ कि किलेदार साहब कुछ दिन के लिए बीजापुर जारहे हैं इसके सिवाय और किसी प्रकार के क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं हो रहे हैं। नीचे आते ही खान साहब ने नये सरदार को बुलवा भेजा और कहा—क्यों सरदार साहब आप तो किले पर आए नहीं इस कारण आपको सारी बातें बता देना आवश्यक है इसीलिए मैंने आपको कष्ट दिया।' बाद में खान साहब ने किले पर जो कुछ हुआ उसे बताने के पश्चात कुछ इधर उधर की बातें कीं और सरदार साहब अपने तंबू में गए। उस समय रात काफी बीत चुकी थी। अहमद ने अन्दर आकर सूचना दी कि खाना तैयार है। पर खान साहब ने बताया कि उन्हें तनिक भी भूख नहीं है। यह कह वे कपड़े उतार कर पलंग पर जा लेटे पर उन्हें किसी प्रकार भी नींद नहीं आ रही थी। वे बड़ी देर निद्रादेवी का आह्वान करते रहे। वे पलंग से तंबू के दरवाजे तक और तम्बू से पलंग तक चक्कर काटते रहे। बाद में विचारमग्न हो वे एक स्थान पर तटस्थ हो खड़े हो गए। इतने में किसी व्यक्ति ने उनके पास आकर कहा—हजरत आज आपका यह क्या हाल है?

इस प्रकार के शब्द उनके कानों में पड़ते ही खान साहब ने चौंक कर कहा—अहमद क्या तू मुझ पर जासूसी करता है? तू अपना तंबू छोड़कर यहां क्यों आया?'

अहमद ने घबरा कर कहा—हजरत मैं सहज ही अपने तम्बू से बाहर निकला था तो मुझे आपकी आहट सुनाई दी

मैंने आपके मन की बात समझी नहीं है यह बात नहीं है। गरीब परवर आप उस नये मराठा सरदार से प्रेम करने लगे हैं। पर जो बात आपके हाथ में है उसके लिए इतना विचार और बेचैनी क्यों ? आपकी आज्ञा हो तो मैं······' यह सुन खान इतना क्रोधित हुआ कि उसके कारण उसकी श्रवणशक्ति थोड़े समय को समाप्त होगई। और अहमद ने आगे क्या कहा उसे वे न सुन सके।

---

(१५)
बीजापुर जाने पर

खान क्रोध से पागल हो रहा था उसके मुंह से पूरे शब्द भी निकल रहे थे। इस प्रकार एक मिनट चुप रहने के बाद उसने कहा अहमद तेरे बाप से लेकर सभी लोग मेरे यहां नौकरी करते रहे हैं यह बात ध्यान में रख कर ही आज मैं तुझ पर रहम खा रहा हूँ। जाओ यहां से निकल जाओ और इस विषय में तुमने मुझसे या किसी और से यदि फिर कुछ कहा तो जीता गाड़ दूंगा यह बात समझ रखना। मालिक की यह बात सुनकर अहमद तनिक इधर उधर कर वहां से रवाना हुआ। उसके जाने के बाद खान कुछ अधिक अस्वस्थ हो सोचने लगा—आज तक मैं ऐसी बातों को केवल कल्पनामात्र समझता था। केवल नजर मिलते ही ऐसी स्थिति !···पर नहीं यह रणदुल्लाखां ऐसा नीच कभी नहीं होगा। पर इस बात को अन्त तक निभाना होगा। इस कारण अब मैं यह न दर्शाऊंगा कि मुझे इस विषय में कुछ और अधिक मालूम है पर यदि इसके बाद मेरे दिल में मेरे मस्तिष्क में बुरे विचार

उत्पन्न हुए तो दूसरों के लिए उठाया शस्त्र मैं अपने ऊपर ही व्यवहार करूंगा। इसमें तनिक भी न हिचकिचाऊंगा।' इस निश्चय से उसे अनुभव हुआ मानों उस पर का एक बड़ा भारी बोझ उठ गया हो। क्योंकि नींद लेने के प्रयत्न में सवेरे की ठंडी ठंडी हवा ने सहायता दी और उसे जल्दी ही गहरी नींद आगई।

पहिले दिन जिस प्रकार निश्चय हुआ था उस प्रकार वह किलेदार को लेकर रवाना हुआ, मार्ग में किसी प्रकार की दुर्घटना न हुई और वे सब इस प्रकार सुरक्षित बीजापुर जा पहुंचे। बीजापुर पहुंचने पर रणदुल्लाखां ने अपने दोस्त के रहने को बिल्कुल अलग व्यवस्था करदी। लेकिन सरदार साहब से बातें करने के लिए अनेक बार खान साहब उनके निवास स्थान पर आते। उसी प्रकार खान साहब ने किलेदार को भी बहुत अच्छी तरह रखा उन्होंने किलेदार को लाने—नहीं उसे गिरफ्तार कर लाने की सूचना हजरत को दी। रणदुल्लाखां स्वभाव से ही सज्जन था और उस समय के मुसलमानों में अपवाद समझा जाता था। उसे दरबार के अनेक सरदारों की बातें पसन्द नहीं थीं। वह सदा यही सोचता था कि यदि वह दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करेगा तो वह स्वयं अपने पैरों पर पत्थर मार लेगा। और इसके अलावा आज जिस ओहदे पर वह है उससे लाभ उठाकर वह जो कुछ थोड़ा बहुत लोगों का भला कर सकता है वह भी न कर सकेगा। इसी कारण वह दूसरों के कामों में दखल नहीं देता था।

इसी कारण मुरार जगदेव और रणदुल्लाखां की बात का असर बादशाह पर अधिक होता था। सैय्यदुल्ला शुरू में एक सरदार के खानदान में खवास था। पर समय के फेर से

वह बादशाह का खवास हुआ और शीघ्र ही उसे सरदारी मिल गई और वह सैय्यदुल्लाखां बन गया। वह हमेशा बादशाह के मन में यही बात बैठाने का प्रयत्न करता था कि मुरार जगदेव, शहाजीराजा, तथा रणदुल्लाखां आदि बीजापुर का अनिष्ट करना चाहते हैं। और इसी कारण शहाजीराजा का लड़का विद्रोही हो गया है और सुलतानगढ़ के किलेदार का भी लड़का बागी हो गया है, सैय्यदुल्लाखां चाहता था कि सुल्तानगढ़ पर जाकर रंगराव अप्पा तथा 'किसी और व्यक्ति' को पकड़ने का अवसर उसे मिले। इस मामले में सर्फोजी तथा प्यारेखां उसके मदद करने वाले थे। सुल्तानगढ़ के किलेदार के साथ सूर्याजी के पिता धारगांव के देशमुख को पकड़ लाने का षड़यन्त्र भी उसने रचा था, उसने कहा था कि सूर्याजी नानासाहब की तरह विद्रोही होगया है और वे दोनों मिलकर बादशाह के विरुद्ध विद्रोह करेंगे। पर वास्तविकता यह थी वह इस प्रकार अपने साथी की इच्छा पूरी करना चाहता था। पर ऐन मौके पर हजरत ने रणदुल्लाखां को उधर भेजा। बीजापुर दरबार में मुरार जगदेवराव की काफी चलती थी। वह बहुत दिन का पुराना ईमानदार नौकर होने के कारण उसकी इच्छा के विरुद्ध कार्य करना बादशाह के लिए भी कठिन हो जाता था। इस प्रकार अच्छे कामों में रणदुल्लाखां और मुरार जगदेव काम आते थे और निकृष्ट कामों में सादुल्लाखां इस कारण इन तीनों के बीच फंस जाने से बादशाह की स्थिति बहुत विकट होगई थी। उसे स्वयं अपनी बुद्धि कम थी इस कारण वह यह नहीं समझ पाता था कि किसकी बात मानी जाय।

आखिर सासवड़ सुल्तानगढ़ तथा धारगांव भेजने का निश्चय किया गया। पर किसे किधर भेजा जाय यह निश्चित न हो सका। आखिर सैय्यदुल्लाखां की सलाह से वे आदमी ढूंढ निकाले गए। सर्जेखां को शिवाजी के गांव भेजना निश्चित किया गया सुल्तानगढ़ पर सैय्यदुल्लाखां स्वयं जाने वाला था और प्यारेखां को धारगांव के देशमुख के महल की ओर भेजा गया। पर शहाजीराजा को बेकार कष्ट न दिया जाय, कारण यह बात राजनैतिक न होगी इस कारण अन्त में यह निश्चय हुआ कि मुरार जगदेव उधर जाएं। और सर्जेखां केवल उनके साथ रहे। सैय्यदुल्लाखां को यह बात न जँची। वह सुल्तानगढ़ भी न जा सका और वहां भी मुरार जगदेव का ही आदमी भेजा गया।

जब सैय्यदुल्ला को मालूम हुआ कि रणदुल्लाखां किलेदार को गिरफ्तार कर लाया है और उसके साथ उसके लड़के की स्त्री भी है। अब वह सोचने लगा कि किस प्रकार रणदुल्लाखां को जल्दी से जल्दी नष्टकर उसे प्राप्त करूं। सर्जेखान जब अपना कार्य कर आया तो उसने सैय्यदुल्लाखां को जैसी घटना हुई थी वैसी न बताकर उसमें चाहे जैसे नमक मिर्च मिलाकर बताया। सैयादुल्लाखां यही चाहता था। मुरार जी ने जिस शिवदेवराव को भेजा था उसने किस प्रकार शत्रु से मिलकर कितनी नीचता की, उसने सर्जेखान के साथ विश्वासघात किया इत्यादि सारी बातें उसने उचित मौका देख बादशाह से कहीं। इन सब बातों का बादशाह पर बुरा असर हुआ और इस प्रकार बिष का बीजारोपण किया गया।

———

(१६)

कुछ और लोग

वीजापुर में वैभव के उच्चशिखर पर चढ़कर वहां की परिस्थिति देखने और वहां का आनन्द लूटने के पूर्व हम पाठकों को धारगांव से कुछ मील की दूरी पर उस बरगद के पेड़ के नीचे ले जाना चाहते हैं। पाठकों को यह याद होगा कि इस झोपड़ी में रहने वाले एक बूढ़े को सांवलिया ने सूचना दी और उस बूढ़े ने एक काले व्यक्ति को भेजा। और उस व्यक्ति ने सूर्याजी की स्त्री तथा पुत्र को अग्नि के मुख में से छुड़ाया। उस घटना के पांच छः दिन बाद हम वहां पहुंच रहे हैं।

इस समय वह बूढ़ा एक दम अकेला है। वह किसी की प्रतिज्ञा में इधर से उधर चक्कर काट रहा है और चक्कर काटते काटते वह अपने आप बड़बड़ाया—तकदीर का कैसा चक्कर है। चार वर्ष पूर्व मेरी क्या स्थिति थी और आज क्या स्थिति है। जिस दुष्ट ने मेरी यह स्थिति की है उसका खून पिऊंगा तभी हम दोनों रहेंगे।' यह प्रतिज्ञा पूरी होने योग्य कार्य हमसे आज तक कुछ भी नहीं बन पड़ा है । यह लड़की सुख से थी। उसका भी सुख आज मिट्टी में मिल गया । अब यह किसी प्रकार भी न बचेगी ? मुझे तो इसकी तनिक भी आशा नहीं है। पर अभी तक क्यों नहीं आया ?' अभी वह यह सोच ही रहा था कि वह काला व्यक्ति दरवाजे के पास आ पहुंचा।

उसे देखते ही बूढ़े ने पूछा 'कुछ आशा है ?'

उस काले स्याह व्यक्ति ने उत्तर दिया 'मैं आपसे सच कह रहा हूँ कि आप समझ रहे हैं इतना निराश होने का कारण नहीं है। और यदि ऐसा कारण हो भी तो बाबा यदि आप ही इस प्रकार हिम्मत छोड़ देंगे तो फिर मैं क्या करूंगा। इसलिये

आप यह दुख और चिन्ता करना छोड़दें। हम दिन रात एक कर सारे प्रयत्न कर उन्हें बचाएंगे।' यह कह उसने उस वृद्ध का हाथ पकड़ लिया और वे जंगल में एक दूसरी झोंपड़ी के पास आए। उन दोनों की आहट पाते ही एक बालक झोपड़ी से बाहर आया। उसे देखते ही उस तरुण व्यक्ति ने पूछा—सांवलिया कुछ विशेष बात तो नहीं हुई है ?'

सांवलिया ने उत्तर दिया—नहीं अब वह उतनी बकबक नहीं कर रही है हां बच्चा पता नहीं किस प्रकार कर रहा है।' इतने ही में वे दोनों झोंपड़ी में घुसे। उन्होंने देखा कि बच्चे की उल्टी सांस चलने लगी है। उन्हें विश्वास होगया कि वह बच्चा अब नहीं बचेगा। पास ही उसकी मां भी बेहोश पड़ी थी। उसकी भी नाड़ी ठीक नहीं थी और एक ओर कोने में एक और व्यक्ति बुरी दशा में पड़ा था। बूढ़े ने तुरन्त बच्चे को उठा लिया और उसे ले घूमने लगा। पर वह कुछ क्षणों में ही धम से नीचे बैठ गया। लड़के ने आखिरी सांस ली और उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

बूढ़े को पराकाष्ठा का दुख हुआ वह रोते हुए बोला—भगवान ! हे भगवान ! मुझे और न जाने क्या क्या देखने के लिए तूने जीवित रखा है। पर यदि तूने मुझे जीवित ही रखा है तो मेरी प्रतिज्ञा पूरी कर। बस मेरा जन्म सार्थक हो जायगा··· पर इसकी क्या आशा है।

बूढ़े के ये धीरे धीरे कहे शब्द सुनकर उस तरुण ने एकदम कहा—बाबा, यदि मैं तुम्हारा बीज, पक्के मराठे का बीज हूँ तो प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज से तीन मास के अन्दर उस दुष्ट की धज्जियां उड़ाकर उसका सिर काट लाकर तुम्हें साष्टांग प्रणाम करूंगा। अब मैं इस बालक का शव लेकर निकलूंगा तो अपनी

प्रतिज्ञा पूरी कर ही लौटूंगा।' यह कह उसने उस बालक का प्रेत उठा लिया और सांवलिया को उसने कुदाल तथा लालटेन लेकर चलने को कहा और वह दरवाजे से बाहर निकला।

बहुत देर बाद सांवलिया कुदाल और लालटेन ले अकेला ही वापस आया। सांवलिया को देख उसने कहा—लड़के यहां से जाने पर अन्त में उसने मुझे कुछ संदेसा भेजा है?'

सांवलिया ने कहा—बाबा से कहना आज से तीन महीने कब समाप्त होते हैं इसकी बाट देखो। यदि इस समय के बीच मैं न लौटा तो समझना कि मैं मर गया।' यह कह वे स्वगत बोले—अब मैं बीजापुर जाऊंगा और उस हरामखोर चाण्डाल का पता लगाऊंगा और उसकी परछांई की तरह उसके पीछे पीछे घूमूंगा और मौका पाकर उसका काम तमाम कर दूंगा।'

जब सांवलिया की बात समाप्त होगई तो वह बूढ़ा पहिले की तरह ही चुपचाप बैठ गया। इतने ही में दोनों ही रोगियों को दवा देने का समय होगया। बूढ़े ने उठकर उन्हें दवा पिलाई इस प्रकार उन्होंने रात बिताई। बूढ़े को तनिक भी नींद नहीं आई।

पर बेचारे सांवलिया की आंखों में नींद भर रही थी। वह सवेरे बड़ी देर तक सोता रहा। और इधर उधर के कुछ आवश्यक कार्य कर उसने बूढ़े से कहा—बाबाजी मैं मदद के लिए अपनी मां को ले आता हूं। मैं जब तक मां को ले आता हूं तब तक आप सरबाजी की सहायता लीजिए। मैं उसे बुला लाता हूं।'

अभी सांवलिया यह कह ही रहा था कि सरबाजी उनके सामने आ खड़ा हुआ। सांवलिया ने उसे बताया कि उसके आने तक वह वहीं रहे। बूढ़ा कुतूहल से उस लड़के की ओर

देखता रहा। और तब तक देखता रहा जब तक कि वह आंखों से ओझल न होगया।

पर आश्चर्य यह कि तीसरे दिन जब सांवलिया अपनी मां को लेकर वहां आया तो उन झोंपड़ियों में चिड़िया का बच्चा भी नहीं था।

पर अब हम इस समय सांवलिया को इसी प्रकार आश्चर्य में छोड़ दूसरों लोगों के विषय में जानकारी हासिल कर फिर सीधे बीजापुर में ही प्रवेश करेंगे। पाठकों को यह स्मरण होगा कि स्वामी जी ने नाना साहब को यह आश्वासन दिया था कि तीन दिन के अन्दर शिवाजी की ओर से वे उसके स्त्री का पता लगा देंगे। इस प्रकार सान्त्वना देने के बाद बैठकर विचार करने लगे थे।

नाना साहब ने कहा—आज जो समाचार हमें मिला है उससे सुल्तानगढ़ जीतना आसान होगा। पर कोई भी बात माता जगदम्बा की आज्ञा बिना न करने का शिवाजी का निश्चय होने के कारण उन्होंने स्वामीजी तथा अन्य व्यक्तियों को शान्त रहने के लिए कहा। और 'जय जगदम्बा भवानी कह ध्यानस्थ हो बैठे। थोड़ी देर में उनके ओंठ हिले और ये शब्द उनके मुंह से बाहर निकले:—सावधानी से कार्य करने पर अवश्य यश मिलेगा। मन्दिर का तोरण बांधना।' इसके बाद कुछ समय में शिवाजी फिर होश में आए। उन्होंने आखें खोलकर स्वामीजी की ओर देखा। उन्होंने कहा—शिव की फतह हुई जानो।'

आपकी और उस महात्मा की कृपा जो न करे थोड़ा है। पर शब्द क्या निकले हैं यदि वे मुझे मालूम होते तो—'

'अरे शब्दों के बिषय में क्या पूंछता है? जैसे हमें चाहिए वैसे ही शब्द थे। वे शब्द थे सावधानी से कार्य करने पर

यश अवश्य मिलेगा। मन्दिर का तोरण बांधना । अब इससे अधिक हमें क्या चाहिए। चलो आज से तीन मास की मोहलत है जिस दिन ये तीन महीने समाप्त हों उस दिन सूर्यास्त के पूर्व उस पर कब्जा कर वहां हमारा शासन शुरू होजाना चाहिए।'

शिवाजी का सारा ध्यान स्वामीजी के कहने की ओर था। उसने पूछा—स्वामीजी तोरण बांधना का क्या अर्थ।

स्वामीजी ने तुरन्त उत्तर दिया--आखिर इसमें समस्या क्या है । अरे यवनों ने जिस मन्दिर का विनाश किया है उसका तेरे हाथों फिर निर्माण होगा। और उसके तोरण स्वरूप तू यह किला फतह करेगा। चलो उठो अब सोचने बैठने का समय नहीं है। अब हमको सतर्क रहने की आवश्यकता है।'

इसके बाद स्वामीजो तथा शिवाजी थोड़ी देर अकेले बैठ मन्त्रणा करते रहे और बाद में शिवाजी उठकर अपने आदमियों समेत वहां से चला गया। इसके बाद स्वामीजी स्वयं विचार मग्न हो बैठे रहे और वाद में उन्हें बैठे स्थान पर ही नींद आ गई ।

पौ फटने के साथ ही स्वामीजी स्नान संन्ध्यादि कर्म करने के लिए उस गुप्त मन्दिर से बाहर निकले। वे जंगल के एक झड़ने पर जाकर स्नान कर लौटे तो एक साधु उनकी प्रतिज्ञा में था। उसने एक थैली दी। स्वामीजी ने उसे वंदना की और उसे खोलकर पढ़ा। बाद में उन्होंने अपने पकड़े जाने से अब तक का सारा समाचार लिख डाला। बाद में उन्होंने लिखा कि स्वामीजी के चरणों का दर्शन अभी तक नहीं हुआ है, शिवाजी की उन पर कितनी भक्ति है तथा उन चरणों के दर्शनों के लिए वह कितना उत्सुक है इत्यादि बातें उन्होंने उस पत्र में लिखी।

उन्होंने यह भी लिखा—'यदि आप शीघ्र दर्शन दें तो उसे अत्यन्त आनन्द होगा। इस कारण पहिला पराक्रम सफल होते ही उसे आपके दर्शन होने चाहिए।

पत्र लिखना समाप्त होने पर उन्होंने एक बार फिर उसे पढ़ा। उसे पढ़ते पढ़ते उनकी आंखों में आंसू आगए। और उन्होंने कहा—शिवाजी तुम धन्य हो। तुम पर ऐसे महात्मा की कृपा है। मैं तो केवल निमित्त कारण मात्र हूँ। परन्तु और वे बिनाश होते धर्म को संस्थापना के लिए प्रत्यक्ष कृष्ण और अर्जुन के अवतार हो।' इस प्रकार उन्होंने कहा इसके बाद वह पत्र उसी दिन समर्थ रामदास स्वामी को भेजा गया।

[१७)

बादशाह

बादशाह आदिलशाह के शासन में बीजापुर वैभव के उच्च शिखर पर पहुँचा हुआ था। यह बात जितनी सत्य थी, उतनी ही यह भी बात सत्य थी कि इसी के शासनकाल में बीजापुर के पतन का भी श्रीगणेश हो गया था। स्वयं राजा शासन व्यवस्था को तनिक भी नहीं देखता था। वह रानियों तथा सादुल्लाखां द्वारा लाई गई रम्भावती के साथ भोगविलास में मस्त रहता था। उसके शासन के प्रारम्भ में मुरार जगदेव तथा शहाजी राजा ने राज्य बढ़ाने के बहुत प्रयत्न किये और उसी कारण राज्य वैभव भी बढ़ गया। पर राजकाज में राजा का मन नहीं था और फिर सैय्यदुल्लाखां जैसे डेढ़ दमड़ी के आदमी ने जगदेव जैसे व्यक्ति के साथ स्पर्धा प्रारम्भ की इस कारण शासन में फूट का प्रवेश हुआ।

पिछले अध्याय में जो घटना हुई थी, उसके ठीक आठ दिन बाद यह घटना हुई। उस दिन बादशाह की तबियत ठीक नहीं थी, इस कारण रम्भावती और सैय्यदुल्लाखां के सिवा और किसी को उनसे मिलने की आज्ञा नहीं थी। बहुत दिन से सैय्यदुल्लाखां बादशाह से एकान्त में मिलने के लिए उत्सुक था। उसकी इच्छानुसार आज मौका मिला, इस कारण वह बादशाह के सुनहरी पलंगके सिरहाने खड़ा था। बादशाह ने सैय्यदुल्लाखां की ओर देख कर कहा — क्यों सैय्यद ! अब नई मुसीबत क्या लाए हो। तुम जरूर कुछ न कुछ कहना चाहते हो।'

सैय्यदुल्लाखां ने कहा — हजरत यदि आप ठंडे दिमाग से सुनेंगे तो इसका कुछ लाभ होगा। कारण बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। रंगराव के विषय में रणदुल्लाखां इतना पक्षपात जो दिखा रहा है, उसका कारण आज अच्छी तरह मालूम हो गया। रणदुल्लाखां स्वामिनिष्ठा से हट रहा है तथा नमकहरामी कर रहा है और कुछ बात नहीं है।'

इस प्रकार संदिग्ध बात से बादशाह की उत्सुकता और बढ़ी। सैय्यदुल्लाखां ने समझ लिया कि सितार के तार जरूरत से ज्यादा चढ़ गये हैं। उसने तुरन्त ही दोनों हाथ जोड़ कर बादशाह के कान में धीरे-धीरे कुछ कहा। उसे सुन बादशाह ने उत्तेजित हो कहा — झूठ ! झूठ ! बिल्कुल झूठ रणदुल्लाखां अपने बाप का बेटा है। इतनी सी बात के लिए वह ऐसी नीचता कभी नहीं करेगा। तू मुझे झूठी बातें बता रहा है। सैय्यद मैं तुझे ठीक १५ दिन की मोहल्लत देता हूं। यदि इस अर्से में तूने अपनी बात सच्ची न कर दिखाई तो फिर जान लेना तेरी खैर नहीं।'

हजरत आपने दिए समय में मैं आपको यकीन करा दूंगा और अगर बात पूरी न कर सका तो फिर मैं आप को अपना

मुंह कभी नहीं दिखाऊंगा। यह कह वह इन सब बातों पर विचार करता हुआ बाहर निकला और पालकी में बैठ कर चला गया।

इतने में उसने देखा कि रास्ते में बड़ा शोरगुल हो रहा है। आगे जाने को रास्ता नहीं है। खान साहब ने शीघ्र ही पालकी से मुंह निकाल कर बाहर देखा। उसने देखा कि एक गाय को छुड़ाने के लिए हिन्दू और उस गाय को मारने के लिए मुसलमान झगड़ रहे हैं। यह दृश्य देख उसे बहुत क्रोध आया और मुसलमानों की विजय के लिए वह नीचे उतरा। उस भीड़ में घुस कर वह कुछ करने ही वाला था कि उसने गाय को उड़ाने के लिए प्रयत्न करने वालों में एक काला व्यक्ति देखा। उन दोनों की नजर मिलते ही सैय्यदुल्लाखां अपनी पालकी में आ बैठा। पर तुरन्त ही वह काला व्यक्ति आगे आया और पालकी में सिर घुसेड़ कर बोला — याद रखना ! अच्छी तरह याद रखना। तुम्हारा दुश्मन मरा नहीं है और दो महीनों क अन्दर तुझे जहन्नुम रसीद करूंगा। देखो मेरी ओर अच्छी तरह देख लो। इस प्रकार कह वह व्यक्ति न जाने किधर गायब हो गया।

---

[१८]

नाना साहब

इधर हमारे विद्रोही दल में अपनी प्रतिज्ञानुसार तीन महीने के अन्दर सुल्तानगढ का किला फतह करने की व्यवस्था प्रारम्भ हो गई थी। शस्त्रास्त्र, संपत्ति तथा वीर लोगों की कमी नहीं थी। यदि ऐसा कहा जाय तो अनुचित न होगा कि केवल समय आने की ही देर थी। किला जीतने की प्रतिज्ञा के आठ दिन

पश्चात शिवाजी, नाना साहब, ताना जी तथा श्रीधर स्वामी आदि लोग हमेशा के जंगल के स्थान में बैठ कर इस विषय में मंत्रणा कर रहे थे।

करीब एक घंटे पूर्व बीजापुर से एक व्यक्ति यह समाचार लाया था कि रणदुल्लाखां ने रंगराव अप्पा की तरफदारी की, इस कारण वह एक जवान सरदार को पकड़ लाया है, पर उस की सूचना उसने बादशाह को नहीं दी, इस कारण भी बादशाह ने यह आज्ञा दी है कि किलेदार को जेलखाने में रखा जाय तथा उसे सताया जाय। यह समाचार सुन कर नाना साहब को अत्यन्त दुःख हुआ तथा सभी को अत्यन्त चिन्ता हुई। इस समय प्रत्येक ही यह सोच रहा था कि इसका कुछ न कुछ उपाय सोचना चाहिए।

इसी बीच नाना साहब ने जोर से कहा — आप सब और स्वामी जी की आज्ञा हो तो मैं बीजापुर जाकर वहां क्या बात है इसके विषय में मालूम कर आता हूं। मैं सोचता हूं कि या तो पिताजी को छुड़ा लाऊं या फिर उस प्रयत्न में अपने प्राण गवां दूं।'

स्वामी जी तथा शिवाजी न शान्त चित्त से उसकी सारी बातें सुनी और बड़ी देर तक वे सोचते रहे। आखिर स्वामीजी ने शिवाजी की ओर घूम कर कहा — इस समय बीजापुर हममें से किसी न किसी को अवश्य जाना चाहिये। पर अकेले नाना साहब को वहां जाने देना योग्य न होगा। इस समय तानाजी अथवा येसाजी को उस यमाजी को ले भेस बदल कर वहां जाना चाहिए।'

इसपर शिवाजी ने कहा — स्वामीजी मैं आपकी आज्ञा के बाहर नहीं हूं, यह तो आप जानते ही हैं। पर अब जो कुछ

करना है, वह उनकी राजधानी में उनकी आंखों के सामने ही होना है। बड़ी सतर्कता से काम करने की आवश्यकता है। इसके अलावा और कोई चारा नहीं है।' यह कह शिवाजी स्वामी जी को एक ओर ले गये और उन्होंने उन्हें अपने मन की सारी बात बताई और दूसरे ही दिन जो लोग निश्चित किये गये थे, वे बीजापुर के लिए रवाना हुए।

[१९)

साधु

एक दिन शाम को रम्भावती बिल्कुल अकेली ही अपने महल की खिड़की में बैठी हुई थी। वह अत्यन्त उदास दिखाई दे रही थी। इतने में उसके दीवानखाने का दरवाजा बंद किया। उस शब्द से चौंककर रम्भावती न पूछा — 'कौन राई' तू आ गई ? क्या समाचार लाई ? बोल वही मूर्ति तो है ! बोलो ! बोलो !' पर राई ने उत्तर न दे एक पुरुष अंदर आया और उसने जंजीर चढा दी। उसे देख रम्भावती घबराई और वह चिल्लाई 'चिराग ! चिराग लाओ ! यह कौन • • • ' पर चिल्लाने के पूर्व ही उस व्यक्ति ने उसके सुकुमार मुंह पर हाथ रख दिया और बोला — 'चुप ! चुप ! बोलो मत ! तुम्हारे चिल्लाने का भी कोई लाभ न होगा। बोलो ! मैं कौन हूं। क्या तुमने मुझे पहिचाना ?' इस प्रकार वह जोर से चिल्लाया।

रम्भावती ने थरथर कांपते हुए कहा—हां।'

मैं तुझे जान से मारने आया हूँ। आज इसी जगह तुम्हारा शिरच्छेद करूंगा और उसके बाद ही मैं यहां से जाऊंगा। तुझे इस प्रकार एशोआराम में देखकर मुझे कितनी यातनाएं

हो रही हैं इसकी यदि तुझे तनिक भी कल्पना होती तो तूने मेरे सामने ही प्राण त्याग दिये होते। दुष्ट चाण्डाल !'

आपके हाथों मरूं इससे अधिक मुझे और कुछ नहीं चाहिए। उसने मुझे आकर बताया था कि उसने आपको इस संसार से विदा कर दिया उसी दिन मैंने यह प्रतिज्ञा की थी कि किसी दिन इस चाण्डाल के रक्त का घूंट पिऊंगी तभी आत्महत्या करूंगी। अब उस प्रतिज्ञा को पूरी करने की आवश्यकता नहीं है। निकालिए निकालिए वह तलवार और मेरे दो टुकड़े कर डालिए। यह कह रम्भावती धड़ाम से उस व्यक्ति के पैरों पर गिर पड़ी। यह देख वह व्यक्ति अत्यन्त चकित हुआ। उसकी कहानी सुन वह सोच में पड़ गया। उसने जो समझा था वह सब झूठा हुआ। अब वह अपना इरादा पूरा करे या न करे इस विषय में सोच में पड़ गया।

इतने ही में किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। उस सुन्दर स्त्री की हत्या के लिए उसका हाथ नहीं उठ रहा था। दरवाजा खोलते समय वह स्वयं दरवाजे की आड़ में खड़ा हुआ और दरवाजा खोलते ही वह जल्दी से बाहर निकल गया। उसके सारे कपड़े सफेद थे और उसके कपड़ों को शोभा देने वाली ही उसकी सफेद लटकती डाढ़ी थी। वह बगीचे के बड़े दरवाजे के पास आया। वहां पहुंचने पर वहां के पहरेदार ने पूछा—साईंजी आप बहुत जल्दी ही चल दिए।

'हां बेगम साहब कुरान का कुछ हिस्सा सुनना चाहती थीं उसे काजी साहब के हुक्म के मुताबिक सुनाकर अब जा रहा हूं।' यह कह हजरत पालकी में जा बैठे और जब वह पालकी एक मस्जिद के सामने खड़ी की। उन्होंने उन भाइयों के कान में कुछ कहा और वे मस्जिद के एक दरवाजे से घुसकर दूसरे

से निकल गए। और वहां से चलकर वे एक पुराने बाड़े के अन्दर घुसे।

जैसे ही सांईजी उस टूटे मकान में घुसे उन्होंने मकान का दरवाजा बन्द कर दिया। और अपने कपड़े उतार तथा वे डाढ़ी मूछें भी निकाल फेंकीं। इसके बाद वे ओसारे में इधर से उधर और उधर से इधर घूमने लगे। 'ओह! उसने जो कुछ कहा उससे तो मैं हतप्रभसा होगया मेरा हाथ ही न उठा। मुझे ऐसा भी प्रतीत हुआ। कि मैं जीवित हूं इसकी उसे कल्पना भी नहीं है। उसने जो कुछ भी किया वह बेबस हो किया। फिर भी जिसने उसके साथ ऐसा किया है उसका खून पीने की भावना उसके अन्दर हैं और वह इस इरादे को पूरा करना चाहती है! इस प्रकार के अनेक विचार उस व्यक्ति के दिमाग में चक्कर काट रहे थे। इतने में किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी।

उसने सोचा। आज तक इतनी रात बीते कभी कोई नहीं आया फिर आज कौन आकर दरवाजा खटखटा रहा है। मैंने जो स्वांग बनाया था कहीं वह भेद तो नहीं खुल गया। पर जो व्यक्ति दरवाजे पर दस्तक दे रहा था उसने और जोर से दर-वाजा खटखटाना शुरू किया। आखिर उसने दरवाजा खोलकर उसने डाट कर पूछा—तुम लोग कौन हो? यहां किस लिए आए हो।'

बाहर के व्यक्तियों ने दीन हो कहा—कोई नहीं? हम चार आसामी परदेसी हैं अभी बाहर से आ रहे हैं कहीं उतरने को जगह नहीं हैं इस कारण आपको कष्ट दिया।'

उस बात को सुनकर उस पर न जाने क्या परिणाम हुआं उसने कहा अच्छा अन्दर आ सकते हो। यह आज्ञा पाते ही वे चारों अन्दर गये। उनके खाने पीने के लिए जो कुछ था।

उसे उन्होंने पेट भर खाया और बाद में एक आदमी पहरा देने बैठा और बाकी तीनों सोगए। आधी रात होजाने के बाद उन सोने वालों में से एक उठा और उस पहरा देने वाली की जगह बैठ गया और उसने उसे सुला दिया। इस घर में जो व्यक्ति पहिले रहता था उसने जब देखा कि पहिला पहरा देने वाला व्यक्ति सोगया है तो उसने पहरा देने वाले व्यक्ति के कंधे पर हाथ रख कहा—आप मुझे नहीं पहिचानते हैं पर मैं आपको अच्छी तरह पहिचानता हूँ आप लोग यहां क्यों आये हैं यह भी मैं जानता हूं। पर अभी बाकी लोगों को मत जगाओ। तनिक बाहर चलो। फिर मैं तुम्हें कुछ बताऊंगा।'

उसकी यह बात सुनकर पहरे पर बैठे व्यक्ति ने सोचा कि वह बाहर जाए या न जाए। उसे इस प्रकार हिचकिचाता देख पहिले व्यक्ति ने कहा—आप तनिक भी शंका न करे मैं आपका मित्र हूँ। तुम्हारे कार्य में मैं सहायता करूंगा। उसमें तनिक भी आगा पीछा न करूंगा। इस पर तुम्हारी मर्जी।' यं शब्द उसने दृढ़ता पूर्वक कहे कि वह पहरे पर बैठा व्यक्ति उठा तथा उसके साथ बाहर आया। जब वह बाहर पहुंचा तो उसने कहा—क्या आपका नाम नाना साहब है ? आप अप्पा साहब को उनकी मुसीबत से छुड़ाने आए हैं। मैं तो तुम्हें अपनी पहिचान देना नहीं चाहता था पर आप किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए आए हैं और मैं भी ऐसे ही किसी काम के लिए आया हूं। हां मौका है और अभी समय भी है मुझे आपकी और आपको मेरी मदद की आवश्यकता होगी। इसी कारण मैंने ये सारी बातें आपसे कह रक्खीं। जब तक बीजापुर में मैं जीवित हूं तब तक आपका कोई बाल बांका नहीं कर सकता। अब आप अन्दर जाइए। पर खबरदार रहिए। इस भूतवाले मकान

में चाहे जो रहे पर उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। तुम साधु के भेष में यहां रह सकते हो। मैं हर रोज इसी समय आया करूंगा। तुम अपना रात का पहरा इसी समय रखना। आखिर में मैं तुम्हें इतनी ही बात कहे देता हूं कि जो तुम्हारा दुश्मन है वही मेरा भी दुश्मन है। वह तकदीर से कहीं मेरे हाथ लगने के बजाय तुम्हारे हाथ लगा तो उसे मारना मत। वह काम मेरे लिए छोड़ देना। उसे मैं अपने हाथों नरक भेजूंगा। उसके खून से नहाने की मैंने प्रतिज्ञा की है···इस प्रकार अधूरी बात कह वह व्यक्ति वहां से गायब हो गया।

---

(२०)

नानासाहब गायब हुए

नानासाहब उस अजीब व्यक्ति की अजीब बातें सुनकर बिलकुल हक्के बक्के रह गये थे। उनके दिल में अनेक प्रकार के प्रश्न उठ रहे थे। यह व्यक्ति कौन है ? मालूम तो मराठा होता है ? पर कहीं यह चक्कर में तो नहीं डालना चाहता।' यह बात दिल में आते ही उन्होंने सोचा कि जो कुछ हुआ है उसके विषय में कम से कम तानाजी को बता ही दूं। यह सोच उसने सारी बातें तानाजी को कह सुनाईं। उसे सुन तानाजी को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। इसके बाद पहर भर दिन चढ़ जाने पर तानाजी और नानासाहब साधु का भेष बदल कर अल्लक करते हुए उस मकान से बाहर आए।

करीब घण्टे दो घण्टे घूमने के पश्चात अपने मकान को लौटते समय नानासाहब की दृष्टि एक ऊंचे मकान की अन्तिम मंजिल पर गई और वहां एक तरुण युवक को देख उन्हें आगे

बढ़ने की हिम्मत नहीं हो रहीं थी। साथ के व्यक्तियों ने भी ऊपर देखा और उनके भी दिल में यही प्रश्न आया कि यह पुरुष कौन है ? नानासाहब का इस प्रकार देखते रहना संदिग्ध मालूम होगा यह सोच उनके साथियों ने उन्हें आगे बढ़ने का इशारा भी किया पर नानासाहब किसी प्रकार भी आगे नहीं बढ़ना चाहते थे। इतने में खिड़की में खड़ा व्यक्ति वहां से हट गया।

एक दिन हुआ दो दिन हुए पर नानासाहब का वह पागलपन काबू में ही नहीं आ रहा था। वे रोज अपने काम के लिए बाहर निकलते और अपना काम भूल कर उस बड़ी इमारत के आस पास बीस पच्चीस बार चक्कर लगाते। आखिर नानाजी से न रहा गया और वह बोला—नानासाहब यदि इसी प्रकार दिन खोना हो तो कैसे काम चलेगा। कल यहां से थैली भेजना है ? फिर उसमें हम क्या लिख भेजेंगे ? फिर कहिए कि आपका यह हाल कब तक रहेगा ? अब तक हमें कुछ न कुछ करना चाहिए था।'

नानासाहब को तानाजी की यह बात बहुत बुरी लगी। पर लाख प्रयत्न करने पर भी वे तानाजी से सारी बातें साफ साफ न कह सके। उन्होंने बड़ो मिन्नतें कर कहा—पहिले दिन जिस व्यक्ति ने हमें इस मकान में रहने के लिए जगह दी वह व्यक्ति फिर एक बार मिले तो आपकी उसकी मुलाकात करा दूं। और बाद में फिर कल से बिना किसी कष्ट के हम अपने कार्य में लग जाएंगे।' उस समय बात यहीं तक रही। नानासाहब उस दिन बाहर नहीं गए। वे अकेले ही मकान में विचार करने बैठे थे।'

इतने ही में किसी ने दरवाजा खटखटाया। उन्होंने सोचा उनके साथी आगए होंगे इसलिए वे दरवाजा खोलने गए। पर आश्चर्य यह कि वहां किसी व्यक्ति के होने का चिन्ह नहीं था। उन्होंने पीछे घूमकर देखा तो दरवाजे में एक पुरजा लगा था। उन्होंने उसे खोलकर देखा तो उसमें लिखा था—आज रात को जब लोग सो जायं तो आप इस मकान के पिछली ओर के बरगद के पेड़ के नीचे मिलिए।' इन अक्षरों को देख उन्हें अत्यन्त आश्चर्य हुआ। वे सोचने लगे कि जिसने मिलने का वचन दिया था उसी ने यह पत्र लिखा है या किसी व्यक्ति ने फंसा कर पकड़ ले जाने के लिए यह षड़यन्त्र रचा है। फिर भी उन्होंने यह निश्चय किया कि इस बुलावे के अनुसार वे जाएंगे और देखेंगे कि वहां क्या होता है। वे आधी रात बीते उठे और अपने हथियार संभाल कर बाहर निकले। वे उत्तर की ओर गए और उस स्थान पर पहुंचे। पर जैसे ही वे वहां पहुंचे उन पर तीन व्यक्तियों ने हमला कर दिया। आगे से दो व्यक्तियों ने उनके मुंह में कपड़ा ठूंस दिया और जब तक वे संभले तब तक वे उन्हें उठा ले गए।

ये व्यक्ति नानासाहब को उठाकर एक बहुत बड़ी इमारत के सामने आकर रुके और उनमें से एक व्यक्ति ने उनकी आंखों पर एक मोटे कपड़े की पट्टी बांधी और इसके बाद उन्हें ले जाकर एक तहखाने में बन्द कर दिया। नानासाहब ये न समझ सके कि उन्हें इस स्थान पर किसने और क्यों कैद किया है।

इधर नानासाहब के जाने के घंटे डेढ़ घंटे बाद उनके साथियों ने जब यह देखा कि वे नहीं लौट रहे हैं तो तानाजी को चिन्ता उत्पन्न हुई। आखिर एक और साथी को जगाकर वे नानासाहब को ढूढने के लिए बाहर निकले। बहुत देर तक

इधर उधर चक्कर काटने के पश्चात जब उन्होंने देखा कि नानासाहब का कुछ भी पता नहीं चल रहा है तो इस विषय में आश्चर्य करते हुए वे मकान की ओर लौटे। इधर सवेरा भी हो गया था। इन्होंने फिर अपना छद्म वेष बनाया। एक व्यक्ति को घर की रखवाली के लिए छोड़ बाकी दोनों घर के बाहर निकले।

उन्होंने सोचा सम्भव है कि जिस मराठा सरदार को देख वह पागल होगया था उसी के पास चला गया हो। यह सोच वे दोनों उस मराठा सरदार के आस पास चक्कर काटने लगे। आखिर इस प्रकार वेकार मंगतों को चक्कर काटता देख पहरे पर खड़े सिपाही ने उसे डांटा।

·पर साधुओं ने दीन हो कहा—कुछ नहीं बाबा दो मुट्ठी भीख के लिए हम घूम रहे हैं। आप गुस्सा न हों आप बड़े दिल वाले हो जरा अपना हाथ तो दिखाइए।' यह कह तानाजी उसके सिर हो गया और उसने जबरदस्ती उसका हाथ अपनी ओर खींचकर देखते हुए कहा—आपके हाथ पर लक्ष तो सुन्दर हैं। आप सच माने या न माने पर आपके दिल में जो बात है वह महीने दो महीने में अवश्य पूरी होगी। आप यदि डेवढ़ी पर चल कर बैठें तो मैं और भी बहुत सी बातें बताऊं।' इस तरह सिपाही के मना करने पर भी वे लोग उसे ले डेवढ़ी पर जा बैठे।

---

(२१)

बीजापुर का समाचार आने पर

नानासाहब और उनके साथियों के चले जाने के बाद सासवड़ में क्या हो रहा था वह अब हम चलकर देखें। आज शिवाजी के उसी जंगल में बैठकर शिवाजी तथा स्वामीजी येसाजी किसी गहन विचार में संलग्न थे। बीजापुर से क्या समाचार आता है उस पर ही अगला कार्यक्रम निर्भर करना था। सुल्तानगढ़ का किला जीतने का अर्थ यह होता है कि वे संसार को यह दिखाना चाहते हैं कि वे अपना राज्य स्थापित करना चाहते हैं। इस कारण अब का यह प्रयत्न अत्यन्त महत्वपूर्ण था। और शुरू में ही अपयश आना अनुचित होगा। और असफलता से बचने के लिए अच्छे ईमानदार व्यक्तियों के सहयोग की आवश्यकता होती है। ऐसे लोग जमा करने के विषय में ही इस समय इन तीनों व्यक्तियों की मंत्रणा हो रही थी। चाहे लोग कम ही क्यों न हों पर वे ऐसे होने चाहिएं कि जो कार्य एक बार हाथ में लेलें उसे जान पर खेल कर भी निभाएं। आखिर शिवाजी ने अपने धीर और गम्भीर शब्दों में जमा किए व्यक्तियों को बुलाने की आज्ञा दी। शिवाजी की वाणी में इतना माधुर्य था कि सुनने वाले को उनके बताए काम करने की स्फूर्ति पैदा हो जाती थी। शिवाजी का भाषण समाप्त होने पर लोगों को इनाम बांटा गया। इससे वे लोग और अधिक प्रसन्न हुए। उनमें से सात आठ प्रमुख व्यक्तियो ने बताया कि दस पन्द्रह दिन में वे सौ दो सौ क्या ५ ० व्यक्ति लाकर खड़े कर देंगे। यह आश्वासन दे वे सारे वहां से रवाना होगए। वहां केवल शिवाजी स्वामीजी तथा येसाजी ही रह

गए। शिवाजी अपने मित्रों और स्वामीजी को अपने पिता, दादा कोंडदेव तथा घर की अनेक बातों के बिपय में बताया करते थे।

लगभग दो दिन पूर्व दादाजी ने शिवाजी से कुछ कठोर शब्द कह दिये थे और उसी दिन शहाजीराजा की कड़ी चिट्ठी भी आई थी। सवेरे जो पत्र आया था। उसे दादा ने शिवाजी को दिया और उसके दो घड़ी बाद उन्होंने तनिक दिल को चोट पहुंचाने वाले शब्द कहे—आपके हाथ कुछ होने से तो रहा पर हजूर कुल की बदनामी अवश्य कराएंगे। बेचारे गरीबों के गांव लूटना पराक्रम नहीं है। और अजेय शत्रु का तो अभी बाल भी बांका नहीं हुआ है। और क्या इसी प्रकार आप करामात कर स्वराज्य की स्थापना करेंगे? आप अपना अपने कुल का और आपसे जो सम्बन्ध रखते हैं उनका नामो निशान अवश्य मिटा देंगे और आपसे कुछ न होगा।

आज तक दादा ने शिवाजी से कभी ऐसी कड़ी बात नहीं कही थी इसी कारण आज शिबाजी को बहुत बुरा लगा। और आज तक उन्होंने कभी दादा को उलट कर जबाब नहीं दिया था पर आज उनसे न रहा गया और वे एक दम बोले—जिस कुल का आज तक मुसलमानों की गुलामी करना ही ध्येय रहा है और उस गुलामी को ही भूषण मानना जिसका धर्म रहा है, उस कुल का यदि नाश होता है तो उसमें बुराई कौन सी है। मैंने अभी तक मुसलमानों को कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचाया है और मैंने उनका कोई हिस्सा नहीं जीता है यदि आपको इसी का दुख है तो मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि जब तक शत्रु के किले में से किसी एक को जीत नहीं लेता हूं तब तक मैं आपको तथा माताजी को मुंह नहीं दिखाऊंगा।'

उनकी बात से शिष्य को कुछ अधिक कष्ट हुआ है उसे दूर करने के विचार से दादा—कुछ कहने ही वाले थे कि शिवाजी ने वहां से उठे गुरुजी को साष्टांग प्रणाम किया और वहां से चलकर माता जीजाबाई के पास जाकर उन्हें नमस्कार कर बोले—माताजी अब आपकी और मेरी कब भेंट हो कह नहीं सकता। और यदि भेंट हुई तो उस समय की भेंट ऐसी ही होगी जिसके विषय में आपको गर्व करने का मौका मिले और यदि भेंट न हुई तो समझना कि आपका कुलकलंक समाप्त होगया।' यह कह शिवाजी वहां से तुरन्त चल दिए और देवी के मन्दिर में बैठ कर दो दिन तक देवी की आराधना करते रहे।

दो दिन समाप्त होने पर तीसरा दिन भी समाप्त होगया और आधी रात को शिवाजी के मुंह से एकदम कुछ शब्द निकले। शिवाजी का ध्यान समाप्त हुआ। उन्होंने स्वामीजी से अम्बाबाई की आज्ञा के विषय में पूछा।

इस पर स्वामीजी ने सुने शब्द याद रख कहा—बड़ों ने जो बात कही वह बात तुम्हारे भले के लिए ही कही। मेरी कृपा थी उन्होंने तनिक भी विचार न कर वह सब कहा। दिल में बुरा न मानना आपके हाथ से पराक्रम होने पर लोगों के मुंह अपने आप बन्द हो जाएगे। अपने प्रयत्नों में कमी न करना। मेरी पूर्ण कृपा होगी।' तीन दिन उपोषण कर देवी की उपासना करने के पश्चात उन्हें उचित फल मिला यह देख उन्हें अत्यन्त आनन्द हुआ। सूर्य उदय होते देख शिवाजी ने दुग्ध-पान कर अपना व्रत समाप्त किया। इसके बाद स्वामीजी तथा येसाजी से उस किले को लेने के विषय में मंत्रणा की जिसे वे लेना चाहते थे। इसके लिए कितने व्यक्तियों की आवश्यकता

होगी आदि बातें उन्होंने सोची और बाद में उन लोगों को जमा कर सारी बातें बताई गईं।

उन लोगों के जाने के बाद वे तीनों बीजापुर गए व्यक्तियों के पत्र की बाट जोह रहे थे। इतने ही में जगल में पहरा देने वाला व्यक्ति वहां उपस्थित हुआ। तथा उसके निश्चित की हुई छुरी स्वामी और राजा को दिखाने पर उन्होंने उस आदमी को लाने की आज्ञा दी। उस आदमी ने आते ही स्वामी को मुजरा किया और लाई हुई थैली स्वामी के हवाले की। इस प्रकार बीजापुर का समाचार आते ही स्वामीजी ने वह सारा पत्र उन सब को पढ़कर सुनाया। उसमें वे सब बीजापुर पहुंचने से नानासाहब के खोने तक का समाचार था। पत्र पढ़ने पर सभी कुछ अस्वस्थ हो गये। शिवाजी के मन में अनेक विचार उठे और वे एक दम बोल उठे—स्वामी जी नानासाहब को किसी ने धोखा देकर चक्कर में डाल दिया है। ऐसे समय किसी और व्यक्ति को वहां जाना चाहिए इसलिए मैं जाता हूं।'

स्वामीजी ने शिवाजी की बात शान्ति पूर्वक सुन लीं और जब उसका कुछ जोश कम हुआ तो उन्होंने एक दम कहा—शिवा जी यह तुमने क्या सोचा है। अगर तुम अपने आप ही जाल में जा फंसे तो फिर उनको और क्या चाहिए। फजूल की बात न सोचो। यहां तुम पर कितनी जिम्मेदारी है। तेरे जाने पर तो यहां सुहाग ही लुट जायगा।'

यह सुन शिवाजी ने कहा—स्वामी मेरे साथी यदि इस प्रकार संकट में हों और यदि मैं उनकी सहायता न करूं तो फिर हाथ में लिए काम को पूरा होने की आशा ही व्यर्थ होगी। जिस समय उन्हें विश्वास होगा कि मैं आवश्यकता पड़ने पर उनके लिए प्राण दे सकूंगा मैं युद्ध में जाने से कभी नहीं डरूंगा तभी

मैं जिस कार्य को हाथ में लूंगा उसमें सफलता की आशा कर सकता हूँ। बस कुछ नहीं मेरे ये सहयोगी किसी न किसी मुसीबत में फंसे हैं उनके पास जाकर उन्हें सांत्वना देना मेरा कर्तव्य है।

---

[२२]

तहखाने में

नाना साहब के साथ धोखा कर किसी व्यक्ति ने बहका कर उन्हें कैद किया और इस तहखाने में डाल दिया। उनका मन और शरीर दोनों ही अत्यन्त अस्वस्थ थे, वे केवल भाग्य पर भरोसा कर इस समय चुपचाप बैठे थे। बैठे-बैठे उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि तहखाने का दरवाजा खोल कर कोई व्यक्ति अन्दर आया। उस व्यक्ति ने नाना साहब के बिल्कुल नजदीक आकर कहा — साहब आप को बहुत भूख लग रही होगी ? इस दासी ने दोपहर को फल इत्यादि भेजने का बहुत प्रयत्न किया। पर आपके पास आने का कोई मौका न मिला। मैं बहुत बेचैन रही। पर क्या करती। मेरे इधर आने के विषय में किसी को भी यदि तनिक सी शंका हो जाती तो मेरी भी वही दशा होती, जो आपकी हुई है। अब आपके लिए विशेष रूप से मैं जो चीजें बनवा लाई हूं, उन्हें आप खाइये।'

नाना साहब चुपचाप उसकी सारी बातें सुन रहे थे। उसके चेहरे से नाना साहब को यह पता चल गया कि उसकी उनपर भक्ति है। इसलिए उन्होंने हिम्मत कर उत्तर दिया — यदि तू मेरे विषय में इतना प्रेम जता रही है तो कम से कम मुझे यह तो बता कि यह हवेली किस की है और यदि तुम मुझ पर

सचमुच दया दिखाती हो तो मुझे कागज--कलम दवात इत्यादि ला दो।'

यह बात सुन फातिमा के आंखों में आंसू आ गये। तब उस ने एकदम नाना साहब से कहा — साहब आपने जो कुछ कहा और उसे करना कितना कठिन है, इसकी आपको कल्पना भी न होगी। अस्तु। यदि आप धैर्य रखें तो मैं जो कुछ आप कहते हैं सब कर दूंगी, इतना ही नहीं आपको यहां से छुड़ा दूंगी। पर आप किसी बात की जल्दी न करें।' उसने ये सारी बातें दिल से कही थीं, इस कारण नाना साहब चुपचाप बैठे रहे। फातिमा ने लाई वस्तुओं को खाने के लिए एक बार फिर नाना साहब से नम्र निवेदन किया। नाना साहब ने भी उसकी बात मान ली।

दूसरे दिन फातिमा ने दवात-कलम और कागज लाकर नाना साहब को पत्र लिखने के लिए दिया, कारण उसने उन्हें इन वस्तुओं को ला देने का पहिले दिन वादा किया था। ये चीजें दे उसने कहा — आपको बत्ती देकर मुझे यहां से जाने की आज्ञा नहीं है। आप पत्र लिख कर मुझे बताइये कि यह खत कहां पहुंचाना है।

इस प्रकार फातिमा के प्रार्थना करने के बाद वे चिट्ठी लिखने बैठे। पर फिर रुक कर बोले — मैं क्या लिखूं? मुझे कौन पकड़ लाया? मैं किसके मकान में हूँ? मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम है। इससे तो अच्छा यही है कि तू मुझे यहां से भगा दे?

उनकी यह बात सुन कर फातिमा हंस कर बोली — ए जनाब वह मौका मिलेगा तो मैं ऐसा करने से भी नहीं चूकूंगी। पर यह बात आज करना सम्भव नहीं है। आज यदि आप किसी को कुछ लिखना चाहते हैं तो यही लिख दें कि आप

जीवित हैं, डरने का कोई कारण नहीं है। मैं स्वयं यह चिट्ठी जहां आप कहेंगे वहां पहुंचा दूंगी।

नाना साहब ने यह विचार कर कि जिस प्रकार फातिमा कहती है, उसी प्रकार करने में बुद्धिमत्ता है, फातिमा को नाना साहब ने उस मकान का पता दिया, जहां ताना जी इत्यादि रहते थे। थोड़ी देर में ही फातिमा उनसे विदा होकर वहां से रवाना हुई। जाते समय फातिमा ने नाना साहब के कान में कुछ कहा और उसे सुन नाना साहब सन्नाटे में आ गये। जिस इमारत में उन्हें ला रखा है, वह तो उनके घराने का परममित्र था, फिर भला उसने मुझे इस प्रकार क्यों क़ैद कर रखा, इसका उन्हें कुछ भी अन्दाज नहीं लग रहा था। पर अब हम नाना साहब को इसी प्रकार विचार करता छोड़ उन बहुत से लोगों के विषय में जानकारी प्राप्त करें, जो इस समय बीजापुर में हैं।

पाठकों को यह मालूम ही होगा कि नाना साहब के उन मित्रों ने पहरेदार से मित्रता कर देवढी तक पहुंचने की व्यवस्था तो करली थी। जब बात जमती दिखाई दी तो साईं जी ने धीरे-धीरे यह पूंछना शुरू किया कि यह हवेली किसकी है ? इसका मालिक कौन है ?' सिपाही भी उन्हें धीरे-धीरे सारी बातें बता रहे थे कि इतने में अंदर से एक खवास ने आकर कहा — साधु बाबा को सरकार ने अन्दर बुलाया है।' इस बात को सुनते ही साधु बाबा को अत्यन्त आनन्द हुआ। उन्हें जरूरत से ज्यादा मिल गया। उन्होंने अपने साथियों से वहीं बैठने को कहा और वे वहां गये, जहां वह नवयुवक सरदार बैठा था। वहां उन्होंने आशीर्वाद दे अपने बुलाए जाने का कारण पूछा।

उस नवयुवक ने पास बैठे खवास को जाने के लिए कहा और फिर धीरे से साधु से कहा — साधु बाबा आप कहां से

आए हैं और आपके साथ और जो तीन व्यक्ति हैं, वे कहां से आए हैं और चार-पांच दिन से आप हमारी हवेली के आस-पास क्यों चक्कर काट रहे हैं। आप जो कुछ दिखाई दे रहे हो, वह नहीं हो, यह बात मैं जानता हूं, इस बात को जान कर जो कुछ उत्तर देना हो, समझ-बूझ कर देना।'

इन सब बातों को सुनकर साधु बाबा की स्थिति वैसी हो गई, जैसी कि उस व्यक्ति की हो, जो फूलों की वृष्टि की आशा करता हो और इस पर वज्रपात हो, पर सरदार साहब ने जो कहा उसे एकदम स्वीकार कर लेना मूर्खता होगी, यह सोच साधु बाबा ने कहा — महाराज आपको क्यों हमारे विषय में शंका आई पता नहीं पर हम जो दीख रहे हैं वही हैं।'

साधु बाबा की यह बात समाप्त होते ही सरदार साहब ने तनिक जोर से हंस कर कहा — साधु बाबा आपने बहाना तो खूब बनाया है, पर मैं न केवल आप को ही पहिचाना है, बल्कि उस दिन आपके साथ जो व्यक्ति था, उसे भी मैं अच्छी तरह पहिचानता हूँ। इस कारण भाई आप बुद्धिमान हो तो सारी बातें सच-सच बताइये। मैं आपका भेद नहीं खोलूंगा, इसपर विश्वास कीजिये।'

उसके ये शब्द सुन कर साधु बाबा को अत्यन्त आश्चर्य हुआ और उन्होंने उसी स्थिति में कहा — सरदार साहब इसी शक के कारण आपने हमारे साथी को कुछ कर तो नहीं दिया। उसे कहीं मार तो नहीं डाला। यदि आपको शंका हो तो आप हमारा साथी हमें सौंप दीजिये और आज ही हम यहां से कूंच कर देंगे।'

क्या कहा ! क्या कहा ! तुम्हारे साथी को कोई पकड़ ले गया ? बोलो जल्दी बताओ वह तुम्हारा कौनसा साथी था।

पहिले दिन हमारी हवेली के सामने खड़े होकर मेरी ओर टक-टकी लगा कर देख रहा था वही तो नहीं ? वह कब खो गया ? कहां गया ? तुम लोग बोलते क्यों नहीं हो ?'

एकदम उनके साथी के विषय में इस सरदार को इतनी चिन्ता क्यों उत्पन्न हो गई, इसका कारण साधु न समझ सका। पर न जाने क्यों उन्होंने यह सोचा कि सरदार साहब की यह आतुरता उन्हें लाभदायक सिद्ध होगी और वे तुरन्त बोले—सरदार साहब बातें ऐसी ही हुई हैं। हमारे साथी के साथ किसी ने धोखा कर उसे पकड़ रखा है। कारण हम यह स्वप्न में भी नहीं सोच सकते हैं कि वह हमें छोड़ कर कहीं जाएगा।

साधु की यह बात सुन सरदार साहब ने उन्हें दूसरे दिन आने की आज्ञा दी। यह आज्ञा पाकर साधु वहां से चला गया। इसके दूसरे व तीसरे दिन बाद साधु बाबा फिर आए पर न ता सरदार साहब से ही भेंट हो सकी और न शहर में कहीं नानासाहब का ही पता चला। पर अन्तिम दिन उन्हें नाना-साहब की चिट्ठी मिली।

नानासाहब को वचन दिए अनुसार फातिमा वह चिट्ठी साधु की मढ़िया में ले आई थी। उस चिट्ठी को पढ़ते ही साधु बाबा ने फातिमा को अन्दर बुलाया और नानासाहब को वहां छुड़ाने की योजना के विषय में पूछा। पर फातिमा ने कहा—वह सारा कार्य आप मुझे सौंप दीजिए मैं उन्हें तरकीब से छुड़ा-कर आपके हवाले करूंगी।' यह कह वह वहां से जाने को तैयार हुई। जब वह वहां से निकली तो एक व्यक्ति उसके पीछे पीछे अन्त तक गया। और वह जब पिछले दरवाजे से अन्दर घुसी तो वह भी वहां से गायब होगया।

दूसरे दिन सबेरे सब कार्य से छुट्टी बना अपना भेष बदल कर टीका रुद्राक्ष कर दोनों साधु अपनी झोंपड़ी से बाहर निकले। जिस हवेली में नानासाहब को बन्द कर रखा था अर्थात ही वे साधु उसी इमारत की ओर गए। पर उन्हें और अधिक कुछ भी न मालूम हो सका। पहिले दिन जो व्यक्ति मिला था और जिसने नानासाहब को यह हवेली दी थी वह भी कहीं दिखाई न दिया इस कारण तानाजी की स्थिति विचित्र हो गई। ऐसी दशा में एक दिन रात्रि को किसी ने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खोलने पर एक काला व्यक्ति उनके सामने आ खड़ा हुआ। तानाजी के देखते ही उस काले व्यक्ति ने एक दम पूछा—तुम्हारे वे दूसरे साथी कहां हैं? उसने यह प्रश्न इतनी आतुरता से किया कि तानाजी की सारी शंका एक बार तो चल विचल होगई। तानाजी ने जब सारी बातें उन्हें बताई तो वह अत्यन्त चकित बोला—आपके मित्र को कौन कहां ले गया है इसके विषय में आप जो कुछ भी जानते हो मुझे बताइए। आप मुझ पर अविश्वास न करें। यदि तुम्हारा साथी मरा न हो तो मैं दो तीन दिन में उसे आपके सामने ला खड़ा करता हूँ। पर तानाजी ने उसे कुछ भी न बताया कारण उसे शंका हुई कि न जाने यह किस लिए यह सब पूछ रहा है। पर वह व्यक्ति वहां से तुरन्त रवाना हो गया। और जाते समय तानाजी से कह गया—अब आप तीन दिन यहां से न हिलिए।' यह चेतावनी दे वहां से वह रवाना हो गया।

———

(२३)

अहमद का षड्यंत्र

वह काला व्यक्ति तानाजी के मकान से निकलकर सीधा अपने निवासस्थान पर गया। वहां वह थोड़ी देर बैठकर विचार करता रहा सोचते सोचते वह स्वयं ही ताली बजाकर बोला—वाह ! मैं भी क्या बेवकूफ हूँ। यह बात तो मुझे कभी समझ लेना चाहिए थी। यह कार्य रणदुल्लाखां के सिवा और किसी का नहीं हो सकता। आज दो मास हो गए वहां से वह निकल भागने के लिए कितने प्रयत्न कर रही है। पर यह नीच उसे अपनी आंखों से परे नहीं होने देना चाहता है। और अब इस प्रकार अपने मार्ग का कांटा दूर करने का उसे यह बहुत अच्छा मौका मिला है ? तो फिर लड़ने के लिए अब एक और शत्रु पैदा होगया। इस प्रकार एक के बाद एक विचार उसके दिमाग में उठ रहे थे। इसके बाद उन्होंने अपने एक अत्यन्त विश्वासपात्र नौकर को बुलाकर कहा—रणदुल्लाखां ने उसे कहां और किस हालत में रखा है इसका तुझे पता लगाना होगा। अब दो दिन हमें इसी कार्य में लगना होगा।'

पर अब इस काले व्यक्ति को छोड़ हम सीधे रणदुल्लाखां की ओर बढ़ें। रणदुल्लाखां जानता था कि सैय्यदुल्लाखां उसे नीचा दिखाने के लिए दिन रात प्रयत्न कर रहा है। पर जब तक वह बादशाह से निमकहरामी नहीं करता है तब तक बादशाह उसकी कोई बात न सुनेगा। इसका उसे विश्वास था। इसी कारण रंगराव अप्पा को पकड़ कर लाने के बाद भी उसे यह आशा थी कि एक न एक दिन वह उसे फिर किलेदारी वापस दिला सकेगा। पर यह काम किस प्रकार पूरा हो

यह वह नहीं समझ पा रहा था। बादशाह के पास एक दो बार इस विषय में उन्होंने बात चलाई थी पर बादशाह ने उस ओर तनिक भी ध्यान न दिया। और उसी समय बादशाह ने सैय्य-दुल्लाखां की ओर अर्थ भरी दृष्टि से देखा। तब उसे प्रश्न पड़ गया कि आखिर यह मामला क्या है और इस मुसीबत से किस प्रकार छुटकारा मिले इसी बात के सोचने में वह व्यस्त था।

इतने में अहमद ने अन्दर आकर कहा—आज चार दिन हो गए तब मैंने एक बड़ा भारी काम किया है। आप उसे सुन बहुत खुश होंगे। सरकार हम नौकर आंखें रहते हुए भी अंधों की तरह काम करते हैं पर इतने पर ही आप हमें अन्धा न समझें। हमसे आप कितनी बातें छिपाएं पर वे हम से छिप नहीं सकतीं। आप दिन दिन दुबले हो रहे हैं इसका क्या कारण है उसे मैं जानता हूँ? सरकार आप जिस परी से मोहब्बत करते हैं उसके पहिले खाविन्द को पकड़ कर मैंने तहखाने में बन्द कर रखा है।

उस परी का पहिला खाबिन्द? कौन? कौन है वह? वह तुम्हें कहां मिला? अहमद तू क्या कह रहा है क्या तू इसका मतलब समझता है?'

हां जी अच्छी तरह समझता हूं मैं ही उसे पकड़ लाया हूं।'

'किसे! किसे! कहां और कैसे गिरफ्तार किया?' रण-दुल्लाखां ने अत्यन्त क्रोधित हो पूछा।

जहांपनाह! यहीं बीजापुर में! वह साधु का भेस बनाए घूम रहा था। आपके महल के सामने खड़ा होकर आपकी उस परी को घूर घूर कर देख रहा था। मैंने उसे पहिचान लिया। और धोखा देकर पकड़ लाया हूँ।'

नानासाहब और बीजापुर में होंगे। रणदुल्लाखां को इस बात पर विश्वास ही नहीं होता था कि जिसे पकड़ने के लिए बादशाह ने हुक्म दे रखा है और जिसकी वजह से उसके बाप पर बादशाह इतने नाराज हुए हैं वह व्यक्ति स्वयं ही बीजापुर आए। उनका चित्त अस्वस्थ हो गया। वह अत्यन्त उद्विग्न हो उठा। उसके दिमाग में सुविचार और कुविचारों का द्वन्द्व छिड़ गया। फिर उसने सोचा—इसी प्रकार कुछ और दिन बीत जाने दो। भलाई करना अपने हाथ में है। उसे छोड़ कर उन दोनों की मुलाकात करा दूंगा। और उन्हें कहीं दूर भेज दूंगा बस!' पर बेचारे का वह भ्रम था। उत्तम कार्य मन में आते ही यदि करना सम्भव होता तो संसार का नकशा कुछ और ही होता। एक बार जिस प्रकार दलदल में फंसा व्यक्ति नीचे धंसता चला जाता है उसी प्रकार रणदुल्लाखां की हालत हुई। आखिर उसने यह निश्चय किया कि नानासाहब को आज वहीं पड़ा रहने दिया जाय। इस प्रकार विचार कर उसने अपने मन को तनिक शान्त किया। अहमद ने वह सब हालत देखी मालिक उसकी बात मान लेगा यह वह ताड़ गया। और उसने निश्चय किया कि मालिक को बताए बिना ही वह उसका काम तमाम कर देगा।

अहमद दूसरे ही दिन फातिमा से मिला और बोला—आज रात को ही हम उसे इस संसार से विदा कर देंगे। तुम मुझे इस कार्य में मदद करो। और मदद इतनी ही कि जिस प्रकार उसे यहां ले आई हो उसी प्रकार उसकी लाश यहां से बाहर निकालने की व्यवस्था कर देना। अगली व्यवस्था मैं करता हूं।'

उसका वह भयंकर विचार सुन फातिमा के सारे शरीर पर रोमांच हो आया। और वह एक दम बोली—नहीं इस काम में मैं तेरी मदद नहीं करूंगी।'

पर फिर वह मिन्नतें कर बोला— पर फातिमा मालिक चाहते हैं कि ऐसा ही हो।' पर फातिमा का ध्यान इस ओर नहीं था। वह सोच रही थी किस प्रकार वह अहमद को फंसाकर स्वयं निकल जाय। उसने सोचा कि यह यदि वह अपने पति के कानों तक पहुंचा दे तो सम्भव है कि वे ऐसे काम न होने दें। इस प्रकार अनेक विचार उसके दिल में उठ रहे थे। पर फिर उसे यह डर लगा कि यदि वह यह सब बताती है तो उसका न जाने अच्छा या बुरा परिणाम हो। उस दिन शाम को ही वह न जाने कहां गायब होगई। और आठ घड़ी रात बीतने पर घर लौटी। जब रात को सब सोगये तो करीब ग्यारह घड़ी रात बीते उसने पिछला दरवाजा खोल किसी व्यक्ति को अन्दर लिया। आधीरात बीते अहमद वहां आया और दोनों ही उस स्थान पर गए जहां नानासाहब को बंद कर रखा था। उनके पीछे पीछे किसी और व्यक्ति की भी छाया दिखाई दे रही थी।

---

[२४]
नाना साहब मुक्त हुए

जिस दिन से नानासाहब इस स्थान पर बन्द कर दिए गए थे उस दिन से हजारों विचार उनके मस्तिष्क में चक्कर काट रहे थे। जब कभी दरवाजे की आवाज होती तो उसे चिन्ता उत्पन्न होती थी कि न जाने अब क्या होगा। अपने शिकार को एक बार अच्छी तरह देखा जाय यह सोच अहमद ने लालटेन उठाकर नानासाहब के मुंह की ओर गौर से देखा। और कहा—अबे बेवकूफ उठ खड़ा हो। आज मैं तेरा काम तमाम

किए देता हूं। तेरी औरत तुझे छोड़ जिसके पास आकर रही है वह क्या तुझे कभी छोड़ देगा ?'

उसके ये शब्द सुनकर क्षणभर तो नानासाहब को ऐसा लगा कि संसार पाताल में समा गया है। पर वह निराशा तुरन्त ही दूर हो गई और वे अत्यन्त क्रोधित हो बोले—मेरे पास हथियार नहीं है इस कारण ही तुम जो जी में आए वह मत बको। पर जो कुछ अभी तूने कहा है उससे मेरा बहुत भला हुआ है। इसलिए अब मुझे पता चल गया है कि मेरा शत्रु कौन है। आज या तो तूही मुझे मार डाल या मैं ही तुझे मार कर तेरे हरामखोर बेईमान मालिक की भी दुर्गति करता हूं।' यह कह नानासाहब ने तुरन्त उस पर हमला किया।

पर अहमद ने झठ से तलवार निकाल कर आगे करते हुए कहा—वाह ! खूब ! मुझे मारकर मेरे मुर्दे पर से तो तुम जा न सकोगे पर मैंने तुम्हें मारकर गाढ़ डालने की पूरी व्यवस्था करदी है।'

नानासाहब ने एक दम हमला कर अहमद की कमर पकड़ ली। अहमद ने बार करने के लिए अपनी तलवार उठाई पर उसका वह हाथ किसी प्रकार भी नीचे नहीं आ रहा था। उसे ऊपर ही ऊपर एक बड़े भारी डील डौल के व्यक्ति ने पकड़ रखा था। अहमद नानासाहब के झटके से जमीन पर गिर पड़ा। नानासाहब ने उसे चित किया और वे उसकी छाती पर चढ़ बैठे। अब हालत बदल गई थी। आखिर अहमद खवास ही था। वह घिघियाने लगा। नानासाहब ने उसे एक और घूंसा मार कहा—बेटे खवास ! तुझे मारकर मैं पाप नहीं कमाना चाहता। जाओ तुम्हें छोड़े देता हूं। पर तू मेरे पीछे आ न सके इसलिए वैसी व्यवस्था करता हूँ। यह कह उसे दो तीन घूंसे

मारकर बेहोश कर दिया। और वहां से भाग जाने के लिए नाना-साहब आगे बढ़ने ही वाले थे कि उनके सामने एक व्यक्ति आकर खड़ा हो गया। यह और कोई व्यक्ति नहीं था जिससे बदला लेने का नानासाहब ने निश्चय किया था वही रणदुल्ला खां सामने खड़ा था।

रणदुल्लाखां की वह स्थिति बहुत देर तक न रही। फिर अपनी वात काटने लगी। वह सोचने लगा वह न जाने किस चक्कर में फंस गया आज तक के निष्कलंक जीवन पर उसने दाग लगा लिया यह सोच उसने अहमद को बुलाने के लिए एक नौकर को भेजा। पर अहमद का वहीं पता नहीं था। उसे चिन्ता हुई कि अहमद ने कहीं नानासाहब को मार तो नहीं डाला आखिर बहुत रात बीते एक नौकर ने आकर समाचार दिया कि अहमद और फातिमा एक तहखाने की ओर गए हैं। रणदुल्ला खां तुरन्त उठा और तहखाने की ओर आया।

पहिले ही नानासाहब क्रोधित थे और उसमें रणदुल्लाखां के विषय में उनका मन कलुषित हो चुका था। इसलिए रण-दुल्लाखां को देखते ही आगा पीछा न सोच उन्होंने क्रोधित हो कहा—ऐ शैतान अब तू मुझे चुपचाप यहां से चला जाने दे। तेरे सारे पापों का मुझे पता चल चुका है। अब तक तूने मेरी इतनी बिडंबना की है कि तेरे सामने आते ही मुझे तेरा खून कर तेरे रक्त से स्नान करना चाहिए था। पर··पर अभी उसका समय नहीं आया है।'

यह सब हालत और नाना साहब की कठोर बातें सुन रणदुल्लाखां हक्का-बक्का रह गया। इतने ही में एक मधुर पर करुणाजनक शब्द सुनाई दिया, उसने घूम कर देखा तो उसकी बहन मेहरजान फातिमा का हाथ पकड़ कर खड़ी थी। उसने

उस ओर आश्चर्य से घूम कर कहा — मेहरजान तू यहां कैसे आई। अभी इस सब विचित्र बातों पर वह विचार कर ही रहा था कि नाना साहब और उसका साथी वहां से गायब हो गए और इस प्रकार नाना साहब बंधन मुक्त हुए।'

दूसरे दिन रणदुल्लाखां ने फातिमा से पूछा कि इतनी रात बीते मेहरजान जनानखाने से यहां कैसे पहुँची। उसने एकदम हाथ जोड़ कर दीन हो कहा — सरकार यदि गरीब दासी को माफ करें तो मैं सारी बातें कहती हूं। अहमद ने मुझे यह बताया कि आपने उस मराठा को मार डालने की आज्ञा दी है, पर मुझे इसपर विश्वास नहीं होता था। इसलिए सारी बातें बीबी साहिबा से अहमद से कहलवा कर उसे बचाने का उपाय करने का मैंने निश्चय किया और बाद में सारी बातें आप से कहने का मैंने निश्चय किया था। बीबी साहिबा ने यह बात मान ली और जैसा आपने देखा वे वहां आई थी।' फातिमा ने जो कुछ कहा, उसपर रणदुल्लाखां को विश्वास नहीं हुआ यह बात उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। पर उसने उस समय कुछ भी नहीं कहा।

नाना साहब और वह काला व्यक्ति उस हवेली से बाहर निकलने पर इतनी रात बीते भी अपने साथियों से मिलने चले। उस काले व्यक्ति ने जिस प्रकार तानाजी को बताया था, उस प्रकार उन्होंने तीन दिन तक वह मकान नहीं छोड़ा था। तानाजी ने इस समय यह जानकारी प्राप्त कर ली थी कि राजा विलासी है और वह एक स्त्री के जाल में फंसा हुआ है और इसी कारण सैय्यदुल्लाखां की बातें बादशाह इतनी मानता है। अब जिस प्रकार निश्चय किया गया है, उसके अनुसार यदि एक बार फतह कर लिया जाय तो इधर पता भी न चलेगा। इस प्रकार

उन्हें बीजापुर की सारी राजनीति का पता चल चुका था और यदि आज नाना साहब मुसीबत में न फंसे होतें तो निश्चय ही वे कभी के यहां से चले जाते।

उस काले व्यक्ति के बताने के अनुसार तीन दिन तो बीत गये। तीसरा दिन बीते एक पहर रात बीती थी। अब भी उस काले व्यक्ति का कोई समाचार नहीं आया था, यह सोच ताना जी उदास हो रहा था। पर आधा रात बीतते ही वह काला व्यक्ति तथा नाना साहब उसके सामने प्रत्यक्ष आ खड़े हुए। क्षण भर ताना जो को यह भी शंका हुई कि वह जग रहा है, या नींद में है। उसे यह भी न सूझा कि वह उस काले व्यक्ति का अहसान मानता। एक दूसरे की बातें सुनने और सुनाने में एक घड़ी बीत गई। नाना साहब ने अत्यन्त क्रुद्ध हो अपनी सारी हकीकत कह सुनाई। नाना साहब का मन साफ हो गया और उन्होंने तानाजी से कहा — तानाजी ! मैंने अपने आपको शिवाजी के चरणों पर अर्पण कर दिया है। और जब तक सुल्तानगढ़ को जीत नहीं लेतें, तबतक तो मैं उनकी सेवा में रहूंगा ही। पर जब रणदुल्लाखां ने मेरा सारा सुख मिट्टी में मिला दिया तो मैं भी इसका बदला लूंगा। मुझे इस बीजापुर में एक ही दिन और रह लेने दो, उसके बाद मैं तुम्हारे साथ चलता हूं। जो कुछ हुआ है, उसके विषय में सारी बातें पिताजी से कहना अत्यन्त आवश्यक है। एक बार मैं उन्हें बता देना चाहता हूं कि वे कसाई के हाथ पड़ गए हैं और वह मीठी छुरी से उन्हें हलाल कर रहा है। इस प्रकार उनकी आंखें खोले बगैर मुझे यहां से जाना उचित नहीं मालूम हो रहा है।'

यह कह वे अपने सहायता करने वाले व्यक्ति की ओर घूम कर बोले — महाराज ! आज तक आपने मुझे सहायता

की। वैसी ही थोड़ी और मदद कीजिये और मेंरे पिताजी से मुझे एक बार मिला दीजिए।' वह व्यक्ति नाना साहब की वह बात सुन तनिक मुस्कराया। उस मुस्करान में तनिक उदासी थी। तानाजी इस सबका कुछ भी अर्थ समझ नहीं पा रहा था।

---

(२५)

पिता पुत्र की भेंट

'समान शीलेशु व्यसने शुरुख्यं' के अनुसार ऐसे दो व्यक्तियों में प्रेम संबन्ध तथा मैत्री होना स्वाभाविक ही है। इसी नीति के अनुसार नानासाहब तथा उस काले व्यक्ति में मैत्री थी। नानासाहय ने जब पिता से मिलने की इच्छा प्रकट की थी तो वह व्यक्ति म्लान हंसो हंसा था। वहुत देर तक वह चुप रहा बाद वह धीरे से बोला—नानासाहब अब आपके दोस्त के सामने ही मैं आपसे कुछ बातें बता रहा हूं। यदि उन पर ध्यान दें तो अच्छा हो। तुम अपने पिताजी को अच्छी तरह जानते हो। इसलिए यदि आप दिल खोलकर भी सारी बातें कह दें तो भी उन्हें तुम्हारी बात पर विश्वास न होगा। रण-दुल्लाखां से उनकी घनिष्ट मित्रता है इसलिए उनके विरुद्ध आप चाहें जो कहें तो भी वे सच न मानेंगे। आपको बीजापुर के विषय में जो कुछ मालूम करना था वह मालूम हो चुका है। इसलिए आप आवश्यकता से अधिक अब यहां न ठहरे। अब आप यहां से जायं तो अच्छा हो।'

उस व्यक्ति को सारी बातें नानासाहब चुपचाप सुन रहे थे। उसका प्रत्येक अक्षर सच्चा है यह भी वे जानते थे। फिर भी वे अपनी जिद पर अड़े रहे। वह काला व्यक्ति समझ

गया कि पिता पुत्र की भेंट करानी ही होगी ! यह सोच उसने कुछ समय के लिए वहां से जाने की आज्ञा मांगी। फिर थोड़ी देर के बाद लौटकर उसने कहा—आज पहर भर रात रहे आप तयार रहें। उस समय न वे कहीं जाते हैं और न उनके पास कोई आता है। उसी समय मैं आपको उस हवेली में ले जाऊंगा। यह कह वह वहां से चला गया।

इस प्रकार अपने पिताजी से भेंट होगी यह सोचकर नाना साहब को संतोष हुआ। निश्चित समय पर वह काला व्यक्ति नानासाहब को लेने आया। वह अपने साथ एक मराठा सरदार को शोभा देने वाली पोशाक लाया था। उसे पहिन नानासाहब निर्भय हो बाहर निकले और रंगराव अप्पा की हवेली में पहुंचे। रंगराव को जब मराठा सरदार के आने की सूचना मिली तो उन्होंने सोचा इतनी रात गए मुझसे कौन मिलने आया है। पर उसे देखते ही उन्होंने तुरन्त भाव बदल कर कहा—कौन आप ? इतनी रात बीते आप मुझ से कौनसी गुप्त मंत्रणा करने आए हैं।'

मैं आपका लड़का नाना हूं। ऐसा ही कुछ पूछना और बताना था इसलिए……'

मेरा लड़का ? मेरा लड़का तो मर गया ? अब उसका मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। जिस दिन वह मेरे मुंह पर कालिख पोत कर चला गया उसी दिन से मेरा उसका सम्बन्ध नहीं रहा और उसी दिन से वह मेरे लिए मर गया। तुम यहां से चले जाओ। तुम्हारा वह कलंकित मुंह मैं देखना नहीं चाहता। नहीं तो इसी क्षण तुझे पकड़कर बादशाह के सामने ले जाऊंगा। बाहर कौन है…।

नानासाहब तनिक भी विचलित न हो बोले— आप ऐसा कहेंगे—नहीं नहीं वैसा करने को भी तैयार होंगे यह बात मुझे मालूम थी अप्पा साहब आप स्वामिभक्ति कीजिए पर कहां जहां स्वामी सेवक का ध्यान रखे। आज तक आपने अपने विचारों की कृति या स्वप्न में भी स्वामीद्रोह नहीं किया। फिर आपकी यह दशा क्यों हुई ?'

मेरी यह स्थिति ? यह स्थिति क्यों हुई इसके विषय में तू पूछता है ? निर्लज्ज, बेशर्म तुझे ऐसा प्रश्न करते शर्म नहीं आती ? तू यह प्रश्न पूछ रहा है ? मेरी यह स्थिति इस कारण हुई कि तुझ जैसा कुलकलंक पुत्र मेरे घर में पैदा हुआ। तू मेरे सामने आया है इस कारण मोहवश मैं अपने कर्तव्य को भूल जाऊंगा क्या तू यह सोचता है ? पर इस बात को स्वप्न में भी न सोचना अब तक तेरी मुश्कें बांधकर हुजूर के सामने नहीं भेजा है इसमें ही अपनी खैर समझ।'

जाता हूँ ! जाता हूँ ! अप्पासाहब पर जिसे तुम अपना पक्का दोस्त समझते हैं वहीं तुम्हारा कट्टर शत्रु है। उसीने तुम्हारे कुल को तुम्हारे नाम को कलंक लगाया है।'

चल निकल निकल बेईमान कुलांगार। अब एक क्षण भर भी मेरी आंखों के सामने मत खड़ा रह। जो मेरे दोस्त वे तेरे शत्रु और जो मेरे दोस्त हैं वे तेरे दुश्मन हैं। यह बात बिल्कुल सत्य है।'

अप्पा साहब की यह बात सुनकर नानासाहब का क्रोध अनावर होगया। वे दुख, द्वेष तथा क्रोध से पागल से हो गए। वे जो कुछ अन्तिम बात कहने आए थे वह इतने जोरदार शब्दों में उनके मुंह से निकली और उसे सुनते ही अप्पा

साहब का चेहरा एक दम बदल गया। उन्होंने कहा—असम्भव।! असम्भव ! रणदुल्लाखां कभी ऐसा नीच नहीं बनेगा।'

'और यदि उसने ऐसा किया हो तो' नाना साहब ने दांतों से ओंठ काटते हुए कहा।

अप्पा साहब इस विषय में कुछ कहना चाहते थे, पर इतने ही में किसी और व्यक्ति ने कहा — पर उसने ऐसा नहीं किया है और इसके लिए चाहे जिस प्रकार इतमीनान करा सकता हूँ।'

यह व्यक्ति और कोई नहीं स्वयं रणदुल्लाखां ही था। नाना साहब ने उसे पहचान लिया और वह अत्यन्त क्रोधित हो उठा और बोला — ठीक है ! अप्पा साहब, अब तक मैं जो कुछ कर सकता था, मैंने किया। आप को अब भी अपने शत्रु का ही विश्वास अधिक है। अच्छा मैं जाता हूं, पर इन्हें भविष्य में सावधान रहना चाहिए। यह कह वह वहां से चला गया।'

अप्पा साहब इस सब पहेली को न समझ सके और हक्के-बक्के हो गये। बहुत देर के बाद रणदुल्लाखां ने कहा — अप्पा साहब मैं रणदुल्लाखां अब साफ-साफ कहता हूं, इसके लिए माफ कीजिए। आपका मैंने जो अपराध किया है, उसे बता कर तुम से माफी मांगने आया हूँ। जो कुछ हुआ है, उससे आगे मेरे हाथ से और कोई पाप नहीं हुआ। खुदा ने मुझे समय पर ही चेतावनी दी। अप्पा साहब मैं आपको सारी बातें कह सुनाता हूं। आप सुनें सुन लीजिए।' यह कह उसने सुल्तानगढ़ की ओर जाते समय किस प्रकार उनको एक तरुण मराठा मिला और उसे वे किस प्रकार बीजापुर ले आए इत्यादि बातें जैसी हुई थीं, वैसी ही उसने कह सुनाईं। अप्पा साहब वह तरुण मराठा और कोई नहीं आपके पुत्र की स्त्री है।

उसके ये शब्द सुन कर अप्पा साहब अत्यन्त क्रुद्ध हो, लाल-लाल आंखें कर वे रणदुल्लाखां की ओर देखते रहे। रणदुल्ला खां इस सबके लिए तैयार था और इसी कारण उसने कुछ समय रुक कर फिर कहना प्रारम्भ किया — अप्पा साहब मेरे ये शब्द सुन कर आप क्रोधित होंगे, इतना ही नहीं, क्रोधित हो मुझे मारने दौड़ेंगे, इसकी मुझे आशा थी। पर मैं इतना ही बताना चाहता हूं कि वह पतिव्रता है। उसके सतीत्व को कलंक लगने वाली कोई बात नहीं हुई है। उस जैसी पतिव्रता स्त्री मिलना दुर्लभ है। वह मुझे माता के समान हैं। उसको किसी प्रकार का कष्ट न हो और उसके लिए मुझे जो भी कष्ट हों, मैं उठाने को तैयार हूं।' यह कहते-कहते रणदुल्लाखां रुक गया। उसका कण्ठ भर आया था और उसके मुंह से बोल नहीं निकल रहा था। उसे जो बात हो गई थी, उसके विषय में अत्यन्त खेद हो रहा था। वह कुछ कहने ही जा रहा था कि अप्पा साहब ने कहा — खान साहब तुम्हारी बात पर मैं विश्वास नहीं करता हूं यह बात नहीं है। आप उसे अपनी मां कह रहे हैं, इसी में सारी बातें आ गईं। इस कारण अब इस विषय में कुछ कहना अनुचित होगा। आपको उसका पश्चात्ताप है, इसलिए अब इस विषय में कुछ भी कहना व्यर्थ है।' यह कह अप्पा साहब स्वयं चुपचाप बैठ गये और रणदुल्लाखां भी कुछ समय चुपचाप बैठा! आगे क्या कहा जाए, यह सूझ नहीं रहा था। पर अन्त में उसने कहा—'अप्पा साहब अब मैं आपको एक आनन्ददायक समाचार सुनाने वाला हूँ। आप यहां से कल ही छोड़ दिए गए। पता नहीं कारण क्या है पर हरजी ने मुझे पूछा—सुलतानगढ़ के किलेदार की क्या हालत है? 'मैंने उन्हें बताया ठीक है।' यह सुन उन्होंने कहा—

परसों उनको यहां ले आओ मैं उन्हें फिर वहां की किलेदारी सौंपता हूं। अब आप पर का संकट दूर हुआ। आप जब जायं तो मेरी एक विनती है। मेरी बहन मेहरजान दिन-ब-दिन सूखती जा रही है और उसने सुल्तानगढ़ जाने की जिद्द ठानी है। अब आप जा रहे हैं, वो जा रही है इस कारण मेहरजान तथा उसकी दासी को मुझे भेजने में तनिक भी भय नहीं है। आप उसे अपनी लड़की के समान ही पालेंगे, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।' यह कह वह वहां से चला गया।

रणदुल्लाखां के जाने के बाद अप्पा साहब की स्थिति विचित्र हुई। उस दिन जो सारी घटनाएं हुईं, उससे बूढ़े को यह शंका होने लगी कि वह जग रहा है या स्वप्न देख रहा है और ऐसी ही स्थिति में सवेरा हो गया। सवेरे ही बादशाह ने उन्हें बुला कर कहा — लड़के के मोह में फ़ंस कर आप नमक-हराम न बनें और यदि वह फिर आप को मिले तो उसे समझाने का प्रयत्न करना और यदि न माने तो उसे यहां भेज देना।'

इस विषय में अप्पा साहब कुछ कहने ही वाले थे कि रणदुल्लाखां ने उनका मन डांवाडोल होते देख कहा — हां! हां! इस प्रकार करने के लिए अप्पा साहब कभी नहीं चूकेंगे।'

इस प्रकार बादशाह ने उन्हें आज्ञा दे और कुछ अधिक अधिकार दे उन्हें विदा किया। पर इधर दो दिन में एक विचित्र घटना हुई। रणदुल्लाखां को पश्चात्ताप होते ही उन्होंने उस सरदार पर से प्रतिबन्ध कम कर दिए और उसका फायदा उठा कर वह सरदार तथा उसके साथ की दासी वहां से गायब हो गए। दूसरे दिन अप्पा साहब इन सब लोगों के साथ रवाना होने वाले थे कि उन्हें यह गायब होने का समाचार मिला। उसे

सुनते ही उसकी जो हालत हुई, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। अब यह अप्पा साहब को जब यह मालूम होगा तो वे क्या समझेंगे ? वे उसके शब्दों पर विश्वास भी करेंगे या नहीं यह सोच वह अत्यन्त उद्विग्न हुआ।

---

(२६)

वापसी

अपने बाप के घर से वापस आने पर नानासाहब अपने साथियों के पास आए। उस समय उनका मिजाज खराब हो रहा था। उनका चेहरा देख उनके साथी समझ गये कि हजरत जिस काम से गए थे वह पूरा नहीं हुआ। इस कारण अब इसे शीघ्र ही यहां से ले जाना चाहिए यह सोच उन्होंने उसी दिन बीजापुर छोड़ने का निश्चय किया। पर नानासाहब वहांसे जाने को तैयार नहीं थे और उन्होंने वहीं रह बदला लेने का निश्चय किया पर वे लोग कब मानने वाले थे। उन्होंने उसे बहुत समझाया कि यह समय तुम्हारा बीजापुर में रहने का नहीं हैं। कारण उन्होंने अपने शत्रु से बदला लेने की बात उसके मुंह पर ही कह दी है इस कारण वह होशियार रहेगा। अपने शत्रु को कुछ दिन गाफिल रखना चाहिए तभी मतलब सिद्ध होगा नहीं तो उस कार्य में सफलता मिलने की सम्भावना नहीं। उनके उस गुप्त सहयोगी की भी यही राय थी इस कारण उन्होंने एक क्षण की देर न कर वहां से जाने का निश्चय किया। पर बाद में यह निश्चय हुआ कि एक [illegible] यदि सारे लोग एक साथ जाएंगे तो निश्चय ही किसी को शक होगा इस कारण यह निश्चय हुआ कि शहर से ७ कोस पर एक गांव है वहीं

सारे जमा हों। और इस प्रकार वे चारों चार ड्योढ़ियों से शहर के बाहर निकले।

ये लोग लौटे जा रहे हैं यह जानकर नानासाहब के साथी ने उन्हें बताया कि निश्चित स्थान की ओर किधर से और कैसे जाना होगा और इसके बाद वह वहां से तुरन्त गायब होगया। नानासाहब को अपना घर छोड़ने के पश्चात अनेक मुसीबतें उठानी पड़ीं तथा अनेक अनुभव आए। इस कारण रास्ता चलते समय उनके दिल में अनेक विचार उठ रहे थे। इतने में पौ फटने लगी। और नानासाहब की दृष्टि सहज ही एक खेत में एक पेड़ के नीचे बैठे दो व्यक्ति की ओर गई। उन्हें देखते ही नानासाहब को बहुत बड़ा सदमा पहुंचा और वे आंख तरेर कर उनकी ओर देखने लगे।

पेड़ के नीचे बैठं हुए दोनों व्यक्ति कौन हैं यह बात पाठक समझ गए होंगे। अब मौका विकट आगया था। नानासाहब की स्त्री अपने उसी नकली वेष में थी। दिन चढ़ आया। नाना साहब की स्त्री ने उन्हें पहिचाना और वह तनिक हंसकर खड़ी हो गई। पती साधु के वेष में और स्त्री पुरुष का वेष बनाए उसके सामने लज्जावश यह दृश्य अद्भुत था जिसकी कल्पना पाठकों को होना असम्भव है।

इस समय नानासाहब के दिल में कितने प्रकार के विचार आ रहे थे उसकी भी कल्पना पाठक नहीं कर सकेंगे। जिस स्त्री को मुसलमान पकड़ ले गए और उसे उन्होंने अपने आश्रम में रखा अर्थात जिस स्त्री ने कुल को कलंकित किया वही इस समय उनके सामने खड़ी है। उसे देख के सोच रहे थे कि पुरातन काल के रजपूतों के समान उसकी हत्याकर उन्हें आगे बढ़ना चाहिए या उसकी ओर बिना देखे ही आगे बढ़ जाना चाहिए।

इधर उनकी स्त्री और उनकी दासी की स्थिति भी अजीब हो रही थी। इस बीच में क्या हुआ था इसका उस सरदार को तनिक भी पता नहीं था इस कारण उसे आश्चर्य हो रहा था कि यह साधु इतनी क्रुद्ध दृष्टि से उसकी ओर क्यों देख रहा है। इसलिए उससे अपनी असलियत छिपा रखनी चाहिए और थोड़ो देर इससे हंसी करना चाहिए यह सोच उसने अपनी दासी को साधु बाबा को बुलाने के लिए भेजा।

दासी भी हंसी उड़ाने के लिए ही हंसती हुई उस साधु के पास जाकर बोली—साधु बाबा! मेरे मालिक जो पेड़ के नीचे बैठे हैं आपको बुला रहे हैं।' पर इतने शब्द कहते कहते वह घबरा उठी। और यह समझ कर कि साधु ने उसे पहिचान लिया है वह घबराकर हकलाते हुए बोली—मालकिन हैं पर वे मसखरी...

वह घबराई है यह देख उन्होंने कहा—चल भाग यहां से तू और तेरी मालकिन जाकर जल मरो। एक बार कलंक लगने पर ऐसा कलंकित मुंह दिखाने के वजाय तुम लोग क्यों न जल मरी।' यह कह व जाने लगा। पर न जाने क्या दिल में विचार आया और वह उस पुरुष वेषधारी स्त्री की ओर घूमा। और वह उसके पास जाकर गम्भीरता से बोला—तू अपने असली वेष में मेरे सामने नहीं आई अच्छा ही हुआ। उस वेष में मैं तुम्हारे लिए और तुम मेरे लिए मर चुकीं। तूने मेरा कुल कलंकित किया, इज्जत धूल में मिलाई, और मेरी समस्त आशाओं पर पानी फेर दिया। अब फिर अपना कलंकित मुंह मुझे न दिखाना बस इतनी ही मुझ पर दया करना।'

उस वेषधारी की इस सब का कुछ भी मतलब न समझा। वह अत्यन्त भयभीत ही उसकी ओर देखती रही। वह जब जाने लगा तो उसके मुंह से केवल इतना ही निकला 'क्यों?'

अभी इतनी ही बात उसने कही थी कि उसकी दासी वहां आई और उसने अपनी मालकिन को आगे कुछ कहने ही न दिया। वह बोली—ठीक है। और अधिक बोलने का यह समय नहीं है और आप सारी बातें सुनेंगे भी नहीं। हम जाते हैं। और आप कह रहे हैं वैसा कलंक मालकिन ने नहीं लगाया है ऐसा जब आपका विश्वास हो जायगा उसी दिन अब मालकिन आपको दिखाई देगी। नहीं तो वे चिता में भस्म हो गई हैं ऐसा समझना।'

उसकी यह बात सुन नानासाहब पर कुछ अजब परिणाम हुआ। वे कुछ कहने भी वाले थे। पर कुछ लोग इस रास्ते से जा रहे थे उन्होंने देखा कि साधुबाबा से लड़ाई हो रही है और वे इस ओर झुके। उन्हें आता देख साधुबाब वहां से चम्पत हुए। थोड़ी देर में वह मराठा सरदार तथा उनकी स्त्री को भी वहां से चल देना पड़ा।

उस क्रोध में नानासाहब थोड़ी ही देर में निश्चित स्थान पर पहुंचे और अपने साथियों से मिले। मंजिल पर मंजिल करते हुए वे पूना के पास के हमेशा के मिलने के स्थान पर पहुंचे। उन्होंने अपने आने के विषय में समाचार देने के लिए एक व्यक्ति आगे दौड़ाया। उस व्यक्ति के जाने पर तानाजी ने गांव में घूम कर वहां का समाचार जानने का प्रयत्न किया। उसे पता चला कि दादाजी कोणदेव तथा शिवाजी राजे में झगड़ा हुआ है और वे उसी दिन से गायब हैं। बात कैसी फूटती है यह ईश्वर ही जाने पर यह बात गांव का प्रत्येक व्यक्ति जानता था। तानाजी ने जब शिवाजी के जाने की बात सुनी तो वह व्यग्र हो उठा। उसने आवश्यक आराम कर नानासाहब को साथ लिया और निश्चित स्थान की ओर गया। जब वे

दो तिहाई रास्ता तय कर चुके तो उनका भेजा हुआ आदमी उन्हें मिला उसने उन्हें बताया कि शिवाजीराजा और स्वामीजी कहीं चले गए हैं और कहां गए हैं इसका किसी को पता नहीं है।' यह समाचार सुन तानाजी हताश हो बैठ गया । उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया ।

अब हम तानाजी को यही छोड़कर राजाजी के यहां की हालत मालूम करें। पाठक जानते ही हैं कि शिवाजी के बीजापुर जाने के मामले में स्वामीजी ने रुकावट पैदा की थी। राजनीति में हर समय अपने आपको संकट में डालना उचित नहीं। इतना ही नहीं वहुत सी ऐसी बातें हैं जो अपने हाथ से होने वाली ही उन्हें भी दूसरों से कराना चाहिए। इससे लोगों का बिश्वास जमता है और उनका प्रेम बढ़ता है। लड़ाई में यदि सेनापति प्रत्येक व्यक्ति को बचाने के लिए हर बार जायगा तो उसका कार्य होना सम्भव नहीं।' पर इन सब बातों से शिवाजी अपने निश्चय से नहीं हटना चाहते इस कारण स्वामी ने एक और तरकीब निकाली।

आज तक शिवाजी ने समर्थ की अनेक बार बातें सुनी थी। और वह अपना गुरु मानते थे । समर्थ उस समय तक इतने प्रसिद्ध नहीं हुए थे फिर भी उनकी इच्छा थी कि किसी क्षत्रिय के हाथ से गौ ब्राह्मण की रक्षा करूं कारण उन्हें अत्यन्त कष्ट दिया जा रहा है। और इसी कार्य के लिए उन्होंने अपने अनेक शिष्य इधर उधर भेज रखे थे। श्रीधर स्वामी ने भी अपने पंथ का उपदेश करना प्रारम्भ किया। शिवाजी का बचपन से ही इस ओर झुकाव था। इसी कारण वे विचार उनमें उसी प्रकार घर कर गए जिस प्रकार उत्तम जमीन में बीज पनपता है। शिवाजी की शिक्षा दादोजी कोण्डदेव के पास हुई

थी। पर उस शिक्षा की ओर तनिक भी उनका झुकाव नहीं था। कारण दादोजी हमेशा यही शिक्षा देते थे अपनी जागीर सम्भालो। बादशाहकी सेवा कर बाप दादों ने जैसा नाम कमाया है वैसा ही नाम उन्हें कमाना चाहिए। आप जिस प्रकार उत्पात करते हैं उससे आपके पिता को कष्ट होगा उससे आप पर और पिता पर बादशाह क्रोधित होंगे। इसलिए उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। दादोजी की शिक्षा यह थी और श्रीधर स्वामी ठीक इससे उल्टी बातें सिखाते थे।

———

[२७]

बस एक झलक

जिस वस्तु को पाने की उत्कट इच्छा हो और वह न मिले पर दिन-दिन उसका महत्व अधिक मालूम होता जाय, फिर उसको प्राप्ति की उत्सुकता कितनी बढ़ जायगी, यह प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है। शिवाजी की भी स्थिति ऐसी ही हो रही थी। बीजापुर का कुछ समाचार नहीं था, यह देख शिवाजी अत्यन्त उद्विग्न हुए थे और उस ओर से विमुख करने के लिए ही स्वामी ने परली जाने की बात चलाई। स्वामी की बात मान कर दोनों ही समर्थ के यहां जाने को तैयार हुए। रास्ते में स्वामी ने अपने अनेक वर्षों का अनुभव राजा को बताया। यात्रा करते करते वे एक गांव में पहुँचे। वे गांव के बाहर एक महादेव के मन्दिर में ही ठहर गए। राजा को अधिक ज्वर आया था, इस कारण वे पड़ कर सो गये। वहां से घाट साफ दिखाई दे रहा था, नदी के उस किनारे पर एक मन्दिर था। उस मन्दिर और घाट की ओर राजा की नजर गई ! उन्होंने वहां एक विचित्र

दृश्य देखा। शीघ्र ही उन्होंने अपनी तलवार उठाई। उस समय वे यह भूल गए कि उन्हें कल बुखार चढ़ा था। उन्होंने कपड़े उतारे, तलवार मुंह में दबा कर वे पानी में कूद पड़े। उस पार घाट पर पहुंच कर उन्होंने ब्राह्मण से पूछा कि क्या बात थी ?

ब्राह्मण ने कहा — महाराज मैं स्नान कर वहां बैठ मध्यान्ह संध्या कर रहा था कि यह खटीक गौमाता की आंतें ले आया और उसने वे मेरे पास ही पानी पर फ़ेंक दी। मैं वहां से उठा और फिर स्नान कर ऊपर जा रहा था तो इस दुष्ट ने मुझ पर फिर वे आंतें लाकर डाल दीं। महाराज अब ब्राह्मण और गौ-माता का कोई भी रक्षक नहीं है।'

राजा से आगे न सुना गया। उन्होंने तुरन्त तलवार निकाल कर उसके एक हाथ से उस मुसलमान को नीचे गिरा दिया। वहीं पड़े पड़े वह मुसलमान दया-याचना करने लगा। मुसल-मानों की यह आदत होती है कि वे जबर्दस्त के पैर पकड़ते हैं और कमजोर को कष्ट देते हैं। यही आदत उस खटीक की थी। राजा ने शरण आए को क्षमा करने का बीड़ा उठा लिया था। इस कारण उन्होंने खटीक को जान से मार देने का विचार भी दिल में न किया। वे बोले — तू इतनी दीनता दिखा रहा है, इस कारण तुझे छोड़ रहा हूँ, पर जिन हाथों से नीचता के कार्य करता है, तेरे वे हाथ मैं साबूत नहीं छोड़ूंगा, यह कह उन्होंने अपना वचन पूरा किया और वे आये रास्ते से फिर वापस गये। स्वामी के लौटने तक वे फिर अपने कपड़े पहिन तलवार ठिकाने रख अपने विस्तर पर लेटे हुए थे।

स्वामी जो सामान लाए थे, उससे उन्होंने भोजन इत्यादि बनाया और उसमें से कुछ शिवाजी को भी खिलाया और स्वयं खाकर शिवाजी के बीमारी के कारण आगे बढ़ने का विचार

स्थगित किया। शिवाजी को यह बात पसंद न थी, उन्होंने तुरन्त ही अपना विस्तर समेटा और कहा— 'इस कारण रुकने की आवश्यकता नहीं' स्वामी और शिवाजी अपने-अपने घोड़े पर सवार हो आगे बढ़े। मार्ग में शिवाजी ने नदी पार हुई सारी घटना के विषय में स्वामीजी को बताया !

उसे सुन स्वामी जी ने कहा — शिवबा, जो कुछ हुआ ठीक ही हुआ। आज का तेरा यह साहस कर्म ऐसे अनेक साहस कार्यों से महत्वपूर्ण है।' इसके बाद किसी ने भी इस विषय में कुछ भी नहीं कहा। इसके बाद वे मंजिल करते हुए दोनों ही परली पार पहुंचे। वहां पहुंचते ही उन्होंने मठ में समर्थ के विषय में पूछताछ की, पर किसी को यह पता न चल सका कि समर्थ कहां गये हैं। पर रात-दिन राजा के मन में समर्थ के दर्शनों की इच्छा थी या अन्य कोई कारण हो, पर उस दिन स्वप्न में आकर एक वृद्ध ब्राह्मण ने उन्हें कहा — बेटा तू इतना क्यों छटपटा रहा है ? स्वामी का तुझ पर अत्यन्त प्रेम है। पर यह समय तुझ से मंत्रणा करने का नहीं हैं। कम से कम एक विलस्त भूमि मुसलमानों से छीन कर फिर समर्थ के दर्शनों को आना। तेरे धैर्य शौर्य को सफलता मिले इसी कारण स्वामी यहां से ? मील की दूरी पर एक गुफा में बैठ पुरश्चरण कर रहे हैं। वहां तू अकेला जा तुझे उनके दर्शन होंगे।'

राजा का दृष्टान्त तथा धर्म पर अत्यन्त श्रद्धा थी। दूसरे दिन सवेरे पौ फटते ही वे उठे और श्रीधर स्वामी को बताए विना ही उन्हें स्वप्न में जो दिशा बताई थी वे उस ओर रवाना हो गये। वहां जाने पर उन्होंने देखा कि एक गुफा में एक पत्थर की आड़ में ठंडी जगह समर्थ कुबड़ी पर हाथ टेक कर बैठे थे और मुंह से राम-नाम का जयघोष हो रहा था। उन्हें देख

शिवाजी अनुभव करने लगा कि राज तृष्णा महत्वाकांक्षा सभी कुछ त्याग कर समर्थ के चरणों की सेवा ही करता रहूँ। उन्हें देख शिवाजी ने कहा — शहाजीराजा का लड़का शिवाजी आपको साष्टांग प्रणाम करता है, पर उसपर कृपादृष्टि कीजिये।' यह कह उन्होंने साष्टांग प्रणाम किसी।

वे किसी प्रकार भी उठ नहीं रहे थे। थोड़ी ही देर में किसी ने अत्यन्त मधुर शब्दों में कहा — गो ब्राह्मण प्रति पालन, मेच्छो से उनका रक्षण और स्वराज्य स्थापना यही तुम्हारा कर्तव्य है। इसी के लिए तुम्हारा अवतार हुआ है। तुम्हारा यही तप है और यही गुरू सेवा है। कार्य,प्रारम्भ होते ही प्रथम कार्यसिद्धि के समय मैं मिलूंगा। तबतक मिलने और बातें करने के लिए उत्सुक न होना। जल्दी करना है तो काम पूरा करने में करना।' यह सुनते ही शिवाजी चौंक कर उठ बैठे, पर पास कोई भी नहीं था। राजा ने आस-पास घूम कर देखा। पर उनका कहीं पता न चला। समर्थ अन्तर्ध्यान हो गये। उन्होंने सोचा उन्हें समथ का एक झलक ही दर्शन हुआ। इस विषय में उन्हें दुख हुआ। अब स्वामी की आज्ञानुसार कार्य करने में देर नहीं करनी चाहिए। इस प्रकार सोचते हुए हजरत मठ को वापस आए। जिस समय उन्होंने ये सारी बातें स्वामी से कहीं तो उन्हें अत्यन्त आश्चर्य हुआ। और उन्होंने एकदम कहा — राजा! तुम्हारे समान तुम्हीं भाग्यवान हो।' उसके पश्चात् वह दिन वह रात मठ में बिता कर वे दोनों वापस लौटे।

———

[२८]

पगली

नानासाहब जब अपने साथियों के साथ पूना लौटे तो उन्हें शिवाजी नहीं मिले यह बात पाठकों को स्मरण ही होगी। राजा साहब का पता नहीं है यह सुन नानासाहब को अत्यन्त दुख हुआ। एक दो दिन उनकी बाट जोहकर उन्होंने सोचा कि सुल्तानगढ़ की ओर जाकर वहां की हालत देख आनी चाहिए। उन्होंने तुरन्त तानाजी वगैर से आज्ञा ले और वे सुल्तानगढ़ की ओर रवाना हुए। इस प्रकार वे चले जा रहे थे कि एक दिन उन्होंने एक गांव के बाहर एक पेड़ के नीचे अपना डुपट्टा बिछाया और लेट रहे। थोड़ी देर बाद उन्हें यह अनुभव हुआ कि कहीं कोई मधुर स्वर में गा रहा है पर थोड़ी ही देर में वह स्वर बंद होगया और आर्त स्वर सुनाई देने लगा।

इतनी रात बीते यह गाना और रोना कैसा? इस बात का पता लगाने का उन्होंने निश्चय किया और उस प्रकार उस स्वर की ओर बढ़े। धीरे धीरे वे वहां पहुँचे और उन्हें पता चला कि यह शब्द एक झोंपड़ी में से आरहा है। जब उन्हें उस गाने के पूरे शब्द भी सुनाई दे रहे थे— किसने मसले फूल कहो किसने इनको है कुचला' उन्होंने झोंपड़ी के दरवाजे पर जाकर खटखटाया। पर किसी ने जल्दी दरवाजा नहीं खोला। नानासाहब बराबर दरवाजा भटभटा रहे थे। तब बहुत खींझकर अन्दर बैठे व्यक्ति ने दरवाजा खोला और बिना कुछ कहे चकमक जलाकर बत्ती जलाई। बत्ती जलाते ही उस वृद्ध ने नानासाहब को पहिचान लिया। कारण उसके व्यवहार में तुरन्त फरक होगया।

इतने में बाहर घोड़े की टापें सुनाई दीं और एक सवार झोंपड़ी पर आकर रुका तथा उस वृद्ध तथा उस व्यक्ति में कुछ बातें हुई और बाद में वह जैसे ही जाने लगा तो नानासाहब ने उसे पहिचान कर कहा—आप इतने दिन कहां थे महाराज ? मैंने आपको बहुत ढूंढा। पर आपका पता न चला आज अचानक भेंट हो गई।'

सूर्याजी ने जब देखा कि अब अपने आपको छिपाने में कोई लाभ नहीं है तो वह नानासाहब को ले अन्दर गया। और वहां बैठ दोनों में जो कुछ मैत्रीपूर्ण बातें होती रही। इस बीच सूर्याजी के साथ जो कुछ बीती थी वह उसने कह सुनाई। उसने कहा—नानासाहब मेरे परिवार पर जो बीती तथा उस समय मेरी जैसी दशा हुई थी उसे मैं ही ज़ानता हूँ। मेरे शरीर पर इतने जख्म हुए थे कि मेरी बचने की आशा नहीं थी। पर तुम्हारे पिता के पास से जो लड़का पत्र लाया था उसने मेरी जान बचाई तथा मेरे कुल की इज्जत बचाई। केवल उसकी सतर्कता तथा होशियारी के कारण आज मैं यह दिन देख रहा हूँ। बीच में हमें किसी विशेष कारण अपनी पहिली झोंपड़ी छोड़ देनी पड़ी। हमें यह बात सांवलिया को बताने का भी समय न मिला। पर वह अजब लड़का था। उसने हमें खोज निकाला। आज वह मेरा दूसरा प्राण बन गया है। अब जब मैं अच्छा होगया हूँ तो बदला लेने की अवधि देख रहा हूँ और इस बीच पांच पच्चीस अंत्यजों की एक टोली तैयार कर-ली है। नानासाहब लूट मार और डकैती करना बुरा समझा जाता है। पर यदि वह स्वार्थ के लिए किया जाय तो बुरा समझना चाहिए। पर मेरा वह विचार नहीं है। इन चोरों ने जो लूटा है वह उसके हाथ से छीनकर स्वराज्य की स्थापना की जाय। प्रयत्न करना अपने

हाथ में है। पर सिद्धि मिलना ईश्वर के हाथ है। यह सब सोच मैं इस झमेले में पड़ा हूं।'

नानासाहब ने सूर्याजी को शिवाजी के विषय में बताकर यह सुझाया कि उन्हें शिवाजी से जाकर ही मिलना चाहिए।' सूर्याजी ने यह बात मानली और पिछले दो महीनों में जो लूट मार की थी उसे शिवाजी के हवाले करने का निश्चय किया। इस प्रकार बातें करते करते सबेरा होगया।

इस बीच सूर्याजी की स्त्री थोड़ी देर सोई थी, वह फिर जग गई और वह फिर वही गाना गाती जाती थी और बीच बीच में रोती जाती थीं। अभी हाल ही वे सूर्याजी के मुंह से सारी बातें सुन चुके थे इस कारण नानासाहब को अत्यन्त दुख हुआ। जब और उजाला हुआ तो नानासाहब ने उस पगली को अच्छी तरह देखा। वह अत्यन्त सुन्दर थी उसकी ऐसी दशा हुई देख नानासाहब को और भी अधिक दुख हुआ। पर इतने ही में क्या हुआ कि वह पगली नानासाहब को देखते ही विकट रूप से हंसी। और फिर 'आया मरा' कह जोर से रोती हुई झोंपड़ी से बाहर निकली और जितनी तेजी से भाग सकती थी भागी और आंखों से ओझल होगई।

---

[२९]

साँवलिया

उसके पीछे जाना व्यर्थ है। वह चाहे जब और चाहे जहां भटकती रहती है। यह कह सूर्याजी ने नानासाहब को अपने गुट की ओर जाने की प्रार्थना की। वे दोनों जब अपने गोल में पहुंचे तो सूर्याजी ने नानासाहब को यह दिखाया कि उन्होंने क्या

और कैसी तैयारी कर रखी है। उसे देख नानासाहब ने कहा— आपकी इस तैयारी से शिवाजी को बहुत लाभ होगा।' ये सब बातें बताकर उन्होंने सुल्तानगढ़ जाने का उद्देश्य बताया। पर फिर निश्चय हुआ कि वहां की स्थिति पहिले जाने बगैर वहां जाना उचित न होगा यह सोच वे किसे भेजें इसी विचार में थे कि सांवलिया ने आकर नानासाहब को मुजरा किया। उसे देखते ही नानासाहब को संतोष हुआ।

सूर्याजी उसे अपने पुत्र के समान मानता था। उसने कहा— क्यों रे किले पर जाकर वहां की क्या हालत है यह देख जाकर क्या तू हमें बताएगा।'

सांवलिया को तो ऐसा ही कोई काम चाहिए था। उसने कहा—मैं जाकर जो कुछ समाचार चाहिए मैं उसे ला देता हूँ।' यह कह दोनों से विदा ले वह रवाना हुआ। वह पहिले सीधा सुल्तानगढ़ की ओर नहीं गया बल्कि पहिले वह बीजापुर की ओर गया जिससे किसी को यह न मालूम हो सके कि वह कहां से आया है।

सांवलिया बीजापुर के रास्ते पर बहुत दूर जाने के बाद जब लौटा तो उसने देखा कि एक पुरुष और स्त्री चले आ रहे हैं। उसने उन्हें पहिचाना और उनमें से जो स्त्री थी उसका नाम लेकर पुकारा।

उसने भी उसे पुकार और बोली— मैं तुम्हारे घर ही आने वाली थी। मेरे साथ कौन है यह तूने पहिचान ही लिया होगा जहां तेरी मां हो वहां मुझे ले चल। उसकी सहायता से गढ़ के आस पास कहीं हम रहेंगे। पर हम कहां है इसका किसी को पता न देना। यहां से दो कोस पर नांदेगांव में मेरी एक मौसी रह रही है। वहां आज मैं इन्हें ले जाकर रखूंगी।'

उसकी यह बात सुनते ही सांवलिया ने कहा — ऐसी बात ! क्यों क्या किले पर अप्पा साहब नहीं हैं इसलिए ? पर इस विषय में अब डरने का कारण नहीं है, नानासाहब पास ही हैं मैं जाकर उन्हें सारी बातें बताता हूं फिर···

पर नानासाहब का नाम लेते ही उस स्त्री ने सांवलिया का हाथ पकड़ गम्भीर हो कहा—नहीं ! नहीं ! बिल्कुल नहीं । सांवलिया यदि तू चाहता है कि रानीसाहब जीवित रहें तो तू इस विषय में उन्हें यह भी न बताना कि हमारी तुझ से भेंट हुई है ।'

सांवलिया इस बात को न समझ सका पर उस स्त्री के र.क देने पर उसने इस विषय में कुछ भी पूछना व्यर्थ समझा । इसके बाद सांवलिया अ.गे और वे दोनों स्त्रियां पीछे होलीं । और बड़ी मिन्नतें कर किसी तरह नांदेगांव पहुँची और चन्द्राबाई की मौसी के घर जाकर रहीं । उधर सांबलिया अपनी मां को बुलाने चला गया ।

नानासाहब तथा उनकी स्त्री के बीजापुर के पास मुलाकात हुई थी और उसकी दासी तथा नानासाहब में जो कहा सुनी होगई थी उससे रानीसाहब की हालत बहुत खराब हो गई थी । उस दिन से उसने अपनी पर्वाह करना छोड़ दिया था । उसका हृदय जल उठा था । वह बार बार यही कह रही थी मैंने क्या सोचा था और क्या होगया । वह सुल्तानगढ़ के पास किसी बिशेष कारण से रहना चाहती थी वह कारण क्या था वह पाठकों को बाद में मालूम होगा ।

———

[३०]

खान से बीबी बनी

इस प्रकार उन दोनों स्त्रियों की व्यवस्था कर सांवलिया अपनी मां से मिला और उसे नांदेगांव रवाना कर वह फिर अपना काम करने चल दिया। पर इस काम में फंस जाने के कारण सांवलिया को देर होगई। पर अंधेरे से डरने वाला वह नहीं था इसी कारण वह अंधेरे में ही किले की ओर चल दिया। रास्ते में उसने देखा कि एक मुसलमान सवार घोड़े पर बैठा चला आ रहा है। इधर जब से वह सूर्याजी के गोल में शामिल हुआ था तब से वह अकेले मुसलमान सैनिक को यदि कहीं देख पाता तो उसे धोखा दे गोल में ले आता। इस कार्य में वह बहुत होशियार हो गया था।

थोड़ी देर में वह यात्री सांवलिया के पास आकर बोला—तू बड़ा होशियार लड़का दिखाई दे रहा है। जो बातें मैं पूछता हूं उसका यदि ठीक ठीक उत्तर दोगे तो मैं तुम्हें इनाम दूंगा। किलेदार साहब का लड़का किले पर है या कहीं और? पर क्यों रे इस मार्ग से तूने किसी स्त्री और पुरुष को जाते देखा है क्या? और कोई बेगम लवाजमे के साथ इस किले की ओर गई? उसके साथ एक दासी भी थी।'

उसके ये सवाल सुन कर सांवलिया ने एकदम कहा—हां नानासाहब लुक छिपकर इस किले पर आया है। पर वह कहां है यह मैं नहीं बताऊंगा। और जिस प्रकार आप कहते है वैसे लोग किले पर जाने के लिए आऐ जरूर थे। पर उन्हें रास्ते में चोरों ने लूट लिया और कैद कर रखा है।'

यह सुनते ही खान साहब अत्यन्त क्रोधित हो बोले—वे चोर कहां हैं? चलो मुझे दिखाओ मैं उनकी हड्डी नरम करूंगा।'

सांवलिया उसकी बात पर हंसा और बोला—चोर बहुत से हैं उन्होंने एक गिरोह बना रखा है। आप अकेले जाकर उन से जीत नहीं सकते। उसके लिए कोई तरकीब सोचनी होगी।'

कुछ समय सोचने के पश्चात खान ने कहा—अच्छा कोई बात नहीं। अब तू रात को मेरे ठहरने की व्यवस्था कर और मेरे भोजन की भी व्यवस्था करना।'

हां सरकार यह काम तो मैं अवश्य करूंगा। उस गांव में दाऊद मिया नाम के एक बहुत सज्जन व्यक्ति रहते हैं। पर उनके यहां जाने के पहले मैं एक बार उनके पास हो आऊं। यदि आप मुझे अपना घोड़ा दे दें तो मैं जल्दी से उनके पास हो आता हूं।'

खान ने देखा कि सांवलिया के कहने के अनुसार करने के सिवा और कोई इलाज नहीं है इस लिए खान ने उसे अपना घोड़ा दे दिया। बहुत देर बाद सांवलिया हांफते हुए आकर बोला—खान साहब आखिर आप कहां थे ? रास्ते में मुझे चोरों ने मारकर घोड़ा छीन लिया। तुम्हारा घोड़ा तो गया पर मैं दाऊद मिया से मिलकर तुम्हारे रहने की व्यवस्था कर आया हूं। पर आप पर अहसान करने के लिए मुझे मार खाना पड़ा। चलो चलो अब जल्दी चलो ? 'पर क्योंरे उस बेगम के साथ उसकी कोई दासी भी थी ? तूने देखी थी ?'

'हां ! हां ! थी जरूर थी। मैंने इन आंखों से देखी हैं।' सांवलिया ने ये सारी बातें इस प्रकार कहीं कि खान यह समझ हीं न सका कि सांवलिया उससे मजाक कर रहा हैं। एक व्यक्ति को जब किसी बात की धुन सवार हो जाती है तो फिर वह दूसरे मामलों में चाहे जितना चतुर हो पर वह बात आते ही वह पागल हो उठता है। इसी प्रकार की दशा खानसाहब की थी।

वह सांवलिया के साथ हो लिया। और जहां सांवलिया उसे ले गया वहीं वह चला गया।

दाऊद मिया का घर एक छोटी सी झोंपड़ी थी। खान साहब और सांवलिया ने वह रात वहीं बिताई। सवेरा होते ही खान ने सांवलिया से कहा—तेरी जो तरकीव हो बता और उस उपाय से हम चोरों के गोल में घुसेंगे और वहां जितने लोग पकड़ रखे हैं उन्हें छुड़ा दिया जाय।'

सांवलिया मानो इसी समय की बाट जोह रहा था। खान के मुंह से यह बात निकलते ही सांवलिया ने कहा--खान-साहब यदि आप सचमुच बेगम साहिबा से मिलना चाहते हैं तो मेरी तरकीब सुनिए। तरकीब तनिक अजीव है पर है लाज-वाब। वे चोर औरतों को कुछ नहीं करते हैं और न बच्चों को सताते हैं। मैं तो बच्चा ही हूँ पर आपको स्त्री बनना होगा।'

उसकी यह बात सुनकर खान आग बबूला होगया। इस पर सांवलिया ने फिर कहा—क्यों ? मैंने तो सच ही कहा है पर मेरी बात सुनकर आप क्रुद्ध क्यों होगए। पर यदि बेगम साहिबा की दासी से आपको मिलना है तो इसके सिवा और कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है। और यदि और कोई रास्ता हो तो आप बताइये।'

सांवलिया की वह बात सुन तुरन्त ही खान ने कहा—पर लड़के उसका या बेगम साहब का नाम तो बताओ।'

'नाम ! मुसलमानी नाम मुझे भला कैसे याद रहते। आप नाम लीजिए यदि सही होगा तो मैं हां कह दूंगा।'

बड़ी अकड़ के साथ खान ने कहा उसे फातिमा कहते हैं।'

वस ठीक एक दम ठीक ! उसे यही कहते हैं वह तो हमेशा ही नानासाहब के पास जाती है।' सांवलिया ने यह उत्तर बिना हिचकिचाए ही दिया।

सांवलिया की यह बात सुन खान ने सोचा, अब कुछ न कुछ करना ही होगा और फिर कुछ निश्चय किए अनुसार सिर हिला कर वह बोला— अच्छा तो चलो अब हम तुम्हारी बताई तरकीब के अनुसार कार्य करें।'

पर फिर पोषाक की कठिनाई उपस्थित हुई। इसपर बाऊद मियां ने बताया कि उनके पास उनकी मरी बीबी की पोषाक है। बीबी का काम बन गया। सांवलिया ने जैसे जो भी कुछ बताया था, वैसा ही किया और ऊपर से वह बुरका ओढ़ लिया। इस प्रकार सांवलिया ने उसको वेवकूफ तो बनाया ही। बहुत देर तक इधर-उधर भटकने के बाद वे लोग सूर्याजीराव की छावनी के पास पहुंचे। वहां खड़े पहरेदार ने बीबी का असली रूप पहिचान उसके मुंह पर का बुरका हटाया और उसकी मुसकें बांध उसे सूर्याजी राव के पास ले आए और उसपर यह आरोप लगाया कि यह व्यक्ति स्त्री के भेष में छावनी में घुसना चाहता था। थोड़ी देर में यह हंसी-मज़ाक क्या हो रहा है, यह देखने के लिए नानासाहब वहां आए। उन्होंने उस स्त्री वेश-धारी व्यक्ति को पहिचान लिया। नाना साहब के पहिचानते ही उस व्यक्ति ने गर्दन नीची कर ली। नानासाहब ने सूर्याजी को बताया कि इस व्यक्ति ने बीजापुर में रहते समय किस प्रकार उन्हें कष्ट दिया था। यह सुन बाकी सब लोग और अधिक क्रुद्ध हो उठे और उन सबने उसकी बड़ी दुर्दशा की।

पर इतने ही में सूर्याजी को उसके आदमी ने कोई विशेष समाचार सुनाया। उसे सुन सूर्याजी ने आज्ञा दी, 'इसे अपनी पोषाक न उतारने दो। इसे ऐसा ही गिरफ्तार कर रखो।' यह आज्ञा दे वे नानासाहब को ले बातें करने एक ओर चले गए।

यह व्यक्ति रणदुल्लाखां का व्यक्ति अहमद था। उसे यह अनुभव हुआ कि इस रूप में उसे फातिमा के सामने न जाना चाहिए। पर उसकी इतनी तकदीर कहां ? जो बात वह नहीं चाहता था वही हुई। सूर्याजी के आदमी ने जो विशेष समाचार दिया था, वह यही था कि उसके कुछ साथियों ने कुछ लोगों को लवाजमे के साथ पकड़ा है। जो बात सच नहीं थी, वह बात सांवलिया ने मनगढ़ंत बना कर कही थी। पर अब उसकी कल्पना सच निकलीं। हवा बदलने के लिए रणदुल्लाखां की बहन और उसकी दासी फातिमा सुलतानगढ़ की ओर जा रही थीं। उन्हें सूर्याजी के व्यक्ति पकड़ लाए थे। पर नानासाहब के कहने पर उन्हें कैद नहीं किया गया, बल्कि उन्हें छोड़ दिया गया। पर इस अर्से में उन्होंने इतना अवश्य किया कि अहमद मिया खान की अहमद मियाखानी जो बनी थी, वह उन्हें जरूर दिखा दी। थोड़ी ही देर में नानासाहब ने सूर्याजी से विदा ले सुल्तानगढ़ का रास्ता पकड़ा और वहां पहुंच कर उन्होंने आसपास के लोगों से जो जानकारी चाहिए थी, वह प्राप्त की और जो कुछ व्यवस्था करनी थी, वह करके वापस आए और अहमद को सूर्याजी के कैद में रख आगे क्या करना इस विषय में सूर्याजी से मंत्रणा कर सासवड़ के लिए रवाना हो गए।

---

[३१]

अप्पा साहब वापस आए

मुसलमान राजाओं के दरबार की बोल और चंचलता की बात इतनी बदनाम हो गई थी कि वह बालक-बूढ़े सभी की ज़बान पर चढ़ी थी। अप्पा साहब को फिर किलेदारी के सारे

अधिकार दे, किले पर नियुक्त किया गया था, पर मसल मशहूर है कि मिठाई का कौर मुंह तक पहुंचने में सत्तर बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। अप्पा साहब किले की ओर जाने के जैसे ही तैयार हुए वैसे ही उन्हें आज्ञा मिली 'अभी आप न जायं।' इसका कारण अप्पा साहब को मालूम न हो सका। इस कारण वे अत्यन्त उद्विग्न हो उठे थे।

ऐसी दशा में एक दिन रणदुल्लाखां उनके पास आया। रणदुल्लाखां पर वे अत्यन्त विश्वास करते थे। इस कारण उन के दुखी मन में जो भी कुछ था, वह उन्होंने कह सुनाया। उसे सुन रणदुल्लाखां को अत्यन्त दुख हुआ। उसने कहा — अप्पा साहब आज-कल दरबार की हालत अजीब हो उठी है। मुझे भी अब यहां रहने की इच्छा नहीं है जी ऊब गया है। मुरार साहब भी मुझ से इसी प्रकार कहते हैं। पर उन्होंने कहा — भाई जब तक नौकरी करना है, तब तक ईमानदारी से नौकरी करनी चाहिए। बादशाह के खवास जबतक राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करते, तबतक और कोई विचार दिल में लाना भी पाप है।

विशेषतः मुरार साहब का कहना है इसलिए रणदुल्लाखां की बात का जवाब देते हुए अप्पा साहब ने कहा — मुरार साहब ने जो कुछ कहा, उसका एक-एक अक्षर सत्य है। ईमानदार नौकर का यही कर्तव्य है। जब तक अपने को यह मालूम है कि अपने हाथ से अपने स्वामी का भला होगा, तब तक खुद नौकरी नहीं छोड़नी चाहिए। पर जब स्वामी सेवा से भी मुक्त नहीं करते और सेवा भी नहीं करने देते, ऐसी स्थिति में हमारे जैसे नौकर बड़ी मुसीबत में पड़ जाते हैं।'

अप्पा साहब की इस बात पर रणदुल्लाखां भी सहमत हुआ। उसने कहा — एक बार फिर मैं आपको सुल्तानगढ़

भेजने का यत्न करता हूँ। मेहरजान बहुत बीमार हैं। वह कुछ दिन सुल्तानगढ़ जाने का विचार करती हैं। यदि आप को जल्दी छोड़ा नहीं गया तो भी मैं मेहरजान को वहां भेजने वाला हूँ।' रणदुल्लाखां यह कह वहां से चला गया। पर चार दिन वाद ही अप्पासाहब को किलेदारी के सारे अधिकार दे दिए गए तथा उन्हें सुल्तानगढ़ जाने की आज्ञा मिली और 'शुभस्य शीघ्रम्' इस नाते से अप्पासाहब सुल्तानगढ़ वापस पहुंचे। उनके वहां पहुंचने के पांच-सात दिन पहले ही नाना साहब वहां आकर जो कुछ जानना चाहते थे, वह मालूम कर चले गए।

अप्पासाहब के सुल्तानगढ़ आने के दो-चार दिन बाद एक तरुण पुरुष पठानीवेष में सुल्तानगढ़ के पास ही नादेगांव आया। उस समय मराठों और मुसलमानों के पोशाक में विशेष अन्तर नहीं होता था, इस कारण उसे देख दूर से यह कोई नहीं पहिचान सकता था कि वह कौन है। उसने सोचा जाते जाते रास्ते में चल कर देखा जाय, यदि किसी मकान में पैसे देकर भोजन मिल सके तो अच्छा हो, यह सोच उसने एक घर में जहां केवल दो औरतें ही थीं, खाने के लिए पूछा, उनमें से एक स्त्री ने उत्तर दिया, जो कुछ रूखीसूखी हमारे घर में है, वह हम तुझे खिलाते हैं, पर उसके बदले में पैसे देने का नाम मत निकालो। तू किसी बड़े घर का लड़का मालूम होता है। इसलिए यदि तुझे कहीं ठहरने को स्थान न हो तो तू हमारे चौक में घोड़ा बांध दे और चबूतरे पर पड़ रह।'

वह नया व्यक्ति मानो इस निमंत्रण की राह देख रहा था। उसकी यह उत्सुकता उसकी तुरन्त दी हुई स्वीकृति से स्पष्ट दिखाई दे रही थी। थोड़ी ही देर में उसने पेट भर रोटी खाई और बाहर आकर चबूतरे पर बैठ सोचने लगा। अब उसकी

आंख लगने ही वाली थी कि उसने सुना कि कोई कुछ कह रहा है। उसने कान खड़े किए और सुनने लगा। कोई कह रहा था कि यदि उन्हें इतनी चिन्ता थी तो वे मुझे छोड़ शहाजी के बेटे शिवाजी से मिलने क्यों गये। फिर गये ही थे तो मुझे भी साथ ले जाना चाहिये था। मेरे जाने पर वह क्या करेगी, उसका क्या होगा, इस बात का तो उन्हें विचार करना चाहिए था।

दूसरी ने कहा — तू सच कहती है। अपनी स्त्री की इज्जत और आबरू की रक्षा करने के लिए घर में रहे नहीं और क्या तो धर्म की रक्षा और स्वराज्य स्थापना के लिए वहां शहाजी राजा के लड़के के पास पहुंचे।'

फिर पहली स्त्री ने कहा — अब सुना है हजरत इधर आने वाले हैं, देखें क्या करते हैं? अब यहां आने पर दिखा दूंगी कि उनकी स्त्री भी उनके कन्धे-से-कन्धा भिड़ा कर लड़ सकती है।' आगे भी कुछ बातें हुई पर वह बाहर लेटे व्यक्ति को नहीं सुनाई दी। पर ये व्यक्ति कौन हैं, इसके विषय में उन हजरत ने अनुमान लगा लिया। दूसरे दिन उस व्यक्ति ने उन औरतों से कहा — मैं बाहर काम से जा रहा हूं और शाम तक लौटूंगा। और सचमुच ही वह व्यक्ति शाम तक नहीं लौटा। सुल्तानगढ़ के किले की परिक्रमा करते किसी ने उसे देखा था। शाम को वह व्यक्ति वापस लौट आया। पर फिर आधीरात के समय वह वहां से चुपचाप उठ कर चला गया, उसने फिर किले का एक चक्कर किया और वह फिर सवेरे के समय अपने स्थान पर आ लेटा।

सवेरे उठते ही उसने उन औरतों से कहा—अब मैं अपने गांव जाता हूं। यह कह उसने एक थैली उन लोगों के मना करने पर भी डाल दी। और उनके उस विषय में हां नां कहने के पूर्व ही आंगन में अपने घोड़े के पास जा खड़ा हुआ। पर

फिर कुछ सोचकर वह उस स्त्री के पास आकर बोला—देवी जी मैं किले पर जाकर देवीमाता के दर्शन करना चाहता हूं। मैं अकेला ही गया तो लोग मेरे विषय में पूछताछ करेंगे और वेकार ही मुझ पर शंका करेंगे। किसी की पहिचान से गया तो सहज ही मेरा कार्य हो जायगा और मैं अपने रास्ते चला जाऊंगा। इसलिए यदि आप लोग मदद कर सकें तो अच्छा हो।

हां! हां! आज तो यह बात आसान है। आज ही सांवलिया यहां आ रहा है। वह आने पर आपको दर्शन इत्यादि अच्छी तरह करा देगा और जो कुछ देखना होगा वह भी दिखा देगा।'

उनकी यह बात सुन यह व्यक्ति फिर वहीं ससपंज में खड़ा रह गया। और जब सांवलिया आया तो उस स्त्री ने उससे कहा—इन्हें किले पर ले जाओ।

इसके बाद किसी प्रकार दिन छिप जाने पर कम्बल ओढ़ वह व्यक्ति सांवलिया के साथ किले पर जाने के लिए तैयार हुआ। सांवलिया उस व्यक्ति के लिए किले पर बिना किसी भय के जाने के लिए पासपोर्ट था। बहुत दिन के बाद वह लड़का आया था इसलिए किले पर हर मिलने वाले ने उसे पूंछ पूंछ कर नाक में दम कर दिया। और साथ का व्यक्ति कौन है यह पूछने पर। ये मेरे 'मामा' हैं तो किसी को काका बताकर बात बनादी। जितनी देर और जो जो स्थान वह व्यक्ति देखना चाहता था वह उसे दिखा दिए। उसके बाद उस व्यक्ति ने रात की पर्वाह न की और उस लडके के साथ वह किले से नीचे उतरा। और उन स्त्रियों के पास आया वहां आने पर उसने थोड़ी देर आराम किया और वह वहां से चल दिया।

———

[३२]

निश्चय

पिछले अध्याय में जो घटना हुई थी, उसके आठ-दस दिन बाद की यह घटना है। पाठकों को यह मालूम होगा कि शिवाजी ने घर न जाने की प्रतिज्ञा की थी। उसे उन्होंने पूर्ण किया होता, पर उनकी माता ने उस जंगल में आकर उन्हें घर लौटने का आग्रह किया और मातृभक्तिवश उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा भंग की। पर उनका चित्त दिन-पर-दिन उनका ध्यान अपने महत्वपूर्ण कार्य की ओर जा रहा था। शिवाजी राजा की अभी अधिक अवस्था नहीं थी, फिर भी वे विचारों में प्रोढ़ थे। इसकी पुष्टि इतिहास करेगा। उन्होंने किला विजय करने की जो प्रतिज्ञा की थी, उसके दिन पूरे हो रहे थे, इस कारण उनकी चिन्ता दिन-पर-दिन बढ़ रही थी। इस समय भी वे उसी विषय में विचार कर रहे थे। पर किसी विचार को कार्य रूप में परिणत करने के लिए कोई कारण लगता है। इस समय भी ऐसा ही एक कारण उपस्थित हो गया।

दादोजी कोणदेव ने इस अर्से में शिवाजी की समस्त कृति के विषय में शहाजी को लिख भेजा था। इसके उत्तर में शहाजी का उत्तर इस प्रकार आया— गरीब जनता को लूट कर उनके श्राप लेकर यदि कोई स्वराज्य की स्थापना कर सकता तो आज तक चोरों ने भी न जाने कितने स्वराज्यों की स्थापना की होती। मुसलमानों के नाम से केवल कोसने से कहीं स्वराज्य नहीं मिलता। गरीबों को या गांवों को लूटना और किलों या गढ़ों पर हमले न करना ये काम नामर्दों के हैं। यह बात उनकी समझ में क्यों नहीं आ रही हैं।' यह पत्र पढ़ राजा को बहुत खेद

हुआ ! राजा को उपदेश कर उन्हें उचित मार्ग पर लाने का भी यही अवसर है, यह सोच उन्होंने भी शिवाजी की कठोर शब्दों में भर्त्सना की। पर बड़े आदमियों के मन साधारण व्यक्तियों के समान नहीं होते। शिवाजी वहां से उठ अपने मित्रों में गये। वे दृढ़ निश्चय कर ही वहां से गए थे। वे सीधे अपने गुप्त मंदिर में गये।

मंदिर में जाकर उन्होंने अपनी तलवार निकाल देवी के सामने रखी और उन्होंने ध्यानस्थ होने के लिए भक्ति भाव से आसन जमाया। घड़ी दो घड़ी में उनके चेहरे पर की उदासीनता दूर हो गई और वहां उद्विग्नता का नामनिशान भी न रह गया। उन्होंने तुरन्त ही श्रीधर स्वामी को बुलाया। उनके साथ क्षण भर मंत्रणा कर तानाजी येसाजी और नानासाहब से भी मंत्रणा की और सुल्तानगढ़ पर हमला करने की सारी तैयारी की गई।

दूसरे दिन आधी रात के समय तीनसौ साढ़े तीनसौ मवालियों का एक मेला हुआ। यह मेला जंगल के उसी स्थान पर हुआ, जहां ये सारे जमा हुआ करते थे। उन्हें नानाजी ने जो कुछ बताना था, वह बता कर भवानी के मंदिर से एक-एक तलवार हर एक को इनाम दी और उनकी दो टोलियां तैयार कीं। एक का नेतृत्व नानासाहब और दूसरी का नेतृत्व तानाजी करने वाले थे। और जिस प्रकार राजा ने बताया था, उस प्रकार निश्चित दिन उस किले से चार कोस के फासले पर छिप कर बैठने का निश्चय किया गया। नानासाहब की खुशी का ठिकाना न रहा। अपनी योजना के अनुसार सुल्तानगढ़ जहां उन्होंने जन्म लिया था, वही स्वराज्य की पहली सीढ़ी बनेगा, इसका उन्हें विशेष आनन्द हुआ।

[३३]

घड़ी आ गई

सैय्यदुल्लाखां ने मुरारजी और उससे भी अधिक रणदुल्ला खां की बे-इज्जती करने की हद कर दी। आखिर रंगराव अप्पा को फिर किलेदारी यह बात उसे बहुत अखरी। नीच व्यक्ति को अपना वैर बनाए रखने के लिए जरा सी और सड़ी गली बातें भी काफी होती हैं और इन्हीं सड़ी-गली बातों में सड़ते-सड़ते उसके दिमाग मेंसे कोई अजब बात निकल आती है। सैय्यदुल्ला खां ने जब देखा कि बादशाह का मन कलुषित कर रणदुल्लाखां को खूब अपमानित कर उसका मतलब सिद्ध नहीं हो रहा है तो उसने इरादा किया कि रणदुल्लाखां की बहन को सुल्तानगढ़ घर से भगा कर बादशाह के जनानखाने में ला रखना चाहिए। ऐसा करने से रणदुल्लाखां को इस बात से क्रोध आएगा और वह बादशाह का अपमान करेगा। इस प्रकार बिना किसी परिश्रम से मतलब सिद्ध हो जायगा।

यह इरादा कर उसने यह तय किया कि कुछ दिनों के लिए रणदुल्लाखां को यहां से कहीं दूर भेज देना चाहिए। इस बात के लिए उसने एक चिट्ठी करनाटक के सूबेदार से मंगाई कि वहां विद्रोह हो रहे हैं। और दूसरी बात यह की कि रणदुल्लाखां की दरबार में बड़ी तारीफ की। उसने कहा—सरकार रणदुल्लाखां के समान इस समय में दूसरा वीर नहीं है।' बादशाह को उसकी यह बात सुन कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। साथ ही सैय्यदुल्लाखां की इस उदारता के लिए उन्होंने इसकी प्रशंसा की। और तुरन्त ही सैय्यदुल्लाखां को वह बुला लाया और उसने उसे कर्नाटक के सूबेदार का वह पत्र

दिखाया और तुरन्त ही आज्ञा दी कि १२ हजार सिपाही लेकर कर्नाटक की ओर कूंच करो। यह बात होजाने पर रणदुल्लाखां ने मुरारराव जी की सलाह ली। उनकी भी यही राय हुई कि दाल में कुछ काला है। रणदुल्लाखां ने सोचा—यदि नीचता होगी तो वह मेरी बहन के विषय में ही होगी।' इसलिए उसने ५० चुने हुए जवान उसकी रक्षा के लिए सुल्तानगढ़ की ओर भेज दिए। और फिर वह १२ हजार सैनिकों के साथ कर्नाटक की ओर रवाना हुआ।

इधर सैय्यदुल्लाखां ने जब यह देखा कि उसके मार्ग का कांटा रणदुल्लाखां दूर हो गया तो उसे बहुत आनन्द हुआ। करीब दो तीन दिन बाद उसने १०० चुनिन्दा सिपाही लिए और उन्हें सुल्तानगढ़ से ६ कोस पर पड़ाव डालकर रहने की आज्ञा दी और स्वयं ४ या ५ सिपाही साथ ले सुल्तानगढ़ पर आया। सैय्यदुल्लाखां के पीछे जो उन काले व्यक्ति का भय था वह भी न रहा। किले पर आते ही सैय्यदुल्लाखां ने रंगराव अप्पा की जो व्यवस्था थी वह सब बदल दी और एक प्रकार से उसने किले पर कब्जा कर लिया, पहिले ही दिन उसने जिस डांट फटकार और रौब से काम लिया उसे देख लोगों को उससे घृणा होगई।

सैय्यदुल्लाखां के किले पर आने के दूसरे दिन एक और घटना हुई। रात बहुत बीत चुकी थी। पर चांदनी खिली हुई थी। सैयदुल्लाखां ने नींद लेने का बहुत प्रयत्न किया पर उसे नींद न आई। जब कोई व्यक्ति किसी से बदला लेने की बात सोचता है तो उसे नींद नहीं आती। काले सर्प को कभी रात को नींद नहीं आती। उसने चांदनी में बाहर जाकर बैठने का विचार किया और सामने के बुर्ज पर अपनी कुर्सी डलवाई

और हजरत वहां जा बैठे और उन्होंने नौकर को वहां से हट जाने के लिए कहा।

सैय्यदुल्लाखां इस प्रकार अपने कल्पना मन्दिर में डूब उतरा रहा था कि उसके सामने उसे एक काली छाया दिखाई दी। उसे देखते ही वह चौंका और उसने ऊपर देखा। उस व्यक्ति को देख उसके हाथ पैर ढीले पड़ गए। कोई कितना भी बहादुर हो पर जिस प्रकार यमदूत को सामने देख वह घबरा उठता है वही हालत सैय्यदुल्लाखां की हुई। इतने ही में वह काला व्यक्ति बिल्कुल उसके पास आकर बोला—घबड़ाओ नहीं अभी पूरे डेढ़ दिन तुझे छुट्टी हैं। तेरी मौत नजदीक आगई है। जो कुछ करना हो इतने समय में ऐश करलो।' इतना कह वह व्यक्ति वहां से एकदम गायब होगया। सैय्यदुल्लखां ने उसे ढूढ़ने का बहुत प्रयत्न किया पर उसका उसे कहीं भी पता न चला। आखिर अपने आस पास चार चुने हुए व्यक्तियों का पहरा लगा वह छटपटाता हुआ अपने बिस्तर पर जा लेटा।

पर इस प्रकार चार सिपाहियों के पहरे में सोने पर भी खान घबरा रहा था और अपने आपको सुरक्षित नहीं समझ रहा था! वह बहुत देर तक विचार करता रहा। आखिर रात बीती सबेरा होते ही रात की दुर्घटना पर विचार करते करते उसे यह तरकीब सूझी कि उस व्यक्ति ने उसे जो अवधि बताई है उसके अन्दर ही अपना काम बनाकर यहां से जाना ही उचित होगा। तुरन्त ही उसने हुक्म देकर अपने सेनापति को बुलवा भेजा। और उसके आने पर उसे बताया कि उसका क्या इरादा है और सेनापति को क्या करना चाहिए।

सैय्यदुल्लाखां की आज्ञा लेकर उसने अपने चार विश्वासपात्र आदमी बुलवाए। और उन्हें जो कुछ बताया था बताया और

उन्हें आवश्यक आज्ञा दीं । इन चार व्यक्तियों से वह बात बाकी लोगों को मालूम हुई और इस प्रकार यह बात सब को मालूम हो गई कि आज रात को यह बात करनी है ।

उस दिन रात को करीब सात बजे उस काले व्यक्ति ने सांवलिया के मामा से मिल उससे कहा—आज मैं तुम्हें केवल यह बताने आया हूँ कि जिस बात का इरादा कर आप लोग यहां बैठे हैं यदि उस बात को सिद्ध करना चाहते हो तो आज की रात इस कार्य के लिए सबसे अच्छी है । किले पर सैय्यदुल्लाखां आज रात को रणादुल्लाखां की बहिन को जबरदस्ती वहां से ले जाना चाहता है । उसका काम सफल न होने देकर उसकी मरम्मत करने का यही अच्छा मौका है । तुम्हारे ऐसा करने से तुम्हें बड़ी सफलता मिलेगी और तुम्हें एक अबला को बचाने का पुण्य मिलेगा । तुम्हें अपनी व्यवस्था में विशेष परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है । रात रात में तुम उसके लोगों को जहां वे हैं वहीं रोक रखो और अपने व्यक्तियों को किले पर भेजो । बस यही व्यवस्था तुम्हें करनी होगी । यदि आप मेरे कहने के अनुसार काम करोगे तो तुम्हें सहज ही सफलता प्राप्त होगी । समय ठीक १२ बजे का है । यदि तुम और वे लाभ उठा सकते हो तो प्रयत्न करो । पर सोचने बैठने के लिए आपके पास समय नहीं है यह बात याद रखो ।' यह कह वह चट से उठा और 'अब जाता हूं' कह कर चल दिया और न जाने कहीं गायब हो गया ।

---

[३४]

पिता पुत्र

उस काले व्यक्ति के परामर्श दे जाने के पश्चात् शिवाजी इस दुविधा में पड़ गए कि उस काले व्यक्ति की सलाह मानी जाय या फिर अपने पहिले विचार पर दृढ़ रहा जाय। इस प्रकार का विचार मन में आते ही उन्होंने कुल देवता का ध्यान करने का निश्चय किया। उस ध्यान में उन्हें साक्षातकार हुआ—इस अवसर पर तुझे कष्ट न हो इसके लिए ही मैंने ये सारे प्रसंग एकत्रित कर दिए हैं।' यह बात मालूम होते ही तानाजी के पास यह संदेशा भेजा गया कि फलां दिशा में एक सेना की टुकड़ी पड़ी है वे सब इतने बजे किले पर हमला करने के लिए जाएंगे पर उन्हें वहीं रोका जाय। एक इंच भर भी आगे सरकने न दिया जाय।

इधर उन्होंने अपनी टुकड़ी को आज्ञा दी कि इतने बजे सदर दिल्ली दरवाजे से किले पर हमला करना है। इसलिए सब लोग होशियार रहें। यह सब तैयारी करने के लिए उन्हें दो घड़ी का भी समय न लगा।

इस प्रकार समय पर सब लोगों के किले पर आने की व्यवस्था कर शिवाजी ने नानासाहब को तुरन्त बुलाया और उन्हें आज्ञा दी कि वे शीघ्र किले पर जायं और अपने पिताको सोते से भी जगाकर एक बार उन्हें अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया जाय। उन्हें सारी बातें बताई जाय। इसमें अन्त तक आशा न छोड़ी जाय कारण हिन्दुओं के लिए यह कलंक की बात होगी कि बेटे ने बाप पर चढ़ाई की और उसे कैद में रखा। बाप को कैद कर बेटा गद्दी पर बैठे यह हिन्दुओं का धर्म नहीं है। इसलिए तुम जाओ और फिर उन्हें समझाने का प्रयत्न करो।

नानासाहब जैसे ही जाने लगे वैसे ही शिवाजी ने उन्हें सांकेतिक शब्द बताया। और कहा—अब हमारे पास समय बहुत कम है इसलिए जो काम करने आप जा रहे हैं वह यदि हो जाता है तो ठीक है और नहीं होता है तो आप निश्चित समय तक वहीं रहें। निश्चित समय पर लोग किले पर आएंग उन्हें नाकेबन्दी करने में सहायता कीजिए तथा और पुराने लोगों से जितना कम झगड़ा किया जा सके उतना करना चाहिए।' इतना कह उन्होंने उन्हें बिदा किया।

नानासाहब निराश हो परकर्तव्य करने की दृष्टि से वे किले की ओर गए। संकेत के शब्द के बाद दरवाजा खुलने का शब्द हुआ। उसके बाद पुल गिराया गया। उसका शब्द सुन सैय्यदुल्लाखां इस बात के लिए आतुर हो गया था कि उसका वह आदमी कब उसके पास आता है। पर वह व्यक्ति किलेदार की मकान की ओर मुड़ा यह देख उसे यह अनुभव हुआ कि विश्वासघात होगया। तुरन्त ही उसने इस व्यक्ति का पता लगाने के लिए आदमी भेजा। पर अभी उसे जाकर कुछ देर भी नहीं हुई होगी कि उसी की पीछे दूसरा, फिर तीसरा और चौथा और पांचवां आदमी भी भेज दिया और अब कोई भेजने के लिए नहीं रहा इस कारण वह स्वयं उठा।

इधर नानासाहब अपने महल की ओर गए और उन्होंने सिपाहियों को अपना असली नाम बताया। उनके अन्दर जाने के बाद जैसे ही दरवाजा बन्द हुआ वैसे ही सैय्यदुल्लाखां के आदमी एक के बाद एक आकर जमा हो गए। पर उन्हें अन्दर जाने की आज्ञा नहीं मिली। नानासाहब को देखते ही अप्पासाहब क्रोधित हो उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा— लड़के अगर तुम पैदा ही न हुए होते तो अच्छा होता और हुए थे तो पैदा

होते ही मर जाते तो उससे हमें क्षण भर का ही तो दुख होता तू बीजापुर आया था उस समय पुत्र हत्या के भय से मैंने हाथ नहीं उठाया। पर पुत्र हत्या के पाप से बचकर स्वामी द्रोह का पाप मैंने किया। वह मुझे अब तक सता रहा है। इस समय तू मेरे पंज़े में है। मैं तुझे इसी समय कैद कर रखूंगा। अरे बाहर कौन है चलो बेड़ियां ले आओ।'

अप्पासाहब की निष्ठुरता इस हद तक पहुंचेगी इस बात का नानासाहब को तनिक भी गुमान नहीं था। अप्पासाहब और नानासाहब पिता पुत्र ही थे इस कारण उनमें भी पिता का अंश था। उन्हें पुत्र प्रेम से अधिक प्रिय मुसलमानों की सेवा है यह देख नानासाहब ने सोचा कि जो कुछ वह कहना चाहते हैं उसे अभी ही कह डालना चाहिए यह सोच उन्होंने कहा—अप्पासाहब कुछ तो विचार कीजिए। आपकी स्वामी सेवा का कुछ अच्छा उपयोग आप करना चाहते हैं ? अब आपकी किले पर या दरबार में क्या इज्जत रह गई है इसका विचार कीजिए आज वह अदना सा खवास आकर किले पर कब्जा कर लेता है और आपको एक कोने में बैठा देता है। आपको अपने महल से निकलने की भी आज्ञा नहीं है। यह दशा आपकी है। इस पर आप विचार कीजिए। इस पागलपन में आप कब तक बहते रहेंगे ? आप आज ही इसी क्षण इस किले के सच्चे मालिक बन सकते हैं। पर आप यदि ऐसा विचार करें और पूरी बात समझें तभी यह सम्भव है।

नानासाहब जब ये सब बातें कह रहे थे तो उन्हें यह अनुभव हुआ कि उस वृद्ध पर उसका कुछ परिणाम अवश्य हो रहा है। इसका उसे कुछ आनन्द भी हुआ। अप्पासाहब उसके बिल्कुल नजदीक आकर विचित्र मुद्रा में बोले—जा !

जा ! अब एक शब्द भी मुंह से न निकाल। मुझे मोह में डाल कर मेरे हाथों से भयंकर पाप करने के लिए मुझे प्रवृत्त न कर। जाओ तुम्हारी जो समझ में आवे करो। मैं स्वामी की सेवा करूंगा। मैं स्वामी के साथ विश्वासघात स्वप्न में भी नहीं करूंगा। बस चुप रहो एक अक्षर भी न बोलना। और अपने स्थान से एक कदम भी आगे न बढ़ना। नहीं तो तुझ पर तलवार उठानी पड़ेगी। बन्दर कहीं का यदि तेरे जैसे गाल बजाने वालों के हाथ से स्वराज्य स्थापना होने लगती तो फिर पूछना ही क्या था ?

नानासाहब अत्यन्त तिरस्कार युद्ध शब्दों में बोले—राम ने बन्दरों की सहायता से रावण से राज्य छीना था।' नानासाहब के इन शब्दों ने अग्नि में तेल का काम किया। उन्होंने नानासाहब को मारने के लिए तलवार उठाई। इतने ही में सैय्यदुल्लाखां अपने चार पांच आदमियों के साथ अन्दर घुसकर बोला—अप्पासाहब ! अप्पासाहब ! तोबा ! तोबा ! आप यह क्या कर रहे थे।'

उन्हें देख अप्पासाहब ने कहा—खानसाहब यह मेरा कुल कलंक ! नमकहराम ! स्वामीद्रोही है इसे आप गिरफ्तार......'

इतने में बाहर इतना शोर हुआ कि उसे देखने स्वयं अप्पासाहब बाहर गए। और बात अधूरी ही रह गई।

---

[३५]

किले पर गड़बड़

क़िलेदार के महल की ओर कौन गया है इसकी पूछताछ करने के लिए सैय्यदुल्लाखां ने आदमी भेजे और इसके बाद स्वयं जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। पर इतने ही में उसे बाहर कुछ गड़बड़ सुनाई दी। वह समझ गया कि किलेदार के महल में जो लोग तलाश करने गए हैं उन्हीं से यह झगड़ा हो रहा हैं पर उसने सोचा कि इस समय झगड़ा करने से कोई लाभ नहीं। जिस समय सारे आदमी ऊपर आ जाएंगे तभी झगड़ा करना ठीक होगा। और फिर सब की इकट्ठी खबर लूंगा। उसने सोचा कि यहां पर भी अकेले बैठ कर क्या करना है इसलिए वह हथियार बांध किलेदार के महल की ओर चल दिया। इसी बीच किसी ने आकर यह समाचार दिया कि किले की ओर बहुत से लोग चले आ रहे हैं। यह समाचार देने वाला व्यक्ति बुर्ज पर पहरा दे रहा था। जैसे ही सैय्यदुल्लाखां ने यह समाचार सुना उसे बहुत ही प्रसन्नता हुई। आखिर लोग ऊपर पहुंच गए। इनका स्वागत करने के लिए वह आगे बढ़ा और उसने अपनी टुकड़ी के सरदार को आवाज दी। इतने ही में मशालें जल गईं और खान को यह विश्वास हो गया कि ये उसके आदमी नहीं हैं। यह जानते ही वह अप्पासाहब के महल के दरवाजे पर गया कारण वहां उसके आदमी थे। उसके पीछे ही कुछ मवाली भागे। खानसाहब ने 'दीन' 'दीन' कह चिल्लाना शुरू किया पर हरहर महादेव की घन गर्जना में उसके वे शब्द दब गए। किले पर गड़बड़ शुरू होगई। खान समझ गया कि यह सब पिता पुत्र ने मिलकर शरारत की है। अप्पासाहब के महल में खानसाहब

और उनके सिपाही घुसे उन्होंने जो कुछ अन्दर देखा वह पाठकों को मालूम ही है।

महल के बाहर जो गड़बड़ हो रही थी उसे सुन अप्पासाहब पागल हो उठे। यह भय होने लगा कि बूढ़ा या तो पागल हो जायगा या फिर इसे उन्माद हो जायगा। उसने बाहर आकर जो देखा तो कम्बलिया ओढे सैनिकों का किले में चारों ओर पहरा लग गया था। और दरवाजे पर लोग सैय्यदुल्लाखां के नाम से चिल्ला रहे थे। बूढ़ा बाहर निकल आया और वहां जो व्यक्ति जमा हो गए थे उनसे बोला—सैय्यदुल्लाखां राज दरबार से मेरे मेहमान बनकर आए हैं। मेरे इस जर्जर शरीर में जब तक प्राण हैं तब तक वह आपके हाथ नहीं लग सकते।

इतने में दरवाजे के सामने खड़ी भीड़ के पीछे से किसी सिपाही ने अप्पासाहब का नाम लेकर पुकारा और कहा—महाराज चारों ओर मोर्चा लग रहा है। हमारे हथियार अंदर बन्द पड़े हैं। अब हमारे हाथ न तो हथियार ही लग सकते हैं और न गोलाबारूद।' यह सुन अप्पासाहब बहुत क्रोधित हो बोले—रोओ ! जोर जोर से रोओ हरामजादो ! हाथ में चूड़ियां पहन लो फिर यह सब कहना तुम्हें अत्यन्त शोभा देगा।'

यह कह वे सदर दरवाजे पर आए। सैय्यदुल्लाखां वहां बिल्कुल गरीब गाय बनकर बैठा था। अप्पासाहब के अंदर आते ही उसने अत्यन्त दीन हो कहा—अप्पासाहब मैं आपकी शरण आया हूं। किसी प्रकार भी आप मुझे अपने आदमियों के पास पहुँचा दीजिए वे सब किले के नीचे हैं। नहीं तो वह शैतान आज मेरी जान लेकर ही छोड़ेगा।'

वह शैतान ! कौनसा शैतान ! क्या मेरा वह नालायक बेटा ! वह नीच ! वह कुलांगार जिसने पितृद्रोह स्वामिद्रोह

किया ! वह मेरा घर अस्पृश्य न कर सकेगा। लाओ मेरी तलवार लाओ ! मैं उसे मार डालूंगा। नहीं तो उसके हाथ से पितृ हत्या का पाप करांऊंगा वह मुझे मारे या मैं उसे मार डालूंगा।' यह सब अत्यन्त आवेश में कह अप्पासाहब अपने लड़के को मारने के लिए दौड़ पड़े। उनका क्रोध अनावर हो गया। उन्होंने सचमुच ही उसकी गर्दन पर हाथ डाला। स्वामिभक्ति की हद हो गइ। पर वहां जो लोग थे उन्होंने बीचबचाव कर नानासाहब को बाहर जाने के विषय में बिनती की। सैयदुल्लाखां दीन हो अप्पासाहब की ओर देख रहा था। उसने एक बार फिर दीन हो कहा—आप चाहें बेगमों के सिपाहियों की मदद लीजिए पर किसी प्रकार मुझे एकबार अपने आदमियों तक पहुँचाइये।'

अप्पासाहब ने वह बात मानली। उन्होंने कहा—मेरे प्राण जाने तक मैं आपकी रक्षा करूंगा। आप चलिए।' यह कह उन्होंने अपने हथियार कसे। और बायें हाथ से सैय्यदुल्लाखां का हाथ पकड़ आगे बढ़े। उन्हें आता देख तुरन्त ही तीन व्यक्ति उन पर टूट पड़ने के लिए आगे बढ़े। इतने ही में किसी ने गम्भीरवाणी में कुछ इशारा किया। उस इशारे को पाते ही लोग दो ओर हट गए। और अप्पासाहब तथा सैय्यदुल्लाखां को जाने के लिए रास्ता दिया।'

इधर बेगम के सैनिकों को यह पता न चल सका कि यह क्या गोलमाल हो रहा है। उनके पूछने पर, तानाजी जो वहां इसी बात के लिए उपस्थित था बोला—सैय्यदुल्लाखां के लोग जो किले पर आए हैं और वे बेगम साहिबा को जबरदस्ती ले जाना चाहते हैं। इस समय वे शोर मचाकर किलेदार साहब के महल में घुसकर उनके लड़के की स्त्री को ले जाने का प्रयत्न

कर रहे हैं। देखो तुम लोग सम्भल कर रहना।' यह कह तानाजी वहां से चला गया।

सैय्यदुल्लाखां का यह इरादा सभी जानते थे। इस कारण सैय्यदुल्लाखां ने अभी जो कुछ कहा उस पर उन्हें विश्वास हो गया। इस पर बेगम साहब के एक आदमी ने कहा—दोस्तो सैय्यदुल्लाखा के मनमें बेगम साहब की ओरसे कुछ पाप अवश्य है। वह कल मुझे फोड़ने का प्रयत्न कर रहा था। वह कह रहा था कि मैं तुम सबको खूब शराब पिलाकर रखूं। पर मैं इसके लिये तैयार नहीं हुआ।' अभी यह बातचीत हो रही थी कि किलेदार के महल की ओर से लोग उनके महल की ओर आते दिखाई दिए। फिर तो उन्हें यह अनुभव हुआ कि बात ठीक ही है। वे लोग हथियार खींच तैयार हो गए। वे लोग भी आगे बढ़ रहे थे। तानाजी भी इस टोली में था नानासाहब आगे-आगे चल रहे थे।

नानासाहब ने जोर से आवाज देकर कहा— दोस्तो अगर तुम लोग अभी इसी समय अपना तामझाम हटाने को तैयार हो तो अभी जा सकते हो। तुम्हारा बाल भी बांका न होगा। पर यदि आप हमारा सामना करने का प्रयत्न करेंगे तो जान खो बैठेंगे। यह किला अब अप्पासाहब के कब्जे में नहीं है। अब यहां पुरानी हुकूमत नहीं रही है। अब मैं तुम्हें एक घड़ी का समय देता हूं। यदि आप जाना न चाहें तो अभी इसी समय हथियार डालकर चुपचाप बैठ जायं जब तुम्हें सुविधा हो जाना।

उनकी यह बात सुन उनमें से एक व्यक्ति बोला—दोस्तो यह व्यक्ति अपने खानसाहब का शत्रु है सैय्यदुल्लाखां का मित्र है। देखते क्या हो? चलो इन पर टूट पड़ें।' इसी समय

नानासाहब ने उसकी शकल देखली। उसे पहिचानते ही नाना-साहब अत्यन्त क्रोधित हो उस पर टूट पड़े। दोनों ओर से लोग जूझ पड़े।

इसी समय सैय्यदुल्लाखां को नीचे पहुंचाकर अप्पासाहब ऊपर आए। युद्ध होते देख उन्हें भी जोश आ गया और वे लड़ाई में कूद पड़े। यह लड़ाई बिल्कुल अचानक हुई थी। नानासाहब इसके लिए तैयार न थे। उन्हें स्वप्न में भी इस बात का ध्यान नहीं आया था कि किस प्रकार युद्ध होगा वे समझ रहे थे कि किला उन्होंने जीत लिया पर अभी बाप बेटे में युद्ध होना बाकी था।

---

[३६]

पर दूसरी ओर क्या हो रहा था ?

अप्पासाहब झगड़े में शामिल हुए देख नानासाहब के हाथ पैर कांपने लगे। और वे पीछे हट गए। उनका हाथ आगे नहीं बढ़ रहा था। जिस समय लड़ाई हो रही थी वे दूसरी ओर अकले ही गए। इतने ही में उन पर किसी ने तलवार का वार किया और वह उनके गहरा लगा। उसके लगते ही उन्हें चक्कर आ गया और वे चक्कर खाकर बेहोश हो गए। वार करने वाला व्यक्ति अहमद एक दम कूद कर उनकी छाती पर चढ़ बैठा। और जोश में बोला—ऐ दुश्मन आखिर मुझे तेरा खून पीने का मौका मिला।' यह कह उसने नानासाहब के दोनों कन्धे पकड़ कर हिला दिए। नानासाहब जीवित हैं यह देख उसने लोहे का विछुआ निकाल कर गर्दन में भोंकने के लिए हाथ ऊपर उठाया। क्षण भर की यदि देर हो जाती तो नानासाहब का

काम तमाम हो जाता। पर इतने ही में किसी ने पीछे से तलवार के एक हाथ से उसका विछुवे वाला हाथ काट फेंका! और दूसरे बार से अहमद की गर्दन कट कर दूर जा पड़ी।

नानासाहब को बचाने वाले व्यक्ति ने अंधेरे में ही उनके दिल पर हाथ रखकर देखा और नानासाहब को किसी सुरक्षित स्थान में ले जाकर रखना चाहिए यह सोच वह आदमियों को जमा करने के लिए गया। वह वहां से अभी सौ कदम ही गया होगा कि उसे चूड़ियों का आवाज सुनाई दी और उसे ऐसा मालूम हुआ कि कोई किले पर चढ़ रहा है। यह क्या गोल माल है यह देखने के लिए वह वहीं खड़ा रहा। उसने जो कुछ सुना वह इस प्रकार था—पर बाईसाहब आखिर आप यहां इतनी जिद कर क्यों आईं। यह, तो बहुत उपद्रव हो रहा है।'

पगली तू नहीं जानती। उनके साथ युद्ध के लिए। नहीं तो! ऐ है पर यह क्या! यह क्या पड़ा है। यहां कोई व्यक्ति पड़ा है। सचमुच ही कोई वीर है।'

पर इसी बीच नानासहब की रक्षा करने वाला वह व्यक्ति बोला—हां! हां. वह वीर पुरुष पड़ा है और उसे विश्वासघात कर मारने वाला व्यक्ति उस ओर पड़ा है। तुम उस वीर पुरुष के पास बैठो और मैं दो तीन व्यक्ति और मशाल ले आता हूँ। उन्हें हम किसी आराम की जगह ले जाएंगे और होश में लाने का प्रयत्न करेंगे वह अभी अच्छी हालत में हैं।'

वह वीर पुरुष कौन होगा इसका अन्दाजा लगाते हुए वे दोनों स्त्रियां वहीं बैठ गईं। इतने में वह वीर पुरुष कराहकर बोला—कौन है! अप्पासाहब!

उसके वे शब्द सुनते ही उनमें से एक स्त्री बोली—अरे वही हैं! पगली वेही हैं! हाय अब मैं क्या करूं? अरे यह अनर्थ

कैसे हुआ ! अरी भाग कर जा और जल्दी से पानी और दिया ले आ। जा जा जल्दी जा।'

वह दूसरी स्त्री जल्दी से गई। इधर यह स्त्री बिल्कुल पागलों के समान हो गई। वह बहुत घबरा गई थी। वह भाग कर पास की टंकी के पास जाकर चुल्लू भर पानी लाकर उसने उस वीर पुरुष के मुख में डाला। और अपने भीगे पल्ले से उसने उसकी आंखों को लगाया और उसके माथे पर रखा। ऐसा करने से उस वीर पुरुष को अच्छा मालूम हुआ और उसके मुंह से 'अहा हा !' शब्द निकले। उन्हें सुन उस स्त्री को अत्यन्त संतोष हुआ।

थोड़ी ही देर में वह दासी और वह व्यक्ति जो उन्हें वहां बैठने को कह गया था, कुछ लोगों के साथ वहां पहुंचा। और उस व्यक्ति की आज्ञा पाकर दो आदमियों ने नानासाहब को उठाया और महल की ओर चल दिए। इतने में पीछे रहे व्यक्ति में से एक ने अहमद को देखा। उसने सोचा इसी हरामजादे ने नानासाहब की यह हालत की है यह सोच उसने एक लात उस अहमद के मारी।

ऐसा करते ही शिवाजी ने उसे बुलाकर कहा—जीवा जीवा ! मैं यह बात कभी सहन नहीं कर सकता। समझे ! मुसलमान और हिन्दू मृत्यु के द्वार पर सब एक से ही हैं। मानलो कि तुम मृत्यु मुख में हो और ऐसे समय तुम्हें यदि कोई एक बात जड़ देता है तो तुझे क्या अनुभव होगा ? जाओ और उसके पास बैठो। मैं भी बैठता हूँ। उसे जिस प्रकार मरने में शान्ति मिले उसी प्रकार हम लोग करें।' यह कह शिवाजी उसके एक ओर बैठे और दूसरी ओर जीवा से बैठने को कहा। इसके पश्चात उन्होंने अपने हाथ से पानी मंगाकर उसने अपने हाथ से वह पानी उसके मुंह में डाला। और जीवा से बोले—भाई जब तक

मनुष्य मोर्चे पर खड़ा रह कर व्यक्ति लड़ता है तभी तक वह तुम्हारा शत्रु है और उससे तुम्हें द्वेष करना चाहिए। मरते समय सभी की एक ही गति होती है। वहां कोई भेदभाव नहीं है।

इतने में कुछ व्यक्तियों ने दौड़ते हुए आकर समाचार दिया--किला पूरी तरह फतह होगया। पर अप्पासाहब को पकड़ रखा है। उनके विषय में आज्ञा दीजिए कि क्या किया जाय। बेगम के आदमी लाचार हो हथियार डाल चुपचाप बैठे हैं। उनके विषय में भी क्या किया जाय ?'

शिवाजी ने कहा--इस विषय में फिर विचार होगा पर उनमें से दो चार व्यक्तियों को बुला कर इसे दफनाने की कोशिश करो।' और इस प्रकार इन आदमियों के आने के बाद किले के नीचे ले जाकर अहमद को दफनाया गया।

---

[३७]

प्रतिज्ञा पूरी की

अप्पासाहब सैय्यदुल्लाखां को सहीसलामत किले के नीचे पहुँचा गये, उसके बाद सैय्यदुल्लाखां वहां पहुँचा, जहां उसने अपने आदमी रख छोड़े थे। उसका कट्टर शत्रु वह कालिया उसके पीछे ही था। वह सोच रहा था कि समय तो पूरा हो चला है और मेरी प्रतिज्ञा पूरी होने का कोई चिन्ह नहीं दीख रहा है। इसका क्या मतलब हो सकता था। मैं तो यह निश्चय कर बैठा हूं कि इसे कहीं रणक्षेत्र में पकड़ूंगा और तब उसे मारूंगा। यदि आज का मौका हाथ से निकल गया तो सब मामला समाप्त हो जायगा, फिर मेरी प्रतिज्ञा पूरी न होगी और मुझे अपने हाथ से अपनी चिता रचा

कर आत्महत्या करनो होगी। आखिर उसने सोचा, जिस समय सूर्याजीराव अपनी छावनी में पहुंचेगा तो वहां सूर्याजी के आदमियों से उसकी छावनी पर हमला कर फिर इसे रणक्षेत्र में पकड़ा जाय। इसी कारण वह छाया के समान उसके पीछे हो लिया और थोड़ी दूर आकर उससे धीरे से बोला — अबे! अब भाग जाने में कुछ नहीं रखा है। मैं धोखा देकर बदमाशी से तुझे मारना चाहता तो आज से पहले कभी का मैंने मार डाला होता। आज तू न बचेगा। तेरे आदमियों की मराठों से लड़ाई हो रही है, उसमें तुम भी कूदो और मराठों की ओर से मैं कूदता हूँ। फिर या तो तू मुझे मार डाल या फिर मैं तुझे मार डालूंगा।' यह कह वह वहां से गायब हो गया।

सैय्यदुल्लाखां ने जब उसकी यह बात सुनी तो उसका शरीर थर-थर कांप रहा था। उसका सारा शरीर पसीने-पसीने हो गया। वह था तो खवास ही। वह यह तो जानता ही न था कि लड़ाई क्या होती है और उसमें क्या होता है। वह वहां से भागने के फेर में था। इतने में सूर्याजी के आदमियों ने उसे पकड़ कर सूर्याजी के सामने ला खड़ा किया। सैय्यदुल्लाखां को देखते ही वह क्रोध से लाल हो उठा। वह एकदम डपट कर बोला — दुश्मन अब तू हमारे हाथ से नहीं छूट सकता। मेरे ससुर के घर का, मेरा और मेरे मित्र के घराने का सत्यानाश तू ने ही कराया है। आज तेरे दिन भर गये हैं। अब तू मरने के लिए तैयार हो जा। एक हाथ ही में तेरा काम तमाम कर देता हूं।' यह कह उसने तलवार खींची।

इतने ही में किसी ने पीछे से रोक कर कहा — नहीं, नहीं यह अधिकार तुम्हारा नहीं है। उसे एक तलवार दे। मेरी मेरे पास है। हम दोनों ही लड़ेंगे। तुम बीच में दखल न देना।

मुझे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने दो। मेरी प्रतिज्ञा का यही अंतिम दिन है।'

उस व्यक्ति को देख तथा उसकी बात सुन सूर्याजी को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। बाद में उसने धीरे से कहा — हां यह सच है। इससे बदला लेने का अधिकार तुम्हारा ही है। मैं अपनी तलवार इसे देता हूँ, उसे ले यह आप से लड़ सकता है।'

यह सब सुन सैय्यदुल्लाखां बहुत घबरा गया। पर इस बीच ही उसे कुछ सूझा और उसने बड़ी हिम्मत कर कहा — मैं तुम्हें इस समय अकेला मिल गया हूं। तुम मुझे चाहे जैसे जान से मार डालोगे और ऐसा करने में कोई आश्चर्य भी न होगा। पर मेरे मर जाने के बाद तुम सबकी क्या हालत होगी। क्या इसकी भी तुम्हें कुछ कल्पना है? बादशाह मुझ से इतना प्रेम करता है कि मेरी हत्या का समाचार सुन उसे अत्यन्त दुख होगा और वह संसार में एक भी मराठे को जीता न छोड़ेगा। पर यदि तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं बादशाह के पास जाकर तुम्हारी बहुत सिफारिश करूंगा।'

उसकी यह बात सुन सूर्याजी तथा उसका साला वह काला व्यक्ति दोनों ही बहुत हंसे और उससे बोले — सैयदुल्लाखां अब तू अपने खुदा को याद कर और वीर की तरह लड़ने को तैयार हो जा। तेरी काली करतूतों के लिए पहले तुझ से मुझे बदला चुका लेने के बाद में मराठों का जो कुछ होना है, होता रहेगा। मैं तुझे वीर गति का अवसर देता हूं। इसके बाद भी तू यदि तैयार न होगा तो मैं अपनी प्रतिज्ञा सच्ची करने के लिए एक हलका-सा वार तुझ पर करूंगा और उस खून में अपनी ऊंगली भिगो कर फिर सबके सामने तुझे इस पेड़ से टांक कर फांसी दे दूंगा। तू कहता है कि बादशाह तेरी मृत्यु का समा-

चार सुन उसका बदला लेगा। पर जनाब अपने आपको धोखा दे रहे हैं। एक बार तुम बादशाह की आंखों से ओझल हो गये तो फिर बादशाह को तुम्हारी याद भी न आएगी। जिस प्रकार पानी पर बनाई लकीर नहीं टिकती, उसी प्रकार बादशाह या राजा के दिल पर किसी की सेवा या अहसान का परिणाम नहीं होता। यह बात तुम पक्की समझो। इतने पर भी यदि तुम यह सोच कर अपने आपको सान्त्वना देना चाहते हो कि बादशाह तुम्हारे पीछे बदला लेगा तो तुम ज़रूर अपना दिल बहला लो। उसका डर हमें न दिखाओ। देखो अब भी मौका है, तलवार उठाओ और लड़ने को तैयार हो। सम्भव है कि तुम ही मुझे मार डालो।' पर सैय्यदुल्लाखां एक अक्षर भी न बोला और न उसने तलवार ही उठाई। उसे भला वीर मृत्यु कहां पसन्द थी। आखिर उस काले व्यक्ति ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार किया। सैय्यदुल्लाखां के भाग्य में उस डोरी और पेड़ से फांसी लगा कर ही मरना लिखा था।

———

[३८]

कुछ पहले की बात

अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपने शत्रु से लड़कर उसे मारने को नहीं मिला इस बात का उस काले व्यक्ति को बहुत दुख हुआ। वह काला व्यक्ति रामदेवराव मामूली आदमी नहीं था। उनके घराने का सम्बन्ध दौलताबाद अथवा देवगिरी के यादवों के घराने से सम्बन्ध था। और उस घर के प्रसिद्ध व्यक्ति राम-देव राव के नाम के ही कारण उनका नाम वही रखा गया था। उनकी और उनके पिता की यह इच्छा थी कि बीजापुर दरबार

में जाकर अपने अलौकिक शौर्य और स्वामि भक्ति के बल पर बादशाह को प्रसन्न कर फिर अपने कुल का नाम उज्वल करें। इसी इच्छा से अपनी जागीर का गांव छोड़ वे अपने कुनवे को ले बीजापुर जा रहे।

वहां शीघ्र ही दरबार में उनका दबदबा बैठ गया और बादशाह उन पर प्रसन्न हुए। यह सब तो हुआ पर जिस प्रकार आकाश निरभ्र हो। और लोग सुखद धूप का आनन्द ले रहे हों और उसी बीच एकदम घने बादल आकाश पर छा जायं और जोरों की गड़गड़ाहट शुरू हो जाय तथा भीषण वृष्टि हो और ऐसा मालूम हो कि न जाने कहीं प्रलय तो नहीं हो जायगा। ठीक वही वैसी ही हालत इस समय हुई।

रामदेव की पत्नी अत्यन्त रूपवती थी। उसके सौन्दर्य की प्रशंसा सैय्यदुल्लाखां और उस जैसे अनेक नर पशुओं द्वारा बादशाह तक पहुंचाई गई। और जिस दिन से सैय्यदुल्लाखां ने नीचता कर बादशाह के जनानखाने के नाम से उसे बुलवा कर चोरी से राजा को दिखाया तब से तो बादशाह उसके पीछे पागल ही हो गया था। और जब रामदेवराव की स्त्री ने घर आकर बेगमों द्वारा किए गए आदर की प्रशंसा की तो रामदेव राव के आनन्द का ठिकाना न रहा। अब वह सब तरफ से आगे आएगा इसका उसे पूर्ण विश्वास होगया। पर उन्हें यह नहीं मालूम था कि जिस इमारत को बांधने का वे प्रयत्न कर रहे हैं उसकी नींव अन्दर ही अन्दर खोखली हो रही है। और बादशाह ने जिस दिन से रामदेव की स्त्री को देखा था उस दिन से उसे और कुछ नहीं सूझ रहा था।

आखिर एक दिन बादशाह ने सैय्यदुल्लाखां से कहा कि वह रामदेव को जान से मार कर उसकी स्त्री को अपने महल में

ला रखेगा। पर इससे सैय्यदुल्लाखां की बात बनी नहीं रहेगी इससे उसने बादशाह का इरादा जमने नहीं दिया। उसने बादशाह को यह बचन दिया कि वह दो दिन में ही कोई बढ़िया तरकीब ढूंढ निकालेगा। आखिर दो दिन बाद सैय्यदुल्लाखां ने बादशाह से कहा—रामदेवराव को दक्षिण में कर्नाटक जीतने या वहां का विद्रोह समाप्त करने के लिए भेजा जाय। और उसे निकलने के लिए समय बहुत थोड़ा दिया जाय। वह इस काम के लिए बड़ी खुशी से जावेगा। उसकी स्त्री को उसके पिता के घर पहुंचाने की जिम्मेदारी आप अपने ऊपर लें। इस प्रकार रामदेव की स्त्री को यहां से निकाल कर गुप्त रूप से कहीं रखा जाय। इधर लोग तथा रामदेव यही समझेंगे कि बादशाह ने उनकी स्त्री को उसके पिता के घर भेज दिया है और उन लोगों को यह विश्वास दिया जायगा कि वह रामदेव के साथ लड़ाई पर गई। थोड़े दिन होने के बाद उधर ही रामदेव पर किसी प्रकार की तोहमत लगाकर उसे समाप्त कर दिया जायगा। और उसकी स्त्रीं घर न जाकर सीधी जनानखाने में आई ऐसी गप उड़ा देंगे।

बादशाह ने जब यह षड़यन्त्र सुना तो उसकी तबियत खुश हो गई। वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने दूसरे ही दिन रामदेव को बुलवाया उसकी खूब प्रशंसा की और उसे कर्नाटक जाने के लिए कहा। रामदेव की महत्वाकांक्षा पहिले ही अधिक थी और फिर उसे ऐसा अवसर मिला। उसने तुरन्त ही हां कहा। बादशाह उसकी स्त्री के उसके पिता के यहां पहुँचाने की जिम्मेदारी लेता है भला उसे और क्या चाहिए था। उसका भाग्य उदय हुआ जान वह उसी आनन्द में विभोर वह अपने घर आया। बादशाह ने सेना की जो कुछ व्यवस्था करनी थी वह

करदी और तीसरे ही दिन रामदेव को रवाना करने की व्यवस्था की। अगले दो चार दिन में सब से अधिक नीच कर्म भी सैय्यदुल्लाखां के षड़यन्त्र से गुप्तरूप से पूरा हुआ और बादशाह की इच्छापूर्ण की गई। रामदेवराव की स्त्री रम्भावती के नाम से प्रसिद्ध हुई। पर उसे भ्रष्ट करने के लिए बादशाह को क्या क्या करना पड़ा तथा आखिर में वह किस प्रकार उनकी इच्छा पूरी करने को तैयार हुई उसका इतिहास यहां नहीं दिया जा रहा है। उसका इतिहास उसी के मुंह से पाठकों के सामने आएगा।

इधर रामदेवराव के उनके पिता को भेजे पत्र तथा पिता द्वारा रामदेव को भेजे पत्रोंको सैय्यदुल्लाखां बीच में ही रोक लेता था। आखिर उसने रामदेवराव को एक पत्र लिखा—रम्भावती अब बादशाह की पटरानी बन गई है बादशाह के हत्यारे बुरी तरह से तेरा खून करेंगे। तुम्हें समय पर सचेत किया जाय इस दृष्टि से मैं अत्यन्त गुप्त रीति से यह पत्र लिख रहा हूँ। पत्र पढ़ते ही तुम इसे फाड़ तो डालोगे हो।'

यह पत्र पढ़कर रामदेवराव अत्यन्त क्रोधित हुआ। हत्यारों के हाथ से मरने के बजाय चुपचाप मैं यहां से काला मुंह करूं और बादशाह के खून से इस अपमान और कलंक को धो डालू। यह सोच उसने यह विचार तुरन्त ही कार्यरूप में परिणत किया इधर सैय्यदुल्लाखां ने यह विचार किया कि रामदेवराव के यहां से गायब होते ही यह प्रचार किया जायगा कि उसने बादशाह के साथ विश्वासघात किया इस कारण बादशाह ने उसे सजा देने की आज्ञा दी और उस आज्ञा के पाते ही वह भाग गया। उस क्रोध पर उसने रामदेव के पिता को मारने का भी दृढ़ निश्चय कर रखा था और उस प्रकार योजना भी तैयार करली थी।

पर इस षड़यन्त्र का समय पर ही रामदेव के पिता को पता चल गया और वह अपनी जगह से भाग गया और उसने अपना भेस बदल दिया। इधर रावदेवराव अपना भेस बदल तथा बादशाह से बदला लेने के विचारों को पुष्ट करता हुआ बीजापुर की ओर आया। वहां उसे एक व्यक्ति ने पहिचान उसने एक पत्र रामदेवराव को दिया जिसमें सैय्यदुल्लाखां के विषय में सारा हाल लिखा हुआ था। और उसमें यह भी लिखा था इस जंगल में एक बूढ़ा भील रहता है उससे जाकर अवश्य मिलना। पत्र जिस व्यक्ति ने लिखा था उसका हस्ताक्षर रामदेव के पहिचान का था इस कारण रामदेवराव दुविधा में पड़ गया। इसके बाद उसने यह निश्चय किया कि पहिले उस भील से मिला जाय और बाद में ही कुछ निश्चय किया जाय। इस कारण उस पत्र में बताए जंगल में जाकर वह उस भील से मिला। यह भील और कोई नहीं उसका पिता था।

रामदेवराव की उसके पिता के साथ मुलाकात होते ही उसने एक दम पूछा—आपने जो हकीकत मुझे लिख भेजी थी क्या वह यही है ? फिर हमारा दुश्मन कौन है ? बादशाह या सैय्य-दुल्ला ?'

उसके पिता ने कहा—हां, हां, वही नीच सैय्यदुल्ला !'

रामदेव थोड़ी देर चुप रहा और फिर उच्छ्वास ले बोला—ठीक, ठीक यह बात यदि सत्य है तो उसके खून में मैं पहिले अपने हाथ रंगूंगा और फिर···' पर आगे वह बोल न सका। वह चुपचाप बैठा। उसके पिता ने बहुत देर तक अपने दिल पर काबू किया। और जब उसने देखा कि लड़का शान्त हो गया है तो बोला—मैंने सारी छानबीन की और मुझे यदि किसी ने बचाया है तो तुम्हारी स्त्री ने यदि उसने मुझे समय पर चेता-

बनी न दी होती तो हत्यारों के हाथ से मेरी भयंकर मृत्यु होती उसने मुझे जो समाचार दिया था वह सत्य सावित हुआ। मैं जब महल छोड़कर हटा उसके ठीक पाव घड़ी के अन्दर ही हत्यारे हमारे महल में घुसे। मैं मिला नहीं इस कारण उन्होंने बहुत शोर गुल किया। नौकरों को बहुत तंग किया और अन्त में महल में आग लगा कर उस पर से हल चलवा दिया। मैं स्वयं अपने आपको समाप्त करने वाला था। पर असलियत जानकर तुझे बताकर और बदला लेने की जिम्मेदारी तुझ पर सौंपकर फिर अपना जो कुछ करने का मैंने निश्चय किया। यही सोच मैं अब तक जीवित रहा।'

पर रामदेवराव का ध्यान अपने पिता की ओर बिल्कुल नहीं था। पर उनकी स्त्री के विषय में ये शब्द कि 'उसने संदेशा भेजा था' सुनते ही उसने क्रोधित हो सोचा—वह अभी तक वह इतनी बेशर्म है कि वह जीवित रह सकी। उसने अब तक आत्महत्या कर अपने आपको क्यों नहीं मिटा लिया। इसी प्रकार के विचार उसके दिमाग में घूम रहे थे। और इधर उसके पिताजी भी बोल रहे थे। सोचते सोचते उसके दिल में एक भयंकर विचार आया और उसने अपने पिता से कहा—क्या कहते हैं क्या यह सब दुश्मनी सैय्यदुल्लाखां की है? सारा षड़यन्त्र उसी का रचा हुआ है। और उस समाचार से आप अपनी जान बचाने के लिए भागे?' इस आखिरी व्यंग का अर्थ रामदेवराव के पिता के समझ में आगया। पर उसने इस बात को प्रकट न होने दिया और एकदम कहा—हां उसी ने समाचार भेजा। और वह कर ही क्या सकती थी? उसे सही-सलामत पहुँचाने को जिम्मेदारी किसकी थी? तुम्हें उसे साथ ले जाने की बुद्धि क्यों नहीं हुई? जिस स्थिति में उसके साथ

विश्वासघात किया गया था उस स्थिति में और क्या हो सकता था ? उसके उस विश्वासघात के लिए कौन जिम्मेदार है ?'

बाप वेटे की वहीं लड़ाई होने का मौका आ गया। रामदेव राव ने बहुत देर तक विचार किया। और उसके बाद उसने प्रतिज्ञा की कि जिस व्यक्ति ने यह भयंकर विश्वासघात किया है उसके रक्त से वे अपने हाथ रगेंगे। पर यह प्रतिज्ञा शीघ्र ही अमल में लाने में अनेक विघ्न उपस्थित होंगे इसलिए आवश्यक यह है कि कहीं छिपकर रहा जाय। यह विचार कर दोनों बाप बेटों ने सूर्याजीराव के गांव के पास से काफी दूर जंगल में एक झोंपड़ी बनाकर रहने का निश्चय किया। वह बीच में कभी कभी बीजापुर जाकर भेस बदलकर वहां के समाचार जान लेता था। इन दोनों के विषय में केवल सूर्याजी के सिवा और कोई नहीं जानता था। सूर्याजी गुप्तरूप से आकर उनकी आवश्यकताएं पूछ जाता था। पर एक दिन सूर्याजीराब के मकान पर भी सैय्यदुल्लाखां ने हमला किया सूर्याजीराव की पत्नी उसके छोटे बच्चे तथा मरणासन्न सूर्याजीराव को जिस काले व्यक्ति ने अग्नि से वचाया था वह रामदेवराव ही था। इसके बाद की सारी हकीकत पाठकों को मालूम ही है।

सैय्यदुल्लाखां के मृत्यु के पश्चात सूर्याजीराव तथा दूसरे लोग रामदेवराव को कहीं न जाने के लिए कह रहे थे। पर वे बेचैन थे। अब एक ही बात रह गई थी। वह रम्भावती का फैसला करना चाहता था। इसके लिए वह शीघ्र बीजापुर गया वादशाह के जनानखाने में घुसने के लिए उसे साईं का भेस बहुत लाभदायक सिद्ध होता था। इस बार भी वह साईंजी का भेस बनाकर ठीक शाम के समय वह बादशाह के जनानखाने में घुसा। रम्भावती से उसकी मुलाकात हो गई। रम्भा-

वती ने उसे उस भेस में भी पहिचान लिया। उसने रम्भावती से कहा—तू बाग में एकान्त में चल मुझे कुछ जरूरी बातें करनी हैं।'

रंभावती बिना कुछ कहे ही उसके साथ होली। उस समय उसके मुंह पर एक अजीब रंग आया था। रामदेवराव के मन में जो संघर्ष चल रहा था उसे वह समझ गई। और डिठाई से उसके आगे खड़ी होकर बोली—आप क्यों आए हैं यह मैं जानती हूँ। और उसके लिए मैं तैयार हूं। पर आपके हाथ से वह पाप न हो। यह देखिए शीशी इसे मैं कई दिन से अपने पास रखे हूँ। मुझे अपने प्राणों की तनिक भी पर्वाह नहीं है। पर मुझे चिन्ता आपकी और पिताजी के विषय में थी कि ये पाजी क्या करते हैं। इस कारण दिल कड़ाकर मैंने यह पता लगा लिया कि यहां क्या षड़यन्त्र हो रहे हैं। और उन्हीं का उपभोग कर मैंने आपके पिताजी को सारी बातें बतादीं। मैं ईश्वर को साक्षी कर कहती हूं कि मैं चाहे बाह्यरूप से भ्रष्ट हो गई हूं पर मैं अंतःकरण से बिल्कुल शुद्ध हूँ। उस दुष्ट की मृत्यु आपके हाथ से हो गई है यह बात मैं एक बार अपने मुख से सुनना चाहती हूं। उसे सुनते ही मैं इस बोतल से जहर पीकर यह संसार त्याग दूंगी। परमेश्वर जानता है कि मेरे दिल में क्या है? वह मुझे अगले जन्म में फिर आपको पतिरूप में देगा।'

उसकी ये सारी बातें रामदेवराव शान्त हो सुन रहा था। वह जो कुछ कह रही है, उसपर वह विश्वास कर रहा है या नहीं यह उसके चेहरे पर से बिलकुल नहीं मालूम हो रहा था। उसकी बात समाप्त होते ही वह बात बना कर बोला—'तो फिर उस जहर का घूंट भरो और पृथ्वी पर से तुम सदा के लिए विदा हो जाओ। मैं उसको समाप्त कर आया हूँ।'

रम्भावती क्षण भर चुपचाप खड़ी रही। बाद में उसने एक वार वही प्रश्न किया 'क्या सच ?'

रामदेवराव ने तुरन्त ही कहा — हां ! हां ! बिल्कुल सच ? पर क्या तुझे यह बुरी लग रही है क्या ?' यह बात उसने ताना मारते हुए कही।

इन शब्दों को सुनते ही रम्भावती ने उस बोतल की डाट खोली और उसे मुंह के पास लाकर बोली — हां, मुझे दुख हो रहा है कि मुझे आप भी न पहचान सके, अब इस विषपान से तो हो ही जायगी। यह कह एक घूंट में उसने वह विष पी डाला।

× × ×

दूसरे दिन एक स्त्री और एक पुरुष का शव उस बाग में मिला। वह व्यक्ति बहां आत्महत्या कर मरा या उसे किसी ने मार डाला यह किसी को मालूम न हो सका।

---

[३६]

सुल्तानगढ़

मनुष्य योजना बनाता है कि ऐसा काम करने से ऐसी बात हो सकेगी और उसी के अनुसार काम करता है। पर बहुत बार उसके कार्य से वह चाहता है, वैसा परिणाम न होकर कुछ और ही परिणाम होता है। रम्भावती ने विष पी लिया, पर उसका पूरा असर होने के पूर्व ही उसकी दासी ने उसे वहां पड़ा देखा और तुरन्त ही दौड़धूप कर राजवैद्य की दवा से उसका वह जहर का असर दूर किया गया। पर रम्भावती अच्छी तरह ठीक न हो सकी। उसे अन्तकरण पवित्र रख बाह्य यातना बहुत

समय तक भोगनी पड़ी। एक बात अवश्य थी कि बादशाह उस से प्रेम करता था।

सैय्यदुल्लाखां के मरने से बीजापुर दरबार या शहर में किसी को भी दुख नहीं हुआ और जैसा उसे कहा गया था, वैसे ही पानी पर खींची गई लकीर के समान उसका नाम भी बादशाह भूल गया और सुलतानगढ़ का किला शहाजी के बेटे ने छीन लिया यह सुन कर भी उसे क्रोध न आया। उसी में शिवाजी ने बादशाह के पास एक पत्र लिखा, 'उसमें उन्होंने लिखा — मैं भी आपके सेवक का पुत्र हूँ, अर्थात मैं भी आपका सेवक हूँ। आपके शासन में इधर की व्यवस्था ठीक रहे, इसी कारण मैं यहां आकर रहा हूं।' ऐसा पत्र आने पर तो वे शिवाजी की बात वह भूल सा गया। पर ये बातें बहुत वाद की हैं। पहले हम यह देखें कि सुलतानगढ़ पर कब्जा करने के बाद वहां क्या हुआ।

नानासाहब के घायल होने के पश्चात उनकी स्त्री अपनी दासी के साथ वहां पहुँच गई, इसी कारण उनकी शुश्रुषा की व्यवस्था महल में उपयुक्त रूप से हो सकी। कितने ही दिनों तक नानासाहब तो बेहोश ही पड़े रहे। एक दिन तो उनकी हालत बहुत ही खराब हो गई। किसी को यह आशा नहीं रही थी कि वे बचेंगे। सभी लोग उदासीन हो गये। पर दो व्यक्ति बहुत अधिक उदासीन और दुखी हो रहे थे। एक तो नानासाहब की स्त्री और दूसरी रणदुल्लाखां की बहिन मेहरजान थी। बचपन की अनेक बातों को जानकर मेहरजान नानासाहब को बहुत चाहती थी। नानासाहब की बीमारी में वह अनेक बार उनकी खैरखबर ले गई। पर आज की हालत देख वह वहां से न जा सकी। नानासाहब की हालत देख उसकी आंखों में पानी आ गया। पर वह आंखों का पानी उसने किसी को भी दिखने न

दिया। शाम हो गई फिर भी नानासाहब की हालत में कोई परिवर्तन न हुआ। पल-पल पर यह शंका हो रही थी कि पता नहीं अब क्या हो ? नानासाहब की यह हालत अप्पासाहब को बताई गई। पर बूढ़ा अपनी बात का पक्का था। उसने साफ जवाब दे दिया — ऐसी हालत है तो भी मैं उसका मुंह नहीं देख सकता।' उनके वे शब्द सुन कर बूढ़े के विषय में मामूली आदमियों को उसके प्रति घृणा उत्पन्न हुई, पर शिवाजी की उनके प्रति और श्रद्धा बढ़ गई। वे सोचने लगे कि किसी स्वामी का सेवक भी हो तो ऐसा ही हो। उसी हालत में स्वामी को विजय मिल सकती है।

पर आधी रात बीतने पर नानासाहब की हालत सुधरी और धीरे-धीरे सवेरे के समय उनकी तबियत बहुत ही ठीक हो हो गई। इतना ही नहीं, उन्होंने उसी रात को आंखें खोल आपने चारों ओर देखा और उसी समय उनकी आंखें मेहरजान पर पड़ी और मेहरजान की उनपर। मेहरजान ने जब देखा कि अब उन्हें मृत्यु का भय नहीं रहा है तो वह आनन्द विभोर हो बोली — अब संकट टल गया। खुदा ने आप पर मेहर की।' यह कह उसने नानासाहब की पत्नी का दृढ़ अलिंगन किया। पर उसके बाद उसके मन में न जाने क्या बात आई और वह उठकर अपने महल में चली गई। इसके बाद नानासाहब की हालत सुदरने लगी और तीन दिन के बाद वे अच्छी तरह होश में आ गये।

पर अब एक नवीन संकट उत्पन्न हो गया। होशमें आते ही उनके दिल में फिर अपनी स्त्री के विषय में शंका कुशंकाएं उत्पन्न होने लगी। इस कारण से फिर अत्यन्त अस्वस्थ हो उठे। उनकी स्त्री उनके दिल की बात जान गई। इस शंका को

दूर करने के लिए किसी तीसरे व्यक्तिकी आवश्यकता है। आखिर उसने यह निश्चय किया कि इस कार्य के लिए वह महरजान से मिलेगी और उसे इस कामें के लिए प्रार्थना करेगी। यह सोच कर वह सीधी मेहरजान के पास गई और उसने बताया कि वह वहां क्यों आई है?

उसे सुन मेहरजान की हालत बहुत ही अजीब होगई। पर इस समय नानासाहब को बचाना तथा इस साध्वी की निष्क-लंकता के विषय में स्पष्टरूप से बताने में मुझे आगा पीछा नहीं करना चाहिए। यह सोच वह उसी दिन शाम को नाना-साहब से मिलने के लिए गई। और उनके पास परदे की आड़ में बैठकर उसने नानासाहब से हिम्मत कर कहा—नानासाहब! आपका संशय त्रिल्कुल गलत और झूठा है। इस बिषय में आप तिलभर भी शंका न करें। यदि आप मेरी बात पर तनिक सा भो विश्वास करते हैं तो मैं जो कुछ कह रहीं हूँ उसे सत्य मानिए। आपकी स्त्री बिल्कुल पवित्र है। इससे अधिक मैं क्या कहूं ? आप इस प्रकार की शंका कर अपनी बीमारी बढ़ा रहें हैं और अपनी पतिव्रता स्त्री को वृथा कष्ट दे रहे हैं और…'

आगे वह 'मुझे भी' शव्द कहने वाली थी। पर उसने वे शब्द ओठों से बाहर नहीं निकलने दिए। और वह चुपचाप बैठ गई। उसके मुंह से ये शब्द इतनी गम्भीरतापूर्वक और दिल से निकले थे कि इस प्रत्येक अक्षर में सत्यता भरी पड़ी है इसका उन्हें विश्वास होगया। उन्होंने कहा—आपका कहना ही मेरे लिए काफी है। मुझे विश्वास होगया है। मैंने इतने दिन आपको बेकार कष्ट में डाल रखा था इसके लिए आप मुझे क्षमा करें।

वे जब चुपचाप हो गए तो मेहरजान का हृदय आपे से बाहर होरहा था। उसे स्मरण हो आया कि बचपन में वह एक

बार सुल्तानगढ़ अपने पिता के साथ आई थी। नानासाहब और वह एक दिन साथ खेल रहे थे। खेलते खेलते नानासाहब से उसका कुछ विनोद पूर्ण भाषण हुआ था। नानासाहब तो उसे हंसी समझकर भूल गए थे पर मेहरजान असली मुगलवंश की होने के कारण वह उसे न भूल सकी। मेहरजान के दिल पर उन्होंने उसी दिन से कब्जा कर लिया था और नानासाहब के बचपन के वे शब्द अनेक बार दुहरा चुकी थी और स्मरण कर चुकी थी। पर जब उसने यह देखा कि बचपन की वह बात नानासाहब बिल्कुल भूल गए हैं तो उसे अत्यन्त दुख हुआ। उसने सोचा क्यों न वह एक बार उन्हें यह बात स्मरण करादे। क्यों न वह उन्हें बचपन के वे शब्द याद दिला दे। पर फिर उसकी शालीनता उसके मार्ग में बाधक हुई। उसने सोचा—ऐसा करना मुझ जैसी को शोभा नहीं देता। यह सोच वह बिजली के समान वहां से उठकर चली गई। इतना ही नहीं उसने उसी समय अपने आदमियों को वहां से चलने की आज्ञा दी।

इधर शिवाजी ने भी अप्पासाहब को अपनी ओर जीतने का यथा शक्ति प्रयत्न किया। पर उन्होंने सदा एक ही उत्तर दिया—तेरे जैसे दुष्ट व्यक्तियों के कारण ही हमारे जैसे स्वामि भक्ति लोगोंके बच्चे खराब होते हैं. केवल तेरे कारण ही मेरा बेटा मेरा और मैं उसका शत्रु बन गया हूं। यदि तुझ में सचमुच ही कुछ अच्छाई होगी तो तू मुझे जहां चाहूँ वहां जाने देगा। मेरे लड़के को तूने बहका लिया है उतना काफी है।' यह कह बड़ा क्रोधित हो उठ खड़ा हुआ।

पर इन सब बातों से शिवाजी का मन अप्पासाहब की ओर से कलुषित नहीं हुआ। उन्होंने इतनी,ही बात उनसे कही—

अप्पासाहब आपको मेरे सारे कार्य का उद्देश्य अभी मालूम नहीं हुआ है। ठीक है मैं आपको एक क्षण भी कैद में नहीं रखूंगा आप जिधर जाना चाहें जा सकते हैं।' और वृद्ध अप्पासाहब भी उसी दिन वहां से निकल गए।

सुल्तानगढ़ किले के बाद शिवाजी को यह बात कई बार स्मरण हुई कि जिस समय वे रामदास स्वामी के दर्शन को गए थे तो उन्हें दर्शनों का वचन दिया था। और उन्हें अपनी सफलता का समाचार मिलते ही वे सुल्तानगढ़ पर दर्शन देने आते हैं या नहीं इसीलिए उन्होंने श्रीधर स्वामी को उधर भेजा था। वे प्रतिदिन यही सोच रहे थे कि लौटती समय श्रीधर स्वामी अकेले आते हैं या स्वामी महाराज को साथ लाते हैं। उनकी आंखें उनके आगमन की प्रतीक्षा में मार्ग पर बिधी हुई थीं।

---

[४०]
समाप्ति

सुल्तानगढ़ पर कब्जा होने के पश्चात जो कुछ भी हुआ उनका उल्लेख ऊपर किया ही जा चुका है। पर यह सब कथानक समाप्त करने के पूर्व हमें कुछ और बातें पाठकों से कहनी हैं। नानासाहब के अच्छे होने पर शिवाजी का ध्यान सदा इस ओर रहता कि सुल्तानगढ़ पर जो कब्जा होगया है उसे किस प्रकार कायम रखा जाय। और अगले प्रयत्नों में किस प्रकार सफलता मिले यही ध्यान सदा उसे रहता था। इसलिए किले पर जो कुछ व्यवस्था करनी थी वह उन्होंने प्रारम्भ करदी। किला जीतने में जिस जिस व्यक्ति की सहायता मिली थी उन सब को काफी इनाम देने का उन्होंने निश्चय किया। सांवलिया

पर तो इतने प्रसन्न हुए कि उसे सदा अपने पास रखने का उन्होंने निश्चय किया और इस विषय में सांवलिया और उसकी मां को सूचना भी देदी। सांवलिया ने जिस चौकीदार के विषय में यह बताया था कि उसने अपने मालिक से बेई-मानी कर किलेदार बनने का षड़यन्त्र रचा था। उसे बुलाकर उससे उसका अपराध स्वीकार कराया और उसे कठोर दण्ड दिया। नानासाहब को उनके पिता का काम सौंपने का निश्चय किया और सूर्याजी को हमेशा अपने साथ रहने के लिए कहा।

इस प्रकार धीरे धीरे उन्होंने सारी व्यवस्था की। किले के नीचे वाले गांव के पटेल को बहुत काफी इनाम दिया तथा उसे और चार छै गांवों का पटेल बनाने का आश्वासन दिया। शिवाजी ने यह सारी व्यवस्था तो कर दी पर उन्हें ये अन्दाज न हो सका कि जब यह समाचार बीजापुर पहुंचेगा तो बादशाह क्या करेगा। पर उनका हमेशा यह सिद्धान्त रहा है कि जब तक विपत्ति सामने नहीं आ जाती तब तक उसके विषय में चिन्ता करना व्यर्थ है। इस बार भी वैसा ही हुआ। उनका सारा ध्यान स्वामी के चरणों की ओर लगा था। उन्हें उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने की बहुत ही जल्दी हो रही थी।

ऐसी स्थिति में एक दिन उत्तर पश्चिम की दिशा से कुछ लोग आते दिखाई दिए। थोड़ी ही देर में गुरु महाराज की सवारी आई जान शिवाजी कुछ लोगों को ले उनकी अगवानी करने गए। गुरु महाराज के दिव्य तेज का दर्शन कर सभी को उस दर्शन से शुद्ध आनन्द हुआ। सब लोगों के चरण स्पर्श करने के बाद शिवाजी ने उन्हें पालकी में बैठने की प्रार्थना की। पर स्वामीजी ने कहा—अभी पालकी में बैठने का समय नहीं आया है अभी पैदल ही किले पर जाएंगे।' उनके पैदल चलते

ही सभी लोग पैदल चल पड़े।

इतने में एक स्त्री दौड़ली हुई उनकी ओर आई। उसे देखते ही सूर्याजी ने उसे दूर करने का प्रयत्न किया। पर उस ओर स्वामी का ध्यान गया और उन्होंने कहा—यह स्त्रीन कौन है इसे मेरे पास ले आओ।'

पर आस पास के लोगों ने कहा—वह पागल है और आपके सम्मुख वह अदव से नहीं रहेगी।'

स्वामी ने हंसकर कहा—अब उसे ज्ञान नहीं है यह कौन जानता है।' इतने ही में वह स्त्री स्वामीजी के सामने पहुँची और उसने वही गाना प्रारम्भ किया:—

किसने तोड़े फूल
उन्हें क्यों कुचला मसला है॥

इस प्रकार वह गाते हुए अपने दोनों हाथ नचाने लगी। उसकी यह हालत देख स्वामी को दुख हुआ और उन्होंने उसके पास जाकर उसके सिर पर हाथ रखा और कहा—सच है दुष्टों ने फ़ूलों को तोड़ कर पैरों तले रौंदा है। तुझे भी उसकी चिन्ता हो रही है न ? घबराओ मत वे शीघ्र ही फिर ताजे हो उठेंगे। तुम इस विषय में सारी चिन्ता छोड़ दो। यह कह उन्होंने फिर एक बार कृपापूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा और आशीर्वाद दिया—जाओ सुख से रहो।' यह कह उन्होंने उसे जाने की आज्ञा दी। इसे कोई जादू कहे, दैवीचमत्कार या सत्पुरुषों का साक्षातकार कहे पर स्वामीजी का आशीर्वाद सुनते ही उसका पागलपन न जाने कहा गायब हो गया और सूर्याजी को उसकी स्त्री मिल गई। वह पहिले जैसी थी वैसी ही होगई।

स्वामीजी के किले पर पहुंचते ही चारों ओर गड़बड़ फ़ैल गई। सब लोग जीभर कर दर्शन कर चुकने के पश्चात मिले

आशीर्वाद से प्रसन्न हो धीरे धीरे अपने अपने घर ज़ाने ल
और इस प्रकार भीड़ कम होने लगी। आखिर में कुछ कु
हुए व्यक्ति ही रह गए। उपहार के पश्चात जब स्वामी बै
उस समय शिवाजी फिर बंदना करने आए। नानासाहब
कमजोर हो जाने के कारण अब तक किले के नीचे स्वा
को न जा सके थे इस कारण वे भी चरणस्पर्श करने आए
वंदन करते ही उनके मस्तक पर हाथ रख स्वामी ने कहा—
जो शत्रु को मात दी है वह बहुत अच्छी हुई पर अभी इस
भी अधिक मातें करनी हैं। लेकिन सती स्त्री के विषय
किसी प्रकार की शंका न लाओ। उससे कभी कल्याण न
होता।'

स्वामी के ये अन्तिम शब्द सुन नानासाहब चकित
उनकी ओर देखने लगे। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि स्वा
को यह बात कैसे मालूम हुई और किसने बताई। पर दू
की तरह उन्हें भी यह विश्वास था कि स्वामी अन्तर्यामी
और उनसे कोई बात भी छिपी नहीं रह सकती। यह सो
उन्होंने कहा—समर्थ की आज्ञा मुझे शिरसावंद्य है। यह क
वे गर्दन नीची कर चुपचाप बैठ गए!

तीसरे पहर स्वामी के दर्शनों के लिए बाड़ी और आसपा
के गांव के स्त्री पुरुषों के झुंड के झुंड आने लगे। नान
साहब की पत्नी भी दर्शनों के लिए आई उन्हें स्वामी ने बहु
उत्तम अशीर्वाद दिया।

रात को जब कुछ इने गिने लोग रह गए। उनमें केवल
स्वयं शिवाजी, सूर्याजी, नानासाहब, तानाजी येसाजी, कल्याण
स्वामी तथा श्रीधरस्वामी थे। उस समय राजा ने उठकर हाथ
जोड़ स्वामी से प्रार्थना की;—

जगदंबा और आपके कृपाप्रसाद से यहां तक तो सारी बातें निर्विघ्न समाप्त होगई। भविष्य में यह क्रम जारी रखना आपकी आज्ञा और कृपा पर निर्भर करता है। मैं आपका सेवक हूं। इसी के नाते जो कुछ मैंने अब तक किया है और भविष्य में करूंगा वह सब आपके चरणों में अर्पण है। आज की पहिली कमाई गुरु दक्षिणा कह मैं इसे आपके चरणों पर भेंट चढ़ाना चाहता हूं। यह मेरी उत्कट इच्छा है। यह किला आज से मेरा नहीं आपका और किले के आस पास के गांवों को स्वीकार कर आप आशीर्वाद दें यही मेरी इच्छा है।'

यह सुन स्वामी बहुत जोर से हंसे और बोले—अब हमारे भगवे वस्त्रों पर आन बनी ? इन्हें किला और राज्य खूब शोभा देगा। बेटा यह किला और राज्य न मेरा है और न तुम्हारा जो अज्ञान हैं निर्बल हैं और इसी कारण उन्हें क्रूर मुसलमानों के अत्याचार चुपचाप सहन करना पड़ते हैं ये राज्य उन्हीं का है। हम तो केवल सूत्रधार हैं। और यही बात ध्यान में रखकर यदि भविष्य में कार्य करोगे तभी वह प्रशंसनीय होगा। इसलिए ऐसी ही बुद्धि रखना।

स्वामी का यह उपदेश शिवाजी के मन में बैठ गया। उन्होंने कहा—यह सब मैंने किया है या करूंगा ऐसी मेरी बुद्धि नहीं है। तथापि व्यवहार दृष्टि से मैंने यह सब कहा है, इसके लिए मुझे क्षमा करें। चाहे उन नासमझ और कमजोरों के लिए ही सही पर आप मेरी यह गुरु दक्षिणा स्वीकार कीजिए उसे आप हृदय से स्वीकर कीजिए। और भविष्य जो भी कुछ मुझे प्राप्त होगा वह आपकी कृपादृष्टि का फल होगा इस बात की पहिचान के लिए कोई वस्तु आप मुझे पहिचान के रूप में दीजिए।'

स्वामी ने इस पर भी बहुत आनाकानी की। पर सभी के आग्रह करने पर उन्होंने अपना रंगीन फर्रा उठाया और शिवा जी को देते हुए कहा—यह लो मेरी पहिचान इसे ही झंडा बनाओ और जो शब्द बताता हूं उन्हें किले पर खुदवादो और कागज पत्रों पर वही सिक्का व्यवहार किया करो।

विक्रमैर्वर्धिना विष्णोः सामूर्तिरिव वामना।
शाहासुतस्य मुद्रेयं शिवराजस्य राजते॥

श्रीधर स्वामी ने ये अक्षर चटपट लिख लिए और शिवा जी ने वह फर्रा ले उसे मस्तक से लगाकर स्वीकार किया।

॥ समाप्त ॥

महात्मा गान्धी की सम्मति

"अच्छी पुस्तकों के पास होने से हमें अपने भले मित्रों के साथ न रहने की कमी नहीं खटकती। जितना ही मैं पुस्तकों का अध्ययन करता गया, उतना ही मुझे उनकी विशेषताएं मालूम होती गईं। जिसे पुस्तकें पढ़ने का शौक है वह सब जगह सुखी रह सकता है।"

—महात्मा गान्धी

अतः आप निम्नलिखित अच्छी और शिक्षाप्रद पुस्तकें अवश्य पढ़िये।

(१) विद्यार्थियों से—[ले० महात्मा गान्धी] विद्यार्थी-जीवन का पथ-प्रदर्शन करने वाला सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ। इसकी लगभग दस हजार प्रतियां अंग्रेजी में बिक चुकी हैं। सजिल्द एवम् सचित्र का मूल्य ४) मात्र।

(२) महिलाओं से—[ले० महात्मा गान्धी], कुमारियों और विवाहिता स्त्रियों के जीवन को सफल बनाने वाली दूसरी गीता तुल्य उपयोगी पुस्तक। अपनी बहू-बेटियों को अवश्य उपहार में दीजिये। सजिल्द एवम् सचित्र का मूल्य ४) मात्र।

(३) गीतांजलि—[रविन्द्रनाथ टैगोर] गीतांजलि का प्रामाणिक सुबोध सुलभ संस्करण। जिसपर लेखक को एक लाख बीस हजार का नोबेल पुरस्कार मिला था। सजिल्द सचित्र का मूल्य १।।।) मात्र।

(४) त्याग का मूल्य—[रविन्द्रनाथ टैगोर] उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द जी के शब्दों में यह टैगोर का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। पृष्ठ ४०० सजिल्द सचित्र मूल्य ५) मात्र

(५) महाराष्ट्र-प्रभात—[आपटे] हिन्दुत्व भावनाओं से सराबोर, प्रातः स्मरणीय पूज्य शिवाजी महाराज की वीरता का सजीव चित्रण। प्रत्येक हिन्दू को इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। सजिल्द सचित्र मूल्य ३) मात्र।

पताः—

श्री गान्धी ग्रन्थागार

प्रधान कार्यालयः—
सी ७/१४० सेनपुरा
बनारस

शाखाः—
लाल बिल्डिंग नई सड़क
दिल्ली

नोट—विशेष जानकारी के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाइये।

